जनसंग्राम

इस अंकमें

कोयला गोटाला....	3
अमर शहिदों का बारे में...	5
कामरेड रामजी का शहदात...	10
उदार मतवादी...	सेंटर पेजी में
और अन्य.....	

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की छत्तीसगढ़-उड़िशा सीमावर्ती राज्य कमेटी का मुख-पत्र

बुलटेन -1 *जनवरी -2013* *सहयोगराशि - 15 रुपय*

विश्व बैंक प्रनीत योजनाओं को अमल में लाना ही एफ.डी.आइ. निवेश !

खुदरा व्यापार में विदेशी घुसपैठ करोड़ों छोटे व्यापारियों को बेरोजगार बनायेगा!!

घोटालों की सरकार बन चुकी मनमोहन सिंह सरकार में 2012 के अगस्त महीने के अंत में देश के इतिहास में सबसे बड़ा घोटाला उजागर हुआ। जिससे समूचा देश गुस्सा से भड़क उठा। खंडन-मंडन चल ही रहा था कि साम्राज्यवादियों का एक नंबर का वफादार दलाल मनमोहन सिंह ने साम्राज्यवादियों को देश की अर्थ व्यवस्था में सेंद करने का रास्ता साफ करने के लिए सितम्बर माह में खुदरा व्यापार और मल्टी ब्रांड रिटेल के अलावा, एल.आई.सी, उड्डयन, पावर ब्रॉडकास्टिंग जैसे महत्वपूर्ण विभागों में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का रास्ता साफ किया। इसके अलावा कई सार्वजनिक उद्यमों में विनिवेश करना, और गरीब परिवारों, आर्थिक रुप से कमजोर परिवारों को देने वाली सबसिडियों को कम करना, रसोई गैस सबसिडी व सिलिंडरों को सीमित करने जैसा महत्वपूर्ण निर्णय केन्द्रीय मंत्री मंडल में लेने के बारे में प्रधान मंत्री की घोषणा जनता के घाव पर नमक छिड़कने के समान था।

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफ.डी.आई) क्या है? किसी देश अपनी अर्थ व्यवस्था विदेशों के हाथों में कठपुतली बनने नहीं देने हेतू व्यवसाय, उद्यमों, कारोबारों में विदेशी निवेश पर पाबंदियां लगाता है। ऐसी हालत में अनुमति प्रदान क्षेत्र या विभागों में ही निवेश करते हैं। किसी व्यवसाय में जो व्यक्ति/संस्था 51 प्रतिशत पूंजी निवेश करता है उसको वह अपना मन मुताबिक योजना से चलाता है। देश, जनता के अनुकूल रहने की कोई गारंटी नहीं होता इसीलिए विदेशी प्रत्यक्ष निवेश कम से कम तक ही सीमित होता है। अन्यथा बहुराष्ट्रीय कंपनियां मनमानी कर देश की अर्थ व्यवस्था को ही तबाह कर देती हैं। कोई भी निजी कंपनी मुनाफा कमाने के लिए ही निवेश करती है। भ्रष्टाचार को बढ़ावा देकर घोटाला करके जनता की पूंजी को गबन कर रफु चक्कर हो जाता है। इसीलिए विदेशी निवेश को महत्वपूर्ण विभागों में सहमति नहीं देते हैं। इतना महत्वपूर्ण विषय पर केन्द्र सरकार ने सभी देश प्रेमियों की आशंकाओं को दरकिनार करके सेवा निवृत्त सरकारी कर्मचारियों के फंड में 26 प्रतिशत, उड्डयन में 49 प्रतिशत और कुछ विभागों में 51 प्रतिशत निवेश को अनुमति/सहमति देने का फैसला किया है।

खुदरा व्यापार क्या होता है? जो भी सामान (दाल, चावल, साबून, घड़ी, गाडी, टी.वी., कंप्यूटर जैसी सभी चीजें) तैयार होकर तीन स्तरों से होकर ग्राहक तक पहुंचती है। आखरी पहला वितरक, दूसरा थोक विक्रेता, तीसरा थोक विक्रेता से लाकर ग्राहक (जनता) को बेचता है। पहला और दूसरा स्तर में पूंजी ज्यादा लगता है और कम लोगों से संचालित किया जाता है। तीसरा में, कम पूंजी से ज्यादा लोगों के जरिए चलाया जाता है।

खुदरा व्यापार यानी/ चिल्लर दुकान असल में उतना चिल्लर नहीं होती है - आज देश भर में इस कारोबार व व्यापार में पांच करोड़ से ज्यादा लोगों को रोजगार मिलता है। एक परिवार में पांच सदस्य के हिसाब से लिया जाये तो 25 करोड़ लोग इस पर निर्भर हैं यानी देश की कुल आबादी का 20 प्रतिशत। देश में कृषि क्षेत्र के बाद रोजगार देनेवाला प्रमुख क्षेत्र यही है।

भारत में अमेरिकी साम्रज्यवादी देश का ''वालमार्ट'' जैसी कंपनियां खुदरा व्यापार में निवेश करने के लिए केन्द्र सरकार पर दबाव डालते आ रही हैं। क्योंकि भारत एक बड़ी आबादी वाला और विकासशील देश है । यहां पर कई संभावनाएं हैं और अभी खुदरा व्यापार में लगभग 30 लाख करोड़ रुपये का निवेश हो चुका है जो सालना 20 प्रतिशत की रफ्तार से बढ़ रहा है। इस नीति की घोषणा के बाद संप्रग घटक के कुछ दलों सहित सभी विपक्षी

दलों ने विरोध किया। 2004 में इसी नीति को प्रतिपक्ष में रहते हुए कड़ा विरोध करते हुए देश को किस तरह नुकसानदायक होगा कहकर सांसद में लंबा-चौड़ा भाषण देने वाला मनमोहन सिंह प्रधान मंत्री बनकर समर्थन में (संसद नहीं) दूरदर्शन और आकाशवाणी के माध्यम से देश को संबोदित करते हुए देश की प्रगति का राफ्तार बनाये रखने के लिए, और आर्थिक संकट से बाहर निकलने के लिए बहुत जरुरी बताया। इससे किसानों को भी फायदा होगा ऐसा भी कहा। किसानों और गरीब जनता को दिये जाने वाले सबसिडी के अलावा सुधार कार्यों के लिए पैसा कहां से लाते हैं, रुपया क्या झाड़ से उगता है जब चाहे पत्ता जैसा तोड़ लें। कुछ सार्वजनिक कंपनियों (जो मुनाफा में चल रही थी, जिन्हें नवरत्न कंपनियां कहते हैं) के शेयर/ हिस्सा बेचकर ही धन जुटाना पड़ता है। जन कल्याण व सुधार कार्यों को चलाना है तो तुरंत और साहसिक-सक्त कदम उठाना होगा नहीं तो हम पीछे रह जायेंगे तब हमें कोई बचाने नहीं आएगा कहकर जन कल्याणों का झांसा/ आशा दिखा कर, डरावनी स्थिति को दिखा कर उसकी आड़ में अपना साम्राज्यवाद नीत योजनाओं को लागू कर रहे हैं।

सरकार द्वारा पेश की गई बहस के अनुसार देश में नया रोजगार पैदा होगा, नौकरियां मिलेगी, दामों में गिरावट आयेगी। किसानों को अच्छा भाव मिलेगा। कल्याण योजनाओं को धन जुटाने का अच्छा मौका है आदि-आदि। असलियत तो इससे उल्टा रहा है। बड़े पूंजीपतियों के सामने गल्ली-मोहल्ले के छोटा कारोबरी/व्यवसायी नहीं टिक पाते हैं। क्योंकि एक ही चीज को बड़े पूंजीपति लोग मनमोहक, रंग-बिरंगे पैकिंग करके लुभावना प्रचार के अलावा प्रतिद्वंदियों को नुकसान करके करोबार से हटाने के लिए एक रणनीतिक तौर पर कुछ महीनों/सालों तक कम फायदा से ही मार्केट में मालों को बेचते हैं। स्थानीय व्यापारियों का दिवालिया होने के बाद मार्केट पर उनका अप्रत्यक्ष नियंत्रण होते ही दामों में बेहद बढ़ोतरी कर जनता को लूटना शुरु कर देते हैं। उदाहरण के लिए देखे तो साम्रज्यवादियों की पेप्सी कंपनी किसानों से मुशकिल से 10-15 रु. किलो के हिसाब से आलू खरीद कर उसे छील-चीर कर तेल में तल कर कुछ मसाले छिड़का कर रंग-बिरंगे कवरों में पैक करके 700 रु. प्रति किलो के हिसाब से बाजार में बेच रही है। इसमें न तो किसानों को ज्यादा भाव मिला और न हीं ग्राहक/ जनता को कम भाव में सामान मिली। इससे यह हुआ कि स्थानीय तैरियां बंद हुई, और नुकसान की मार झेले छोटे व्यापारी लोग मजबुरी से साम्राज्यवादी कंपनी के दुकानों में दलाल या एजेंट बन जाते हैं। नई नौकरियां पैदा होने की बात तो दूर करोड़ों लोग बेरोजगार बन जाते हैं।

अब रही किसानों के हितों की बात, इससे किसानों का हित होगा कहना ही बड़ी बेईमानी है। अब देश में चल रही योजनाएं हो या दूसरी योजनायें किसानों के प्रति आंसू बहा कर कृषि क्षेत्र को खुद पर ही छोड़ दिया जा रहा है। कृषि क्षेत्र में साम्राज्यवादी घुसने से देशी कृषि में, बीजों की जैव विविधता की तबाही हो जाएगी। सीमित रुप से घुसे साम्राज्यवादी कंपनियों की धोखा-धड़ी से लाखों किसान खुदकुशी/खुद फांसी पर लटक गये। वह भी विकासोन्मुख पंजाब-आंध्र प्रदेश जैसे राज्यों में। आंशिक रुप से कृषि क्षेत्र में घुस कर ही लाखों किसानों की जान लेने वाली साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों को बेरोक-टोक अगर घुसने की इजाजत मिल गयी तो निश्चित रूप से करोड़ों किसान बली का बकरा बन जायेंगे। फिर भी शोषक-शासक का दलाल मनमोहन सिंह को किसानों का भला ही दिखाई दे रहा है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के साथ ही कुछ उद्योगों में, विनिवेश और डिजल पर हर एक लीटर पर पांच रुपये बढ़ाने के अलावा सब्सिडी में दी जा रही रसोई गैस सिलिंडरों की संख्या 12 से घटा कर 6 तक ही सीमित करने तथा बाकी बाजार भाव से उपलब्ध करवाने की भी घोषणा की गई। यह विनिवेश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में की जा रही है जो मुनाफा में चल रही है। जिन्हें नवरत्न कंपनियों के नाम से भी जाना जाता है। साम्राज्यवादी मुख्य रूप से अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनियां हमारे देश में जो निवेश करती हैं हमें उधार या मदद करने नहीं, बल्कि 120 करोड़ आबादी की विनिमय/क्रय शक्ति में से महा मुनाफा कमाने आ रही हैं। अगर थोड़ा-बहुत फायदा हुआ भी तो हमें उससे कई गुना ज्यादा चुकाना ही पड़ता है। (रसोई गैस का भाव बढ़ाना मतलब मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग के लोगों पर और बोझ डालने जैसा ही है इन महंगाई के दिनों में) रसोई गैस का भाव बढ़ा कर गरीब ही नहीं, मध्यम वर्गों के चुल्हा में भी पानी फेरना है। पहले से ही महंगाई के कारण दो जून (टाइम) की रोटी के लिए कमाना मुश्किल हो रही है। अब तो एक ओर डिजल के भाव बढ़ने से सभी खाद्य-पदार्थों का भाव बढ़ जायेगा। पेट्रोल, डिजल, रसोई गैस का दाम बढ़ाना हैं तो अंतराष्ट्रीय बाजार में भाव बढ़ गया, तेल कंपनियों को अपार नुक्सान होने का बहाना बनाते हैं। जब अंतरराष्ट्रीय बाजार में तेल का भाव न्यूनतम स्तर पर आता है तब देश में भाव कम नहीं करते। कुछ आंदोलन के कारण आयातों में हुए नुक्सान की भरपाई का हवाला देकर मुंह बंद करने की कोशिश (प्रचार) करते हैं।

खुदरा बाजार में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश और डिजल, रसोई गैस के भावों में वृद्धि के खिलाफ जनता की मनोभावना को देख (हो-हल्ला कर 20 सितम्बर को भा.ज.पा.) खंडन-मंडन चलाया। कुछ संप्रग दल भी खंडन में उतर गया। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने बंगाल की जनता में खुद का ग्राफ गिरते देख डर कर केंद्र सरकार को चेतावनी दी कि 72 घंटों के अंदर

कोयला घोटाला : साम्राज्यवादियों, दलाल नौकरशाहों द्वारा देश की खुली लूट है
प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह ही इसका असली सूत्रधार!

27 अगस्त, 2012 को और एक महा घोटाला देश को अचंभित करने वाला जनता केसामने आया। इस घोटाला को कोई पत्रकार या स्ट्रिंग आपरेटर ने नहीं, बल्कि संसद के निर्णयों के अमल पर नजर रखने वाली शोषक-शासक वर्गों की संवैधानिक संस्था सी.ए.जी. (नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक) ने ही इस घोटाला का परदाफाश किया है। इस घोटाला ने कोयला ब्लाक आवंटन में पनप चुका षड़यंत्र का पर्दाफाश किया। इससे साफ होता है कि यू.पी.ए. गठबंधन सरकार घोटालों की बंधन सरकार यानी यह घोटालों के लिए ही बनी है।

यह कोयला घोटाला स्वयं प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह की देखरेख में हुआ है। 2004 में पहली बार प्रधान मंत्री बने मनमोहन ने कोयला मंत्रालय को अपने पास ही रख लिया था। यह घोटाला 2004 से 2009 के बीच हुआ है। आपूर्ति में कमी को दूर करने के लिए ताप बिजली उत्पादन बढ़ाने के अलावा स्टील कारखानों के लिए कोयला उत्पादन में बढ़ोतरी करने के फैसले को केन्द्र सरकार लागू करने के दौरान देश भर में मौजूद कोयला इलाकों को 150 हिस्सों (ब्लाकों) में विभाजन करके निजी कंपनियों को आवंटन करने का भी उसने निर्णय लिया था। केन्द्र-राज्य सरकारों द्वारा कोल इंडिया, सिंगरेणी जैसी संस्थाओं को न देकर निजी कंपनियों के हाथों में सौंपना ही एक षड़यंत्र है। इस योजना का फायदा उठाने के लिए विदेशी कंपनियों, दलाल नैकरशाह पूंजीपतियों

⇨

योजना की वापसी का ऐलान करो वरना हम (तृणमूल कांग्रेस) केन्द्रीय मंत्री मंडल से हट जाने के साथ-साथ सरकार का समर्थन भी वापस ले लेंगे, ऐसा बयान दिया। हाल ही में गृह मंत्री से दुबारा वित्त मंत्री बने चिदंबरम ने वापस लेने से सीधा नकारा। 72 घंटे के बाद टी.एम.सी. के केन्द्रीय मंत्रियों ने इस्तीफा देकर केन्द्र सरकार को अपना समर्थन वापसी की घोषणा की तो अवसरवादी समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी ने अपने नेताओं पर चल रहे आय से अधिक संपत्ति के कोर्ट केसों में केन्द्र सरकार की मदद से बच निकलने के लिए केन्द्र सरकार की मदद करने की घोषणा की। 1992 के बाद सत्ता में आये सभी नेताओं (जयललिता, करुनानिधी, येद्दुरप्पा, गालि जनार्दन रेड्डी, रमण सिंह, नवीन पटनायक, महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश आदि राज्यों के सभी मुख्य मंत्रियों) का यही हाल हैं। फिर भी सितम्बर 20 को देशव्यापी बंद व्यापारी लोग, पार्टियां, मजदूर शामिल होकर सफल किया। खुदरा व्यापार में प्रत्यक्ष निवेश के विषय पर दिखवा के लिए ही सही पूरा विपक्ष इसका विरोध कर रहा है। इंदिरा कांग्रेस शासित राज्यों की सरकारें इसका समर्थन कर रही है। लेकिन यहां हमें एक बात याद रखनी चाहिए कि 2003 में खुदरा व्यापार में विदेशी निवेश को लागू करने के लिए भा.जा.पा. तैयार हुई तो प्रतिपक्ष के नेता मनमोहन सिंह कड़ा विरोध किया था, आज वही मनमोहन उसे लागू करने के लिए कमर कसा तो भा.जा.पा. विरोध में खड़ी है। अतः स्पष्ट है कि योजना को लागू करना ही इन बहुरुपियों का असली मकसद है। क्योंकि इन दलालों का मालक अमेरिकी साम्राज्यवाद सख्ती करने का आदेश दिया कि जल्द से जल्द लागू किया जाय। इन दोनों पार्टियों की असली होड़ सिर्फ साम्राज्यवादियों को खुश कर अपना-अपना वर्चस्व बढ़ाने के लिए है।

आज का यह उदारीकरण 1991 में (भारत के दलाल पूंजीपतियों का) तब केन्द्र में सत्तासीन कांग्रेस सरकार ने विश्व बैंक के कई प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष विषम शर्तों को मान ली थी। देश के हर क्षेत्र को विदेशी निवेश के लिए खोल देने सभी कल्याण योजनाओं को बंद करने और कृषि क्षेत्र को देनेवाली सब्सिडी सहुलियतों की कटौती करने का अर्थ ही है लोगों को निजी कंपनियों के हवाले करना। इन शर्तों को लागू करते ही मुनाफा में चल रहे सार्वजनिक उद्यमों को निजीकरण कर दिया गया। और, बाकी का निजीकरण किया जा रहा है। अब उदारीकरण का दूसरा दौर चल रहा है। इस दौर में धीमी गति से चल रही योजनाओं को भी बंद कर सीधे साम्राज्यवादियों के हाथों में जनता के भविष्य को सोंपना हैं।

साम्राज्यवादी देश में जन्म लेकर पूरी दुनिया को अपनी चपेट में ले चुके आर्थिक संकट से साम्राज्यवादी लोग उबरने के लिए विकासशील, पिछड़े देशों को और लूटना चाहते हैं। साम्राज्यवादियों के इशारे पर चलकर साम्राज्यवाद परस्त नीतियों को लागू करनेवाले शासक वर्गों के इन तमाम योजनाओं का जनवाद पसंद, बुद्धिजीवियों, छात्र, नवजवान, सभी वर्गों की जनता को कड़ा विरोध करना चाहिए। सभी तरह की जन विरोधी मीतियों को परास्त करने के लिए हर प्रतिरोधों को तेज करना है। साम्राज्यवाद परास्त नीतियों को हम नव जनवादी क्रांति को सफल करके ही हरा सकते हैं। ✯

टाटा, मित्तल, जिंदाल, एसआर और ओसवाल से लेकर रमण सिंह तक मंत्रियों की निजी कंपनियां और रिस्तेदारों को या हिस्सेदारी वाली कंपनियों को बंदर बांट किया। इस बंदर बांट की हिस्सेदारी में सभी शासक वर्ग की पार्टियां शामिल हैं।

सी.ए.जी.रिपोर्ट के अनुसार इन कोयला ब्लाकों के आवंटन में तय नियमों, कानूनों का उल्लंघन हुआ। अवहेलना करते हुए वरिष्ठ नौकरशाह और नेताओं को किये गये आवंटनों को रद्द करने को कई 2004 से 2009 में मनमोहन सरकार 342 खानों के लायसेन्स बांटी। इसमें 101 ऐसे लोगों को दिया गया जिनका उस काम से कोई सम्बन्ध ही नहीं था। अब तक उजागर हुए सभी घोटालों को पार किया। 2011 में उजागर हुए टूजी स्पेक्ट्रम (मोबाइल और टीवी प्रसारण संबंधित) घोटाला एक लाख छिहत्तर हजार करोड़ रुपयों का था। यह घोटाला एक लाख छियस्सी करोडों का है। उसमें 53 कंपनियों का हिस्सा ही 180 करोड है। उस घोटाले का उजागर होते ही सभी अवसरवादी पार्टियां प्रधानमंत्री का इस्तीफा की मांग की तो कोई जांच करवाने की मांग की।

एक के बाद एक सामने आ रहे घोटालों का राज उस वैश्वीकरण में छिपी है। जिन्हें 1991 में ततकालीन प्रधान मंत्री पी.वी.नरसिंह राव और वित्त मंत्री मनमोहन सिंह जो आज का प्रधान मंत्री है ने देश की जनता को दिवा सपना दिखा कर अपनाया था। उस नीति के चलते ही एक के बाद एक, एक से बढ़ कर एक घोटाला हो रहा है।

टूजी स्पेक्ट्रम हो या कोयला ब्लाक आवंटन का मामला - साम्रज्यवादी-बहुराष्ट्रीय कंपनियों-दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों को एक सोंची-समझी रणनीति के तहत कौडी के भाव सौंपने का कार्य एक षड़यंत्र रच कर किया जा रहा है। टूजी स्पेक्ट्रम के मामले में पहले आओ पहले पाओ नीति अपनायी गयी। इस योजना को लागू करने की तारीख से पहले ही सभी फिक्स करके तारीख की घोषणा करने का षड़यंत्र किया गया। इस कोयला ब्लाक आवंटन में दूसरी रणनीति अपनाकर खुलेआम आवंटन की नीति अपनायी गयी। इन आवंटनों में सभी नियमों को ताक पर रखने का मौका मिलता है। इसीलिए बडा-बड़ा दलाल पूंजीपति घरानों को इच्छित ब्लाक मनमानी दाम में आवंटन किया गया है। बड़े नौकरशाहों को आवंटन किये गये कई कंपनियां तो कागज पर ही हैं। इससे 2010 तक 450 लाख मैट्रिक टन उत्पादन लक्ष्य था, जो 200 एमटी तक ही पहुंच पाया। निजी कंपनियों के हाथों में सौंपने से लाभ उन लोगों के खातों में जा रहा है और नुकसान जनता पर थोप रहे हैं। देश में हर कोई विरोध करते समय विश्व बैंक का एजेंट मनमोहन ने दुनिया को अर्थशास्त्र का पाठ पढ़ा कर साम्रज्यवादियों को आर्थिक संकट से उबारने के लिए तेहरान जा कर गुटनिरपेक्ष देशों का सम्मेलन भाषण दिया।

घोटाला का समाचार बाहर आते ही हो-हल्ला मचाने वाली भा.ज.पा.भी इन घोटालों का दायरा से बाहर नहीं है। आवंटन नीति बनाने में भा.ज.पा. शासित राज्यों छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, कर्णाटक, ओड़िशा के मुख्यमंत्रियों ने भी अपनी सहमति दे चुकी है। इतना ही नहीं छत्तीसगढ़ में रमण सिंह का परिवार, सग्गे-संबंधी, नवीन पटनायक भी आवंटन की साजिश में लिप्त है। कर्नाटक के भूतपूर्व मुख्यमंत्री यदयूरप्पा, मंत्री गालि जनार्दन रेड्डी, आंध्र प्रदेश के दिवंगत मुख्यमंत्री राजशेखर रेड्डी ने भी इन आवंटनों से नजायज फयदा उठाया।

यू.पी.ए.सरकार सिलसिलेवार घोटालों में फंसकर जनता में पहले से ज्यादा बेनकाब हुई है। इस परिस्थिति का फायदा उठाने के लिए भा.ज.पा. अपनी कोशीश जारी रखी है। पत्रकारों के सामने कितना भी हो-हल्ला करे, मगर जनता से डर के मारे मनमोहन सिंह सरकार के विरोध में कडक तेवर नहीं दिखाई, जितनी उम्मीद थी। ये सभी एक डाल की ही पंक्षियां हैं। अगर किसी अंजाम तक पहुंचाना है तो खुद को भी जनता के सामने दोषी हो कर खडा होना पड़ता है। इसीलिए जनता ही इन जन विरोधियों को संगठित जन संघर्षों के जरिए सबक व सजा दे सकती है और नव जनवादी क्रांति को सफल बना के ही इन शोषक वर्गों को हरा सकती है।

✯

"हर आदमी एक न एक दिन जरुर मरता हैं, लेकिन हर आदमी की मौत की अहमियत अलग-अलग होती हैं... जनता के लिए प्राण न्यौछावर करना पर्वत से भी ज्यादा भारी अहमियत रखता हैं, जबकि फासिस्टों के लिए तथा शोषकों व उत्पीड़कों के लिए जान देना पंख से भी ज्यादा हल्की अहमियत रखता हैं।" - माओ त्सेतुड़

अमर शहीदों को जोहार

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की 9वीं कांग्रेस (एकता कांग्रेस) द्वारा सौंपे गये कार्य भार (नये इलाकों में जन संघर्ष को फैलाओ-और मजबूत करो) को अपने कंधों पर लेकर केंद्रीय कमेटी के मार्गदर्शन में दण्डकारण्य की रणभूमि से निकल पड़े पी.एल.जी.ए. के लाल योध्दाओं ने छत्तीसगड़-ओड़िशा सीमान्त क्षेत्र में अपने लहू से संघर्ष का बीज बोनेवाले शहीदों को 'जन संग्राम' की ओर से कोटि कोटि लाल सलाम...

पड़किपाली शहीदों (9-10-2010)

कामरेड अयतू (डी.वी.सी.एम)

कामरेड नताशा(ए.सी.एम)

कामरेड पारु(पी.एम)

कामरेड रामबत्ती(पी.एम)

कामरेड बिरसा(पी.एम)

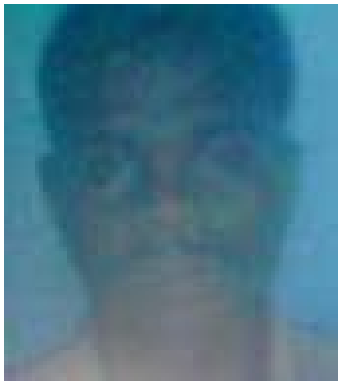

कामरेड गौतम ग्रामीण)

दाओसी सिधार (ग्रामीण)

कामरेड मंजुला(पी.एम)
सन बांजपाली शहीद(21-6-2011)

कामरेड मोहन(डी.वी.सी.एम)
परदीयपाली शहीद (27-1-2012)

जोलाराव शहीदों (31-5-2012)

कामरेड समीरा
(ए.सी.एस)

कामरेड अरुण(ए.सी.एम)

कामरेड अमीला (ए.सी.एम)

कामरेड अजय (17-7-2012)
फर्जी मुठभेड़ हत्या

कामरेड विद्या (14-6-2012)
फर्जी मुठभेड़ हत्या

कामरेड दिनेश (पी.एम)
सोनाबेड़ा (25-6-2012)

ब्रितानी साम्रज्यवादियों से विद्रोह किये इस अंचल के वीर शहीदों को लाल जुहार !

जन संग्राम पत्रिका आरम्ब कर रहे इस मोके पर छत्तीसगढ़-उड़िशा की इस सीमांचल में ब्रितानी साम्राज्य वादियों के पराया शासन, शोषण के विरोध में विद्रोह कर शहीद हुए बस्तर सम्बाग के भूमकाल महानायक गुण्डादूर, सोनाखान के वीरनारायण सिंह, कोरापूट के लक्ष्मण नायक, रघुनाथ मंर्गे, गुरु मंगो भाय, गोमांग, कलहंडी के रेण्डो माझी, मत्र कलो, सुन्दरगढ़ के दरणीधर, केन्दूझर के निर्मल मुण्डा बरगढ़ के माधवसिंग भरिया और उनके चार पुत्र, संबलपूर के सुरेन्द्र साई, संताल परागाना के बिरसा मुण्डा के साथ तमाम सैकडों, हजारों इस धर्ती के योध्दाओं का जन संग्राम लाल जुहार अर्पित करती हैं। और उन की विरासत को जारी रखने की शोषण मुक्त समाज निर्माण करने शपथ लेती हैं।

माक्सवादी महान शिक्षक कारल मार्क्स ने कहा हैं, अबतक की इतिहास वर्ग संघर्षों की इतिहास हैं। इस के अनुसार हमारी देश की सामाजिक विकास क्रम में कई युध्द लड़े गये थे। इस सामरिक इतिहास में गोरे लोगों से वर्षों तक देश के हर जगह विद्रोह किया गया था यह एक महत्वपूर्ण अध्याय हैं। यह विद्रोहों का इतिहास को शोषक शासक वर्गों ने हम से जान भूजकर चुपाके रखे जो कुछ भी इन विद्रोहों की, शहीदों की इतिहास आज प्रचूरित किया गया ओ तोडमरोड कर दर्शाई गई हैं। कुछ राज्यों में हमारे पुरकों के इतिहास को पाठ्य पुस्तकों से भी हटा दिया गया। हमारे इतिहास को हमें जानने से वंचित रखा हैं। गोरे लोग इस देश से चलेजाने के लिए देश के बढ़ते सशस्त्र विद्रोहों से डर ही उन्हे मजबूर किया। ना की गांधी की अहिंसा की सत्याग्रह। आज की पीढ़ी हम सब को चाहिए यह संघर्ष मय इतिहास को कोज निकालना, संरक्षण करना, प्रचार करना हमारा कर्तव्य हैं। हमारी यह जन संग्राम पत्रिका इस संघर्ष मय इतिहास, शहीदों की गाथाए, वास्थविक, सच्चाई को सही रुप में पीढ़ित जनता को उपलब्द करने की भरसक कोशीश प्रचार करेगी, थाकी इस विरासत को जारी रख कर नवसमाज निर्माण किया जा सके।

जोहार अमर शहीदों को

2007 में सम्पन्न हुई माओवादी पार्टी की 9वीं कांग्रेस-एकता कांग्रेस की महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक जन आन्दोलन को नये इलाकों में फैलाना और मजबूती प्रदान करना है। इस महत्वपूर्ण निर्णय के कार्यभार को अपने कांधों पर उठाकर 2010 जून में केन्द्रीय कमेटी की आगुवाई में डी.के. से पीएलजीए की 2 कम्पनी छत्तीसगढ़ से सटे पश्चिम ओड़िशा की तरफ विस्तार करने के प्रस्ताव को साकार करने के लिए इस अंचल में आई।

पहले से ही हमारी पार्टी ओड़िशा के नुआपाड़ा जिला अंतर्गत कोंमना ब्लाक के सोनाबेड़ा में काम कर रही थी। इस एरिया से सटे हुए बलंगीर, बरगढ़ जिलों के अलावा छत्तीसगढ़, महासमुंद इलाका में विस्तार करने के निर्णय के अनुसार क्रांतिकारी जोश के साथ नदी-नाला, पहाड़-जंगल, मैदान, रोड, रेलवे लाइन आदि को पार करते हुए बरगढ़ तक माओवादी पार्टी की राजनीति और क्रांतिकारी जन संस्कृति का प्रचार गानों एवं नृत्यों के साथ करते हुए आगे बढ़ रही थी। इसी दौरान महासमुंद जिला से विस्तार की यह खबर केन्द्र और राज्य सरकार को अपना खुफिया विभाग के जरिए मिलते ही उन्होंने तुरंत अत्याधुनिक हथियारों से लैस STF, कोबरा आदि पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों को सतर्क कर दिया तथा पीएलजीए की इस पहल कदमी को रोकने व विफल करने की हिदायत दी। निर्देशानुसार एक बहुत बड़ी साजिश के तहत छत्तीसगढ़-ओड़िशा के बॉर्डर में दोनों राज्यों के विशेष बलों और सीआरपीएफ के कोब्रा बलों ने 9 अक्टूबर, 2010 को महासमुंद के पड़किपाली जंगल में घात लगाकर पीएलजीए पर हमला दिया, जिसमें दो ग्रामीणों सहित आठ कामरेड शहीद हो गए।

इलाका विस्तार में यह पहली मुठभेड़ थी। इसके बाद, पार्टी को यहां पर पांव नहीं जमाने देने के दुश्मन के नापाक इरादों को विफल करते हुए पी.एल.जी.ए के योद्धाओं ने विस्तार कार्य में शहीद हुए शहीदों के अधूरे सपनों को पूरा करने के लिए और दृढ़ता से काम करते हुए जनता को संगठित कर रहा है।वे अपनी राह की मुश्किलों को पार करते हुए तथा दुश्मन से लोहा लेते हुए ही आगे बढ़ रहे हैं! इन दो सालों में और कुछ कामरेडों ने अपना खून से लाल झंडा को और लाल बनाकर हमारे हाथों में सौंपा है। आवें, हम उन शहीदों के अधूरे सपनों को पूरा करने की शपथ लेंगे।

विस्तार कार्य में शहीद हुए कामरेडों का क्रांतिकारी जीवन परिचय। ☆

''जहां कहीं भी संघर्ष होता हैं वहां कुरबानी करनी पड़ती हैं और मौत एक आम घटना बन जाती हैं। लेकिन हमारे दिलों में जनता का हित औ- लोगों की भारी बहुसंख्या की लकलीफों मौजूद हैं, तथा जब हम जनता के लिए कुरबान हो जाते हैं तो यह एक शानदार मौत होती हैं। फिर भी हमें गैरजरुरी कुरबानियों से बचने की भरसक कोशिश करनी चाहिए ''

- माओ त्सेतुड़

अमर शहीदों की जीवन-पुस्तिका
एक परिचय

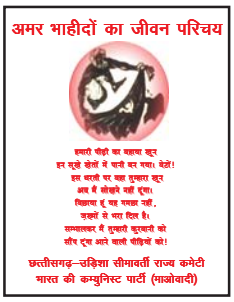

चौदह शहीदों के साहस, बलिदान और आद र्मिय जीवन को प्रस्तुत करना ही इस पुस्तिका का मुख्य उद्देश्य है। साम्राज्यवाद, दलाल नौकर ाह पूंजीपति वर्ग एवं सामंतवादी बंधनों को तोड़कर दे ा को मुक्त करके नया समाज निर्माण के लिए हमारी पार्टी के संस्थापक, प्यारे नेता कामरेड चारू मजुमदार और कामरेड कानाई चटर्जी द्वारा निर्धारित दीर्घकालीन जनयुद्ध के रास्ता से आगे बढ़ने के क्रम में अपना खून को बहाने वाले शहीदों के संक्षिप्त क्रान्तिकारी जीवन गाथा है यह पुस्तिका। इस वर्ग समाज के अनिवार्य परिणामस्वरूप सदियों से अविराम जारी वर्ग संघर्ष में दुनिया के उत्पीड़ित जनता अपना खून की रोशनाई से लिखते आ रही है संघर्शमय सामाजिक इतिहास के महाग्रंथ। यह महाग्रंथ उन वीर शहीदों के साहसिक, रोमांचक एवं रचनात्मक कहानियों के अनगिनित पन्नों का संग्रह है। अमर शहीदों की जीवन–गाथा की यह पुस्तिका उस महाग्रंथ में जुड़ने वाले बतौर ये नवीन पन्ने हैं।

भारत के क्रान्तिकारी आंदोलन खासकर दण्डकारण्य, बिहार, झारखण्ड, ओड़ि ा और पभिचम बंगाल के क्रान्तिकारी आंदोलन को कुचलने के लिए दु मन द्वारा एक षड्यंत्र के तहत चलाया जा रहा है प्रतिक्रान्तिकारी छल–कपटपूर्ण एल.आई.सी. युद्ध। दुश्मन के इस प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध को परास्त करके क्रान्तिकारी आंदोलन को दे ाभर में फैलाने के लिए छत्तीसगढ़, ओड़ि ा सरहद के वि ाल इलाका में जनयुद्ध को विस्तार करने की रणनीतिक योजना को साकार करने के कार्य में केन्द्रीय और राज्य कमेटियों के नेतृत्व में दण्डकारण्य से आये उन कम्युनिस्ट गुरिल्लाओं में अपनी जान को न्योछावर करने वाले वे आठ अमर वीर शहीद कामरेड भी शामिल हैं।

आंदोलन की सीमाओं व विभिन्न बाधाओं को लांघ कर और राज्य सरहद को मिटा कर क्रान्तिकारी आन्दोलन को विशाल व देश व्यापी व्यापक पैमाने पर फैलाने के महान लक्ष्य से आगे बढ़ रहे 10 क्रान्तिकारी गुरिल्ला योद्धाओं सहित 14 लोग अपनी जान को न्योछावर किये हैं, जिनमें साम्राज्यवाद विरोधी जनवादी संगठन के कार्यकर्ता व क्रान्ति समर्थक दो और दो आम ग्रामवासी भी शामिल हैं। शहीद होने वाले इन 14 लोगों में छत्तीसगढ़ के दो जिलों के नौ और ओड़ि ा के चार जिलों के पांच हैं। इन क्रान्तिकारी गुरिल्ला योद्धाओं ने साम्राज्यवादियों, दलाल पूंजीपतियों, सामंतवादियों के दिलों में सुनामियों को पैदा करते हुए जमीन–आसमान को उथल–पुथल कर रहे दण्डकारण्य जनांदोलन के आठ बेटे–बेटियां, छत्तीसगढ़ – ओड़ि ा सरहद के लाल इलाका के छः धरती पुत्र हैं।

इन जन योद्धाओं ने एक हाथ में वि व सर्वहारा वर्ग के मुक्ति–पताका के साथ जनमुक्ति छापामार सेना के पताका, दूसरे हाथ में रायफल थामे इस इलाका में कदम रखा। इन कामरेडों ने एमएलएम, माओवादी राजनीतिक–सैनिक नीति से वर्ग संघर्श व गुरिल्ला युद्ध के नियमों से जनता को अवगत कराया। इन कामरेडों ने जनता के साथ पानी और मछली जैसा रिश्ता बनाकर इस इलाका के पूर्वजों ने अंग्रेज साम्राज्यवाद के खिलाफ में जो महान संघर्शों – बलिदानों को करके मन में उस विरासत को जारी रखने का जरूरत को जनता में प्रचार किया। भौगोलिक, सामाजिक, भाशा, संस्कृति से परिचित नहीं होने से, जनता से घनिश्ट सम्बन्ध नहीं रहे उस भ्रुरूआती दिनों में होने वाले अनेक मु कलें मुसीबत, खतराओं से न डरते हुए यह कामरेड्स कम्युनिस्ट चेतना से कटिनाइयों को पार करते हुए जनता को पार्टी, सेना, क्रान्तिकारी राजनीति से अवगत करते हुए पार्टी के साथ जुड़ने के लिए प्रेरित किया। इस इलाका के चारों ओर माओवादी पार्टी के नेतृत्व में चल रहा जनयुद्ध का असर और इन कामरेडों द्वारा किया गया प्रचार से कुछ ही दिनों में अनुकूल माहौल पैदा हुआ। नया नेतृत्व, नयी सैद्धांतिक विचारधारा, नवीनतम राजनीति, संघर्श की नयी राह, नये मूल्यों को मिलते ही जनता में नवीनतम जागृति (चेतना) के फलस्वरूप कुछ ही दिनों में जनता ने लहर की तरह उठ खड़ी हुई, नया निर्माण अंकुरित हुआ।

नया इलाका में क्रान्तिकारी राजनीतिक संगठन के विस्तार के भनक से शासक वर्गों में भय पैदा किया। साम्राज्यवादियों की वित्तीय पूंजी, कच्चा माल दोहन, बाजार, इन सभी को निरंतर चालू रखने वाले शोशक–शासक वर्गों को अपना प्रभुत्व पर खतरा पैदा हो गया। अमेरिकी साम्राज्यवाद सहित सारे पूंजीवादी समाज आर्थिक संकट के विश जाल में फंस कर लटपटा रहा हो ऐसे समय में दे ा में जनयुद्ध का विस्तार इन सभी दु मनों को और ही डरा दिया है।

इससे मनमोहन सिंह–चिदंबरम–रमण सिंह–नवीन पटनायकों ने ओबामा और कई साम्राज्यवादियों की मदद से प्रतिक्रान्तिकारी युद्ध को इस इलाका में भी फैलाया। इसी के तहत ये लोग अर्धसैनिक बल–राज्य वि ेश पुलिस बल, कार्पेट सेक्युरिटी, हमला रोधी (अटाक प्रूफ पुलिस स्टे ान) पुलिस थाना – बेस कैम्पों, काले गिरोह, मुखबीर व्यवस्था (जाल), सिविक एक ान प्रोग्राम व मनोवैज्ञानिक युद्ध, काउंटर इन्सरजन्सी अभियान,

वायुसेना का हेलिकॉप्टर का इस्तेमाल करना, उतरने के लिए हेलिपेडों का निर्माण करना, पुलिस व अर्धसैनिक और सैनिक बलों को वि ोश प्रि ाक्षण देने के लिए प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण, पक्का सिमेंट रोड़ –पुल, पुलिया, संचार व्यवस्था, माओवादी नेताओं के सिर पर इनाम घोशित करना, डायरेक्ट केन्द्र के नेतृत्व में एकीकृत कमांड्स के जरिए अभियानों का संचालन करना, नयी–नयी सरेंडर पॉलिसी बनाना, कानसंट्रे ान कैम्प, जनविरोधी संस्कृति को फैलाना, वि ोश जिलों का निर्माण करना आदि। इस तरह के कई फासीवादी आर्थिक, राजनीतिक, सैनिक, सांस्कृतिक योजनाओं को सामने लाकर इन सभी के साथ–साथ फर्जी मुठभेड़ में हत्याएं करना न केवल शुरू किया है, बल्कि उसमें और तेजी ला कर विस्तृत कर रहा है। फासीवादी ग्रीन हंट अभियान के तहत हत्याओं के सहारा ही विस्तार के कार्य को भुरूआती दौर में ही कुचलने की नियत से सरकार ने हमारे चौदह कामरेडों की हत्या की। जनयुद्ध के विस्तार के तहत गुरिल्ला योद्धाओं द्वारा महासमुंद जिला में कदम रखने के दो सप्ताह के अन्दर ही पड़किपाली गांव में केंद्र और राज्य वि ोश पुलिस बलों ने एक ही हमले में छः कामरेडों आयतु, चांदनी, राजबत्ती, अर्जुन, बिरसा को और दो ग्रामणों गौतम पटेल, दाओसी सिधार की निर्मम हत्या की। इसी सिलसिले में इलाका में इन हत्यारों ने और सात कामरेडों की हत्याएं की। पूरा छत्तीसगढ़, ओड़ि ाा के सीमावर्ती इलाके को एक वि ोश सैनिक सिविर के रूप में तब्दील किया जा रहा है।

छत्तीसगढ, ओड़ि ाा के सीमावर्ती पूरे इलाकों की मिट्टी में एक शक्तिशाली जनयुद्ध के राजनीतिक बीज बोने के कार्य में लगे उन आठ कम्युनिस्ट गुरिल्लों ने अपना खून से यहां की मिट्टी को सींचकर स्वयं ही बीज बन गये। तीन द ाक से कम उम्र के ये नव जवान, युवक, युवतियां जनयुद्ध के ज्वालों में तपे दण्डकारण्य के सुपुत्र/पुत्रियां हैं। वे जिस लाल मिट्टी में जन्मे हैं, वहीं लाल राजनीति को सीखकर उसे तनमन से अक्षरशः पालन किये हैं। इन भाहीदों में कोई भी सरकारी पदवीधारी या उपाधि प्राप्त तो थे ही नहीं, ऐसाकि सरकारी स्कूल में दो–चार क्लास भी नहीं पढ़ा था। वे वर्ग संघर्श के पाठभाला में ि ाक्षित हुए। उन्होंने बाल संगठन, जन मिलि ाया, चेतना नाट्य मंच, डीएकेएमएस, (दण्डकारण्य किसान मजदूर संगठन) केएएमएस (क्रान्तिकारी किसान मजदूर संगठन) या जनताना सरकार में सदस्य व नेता के रूप में काम किया और खुद को, दे ा के भविश्य को लिखने की गतिविधि में भाामिल किया था। वे अच्छी तरह जानते थे कि जनता का दु मन कौन है और दोस्त कौन है, अपना नेतृत्व कौन है। वे सभी जानते थे कि अपना मां–बाप, भाई–बहनें क्यों तीन द ाकों से दण्डकारण्य में लड़ रहे हैं। दे ा के विभिन्न इलाकों में पिछले चार द ाकों से करोड़ों जनता किस सपने को पूरा करने व किस लक्ष्य को हासिल करने के लिए लड़ रहे हैं और खुद उस लड़ाई के अभिन्न अंग क्यों हैं, आदि विशयों को वे अच्छी तरह जानते थे। इतना ही नहीं, वे अच्छी तरह जानते थे कि माओवादी पार्टी के नेतृत्व में दे ा की मुक्ति के लिए, दण्डकारण्य की मुक्ति के लिए, उत्पीड़ित वर्गों, उत्पीड़ित जाति, उत्पीड़ित सामाजिक जन समुदायों की मुक्ति के लिए खुद अपना, नेतृत्व का और सदस्यों का बलिदान क्यों अनिवार्य है। और, इस तरह के महान बलिदानों के लिए खुद तैयार रहने की जरूरत को भी वे जानते थे। भाशक वर्गों ने नक्सलबाड़ी–श्रीकाकुलम, वीरभूम –कांकसा–सोनारपुर आदि स ास्त्र किसान क्रान्तिकारी आंदोलनों में जनता का खून बहाने के बाद भी कुछ ही समय के बाद क्रान्तिकारी जनयुद्ध और तेज, सभाक्त और उन्नत रूप में दे ा के चारों ओर में समृद्ध अनुभव के साथ उभर कर आया। दमन के जरिए क्रान्ति को हमे ाा के लिए रोक पाना असम्भव है इस सत्य को और आज के युग का क्रान्तिकारी स्वभाव को जानते हुए महान कामरेडों ने अपना बलिदान व्यर्थ नहीं होगा इस वि वास के साथ लक्ष्य को पाने के लिए अपना सब कुछ न्योछावर करने की मानसिकता से रणभूमि में कदम रखा। उन्होंने इस छत्तीसगढ़ – ओडि ाा सीमावर्ती इलाका को, नक्सलबाड़ी – आंध्रा – बिहार – दण्डकारण्य – झारखण्ड को नंदिग्राम, लालगढ़, कलिंगनगर, नारायणपटना जैसा मुक्तांचल के रूप में परिवर्तित करने के लक्ष्य से अत्यंत मूल्यवान बलिदानों से भरा कार्यभार को कंधों में लेकर उस लक्ष्य को हासिल करने के लिए दु मन से लड़ते हुए अपना आखिरी सांस तक दे ा को भाोशण से मुक्त करने का सपना देखते हुए अपना बलिदान दिया।

इस पुस्तक में भाहीदों के क्रान्तिकारी जीवन के बारे में संक्षिप्त रूप से ही परिचय दिया गया है। मगर इनमें से हर एक क्रान्तिकारी जीवन इतिहास कभी न खत्म होने वाला क्रान्तिकारी खदान है। हर एक भाहीद का लक्ष्य के प्रति लगाव, वर्गघृणा, दृढ़संकल्प, सहन ीलता, लड़ाई में फूर्तिला, त्याग, सीखने की इच्छा, जनता ही इतिहास का निर्माता है इसे मानना आदि विशयों में जनमुक्ति सेना के इन सद्गुणों को हम सब आद ा के रूप में अपनायेंगे। ये भाहीद हमारे प्रेरणा–स्रोत हैं। आवें, हम सहयोगी बनकर इलाका विस्तार के लक्ष्य को हासिल करने के लिए, दे ा की मुक्ति के लिए और एक बार भापथ लेंगे। आवें, आंदोलन के क्रम में अनिवार्य बलिदानों के लिए हर पल तैयार रहें तथा अनाव यक नुकसानों से बचते हुए आत्मगत भाक्तियों को बचाते हुए उसे मजबूत करेंगे; भाोशित जनता को क्रान्तिकारी राजनीति से जागरूक व लैस करते हुए परिस्थिति के अनुरूप जनता को संगठित करते हुए वर्ग संघर्श में शामिल करेंगे; जन युद्ध में और सक्रिय भूमिका निभ़ायेंगे; फासीवादी ग्रीन हंट अभियान को जनयुद्ध की आग में जला कर राख करने के लिए भाहीदों से प्रेरणा लेकर साहस के साथ लड़ेंगे; भाहीदों के अधूरे सपनों को साकार करने के लिए फिर एक बार भापथ लेंगे। भाहीदों का सपना कभी व्यर्थ नहीं जाएगा, उनकी भाहादत हिमालय पर्वत से भी भारी है। अमर भाहीदों का बलिदान हमें और दुनिया भर में भाोशण विहीन समाज निर्माण हेतु लड़ने वालों का प्रेरणा–स्रोत व आद ामय रहेगा।

– जुलाई 2012

24 नवम्बर 2011

शोषित जनता के प्यारे सपूत, भारतीय क्रांति के नेता और भाकपा (माओवादी) के केन्द्रीय कमेटी सदस्य और पोलित ब्यूरो सदस्य

कामरेड मल्लोजुला कोटेश्वर राव (रामजी) अमर रहे !

24 नवम्बर 2011 का दिन भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के इतिहास में काले दिन के रूप में अंकित हुआ है। भाकपा (माओवादी) को 'देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा' के रूप में प्रचारित करते हुए देशव्यापी दमनचक्र व शोषित जनता के खिलाफ अन्यायपूर्ण युद्ध छेड़ने वाले फासीवादी सोनिया–मनमोहन सिंह–प्रणब–चिदम्बरम– जयराम रमेश शासक गिरोह ने बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के साथ सांठगांठ कर एक षड़यंत्र के तहत कॉमरेड आजाद की हत्या पर मगरमच्छ के आंसू बहाई ममता बनर्जी ने सत्ता में आने के बाद एक तरफ माओवादी पार्टी के साथ 'शांति वार्ता' का ढोंग करते हुए ही दूसरी ओर एक अन्य अग्रणी नेता कॉमरेड कोटेश्वर राव की हत्या कर अपने जन विरोधी व फासीवादी चेहरे पर से मुखौटा हटा लिया। केन्द्रीय खुफिया संस्थाओं, पश्चिम बंगाल व आंध्रप्रदेश की हत्यारी खुफिया संस्थाओं ने बड़ी सोची–समझी साजिश के तहत उनका पीछा किया और एक संयुक्त ऑपरेशन में उनकी कायराना हत्या किए है लुटेरे शासक वर्गों और उनका मार्गदर्शन करने वाले साम्राज्यवादियों को, जो यह दिवास्वप्न देख रहे हैं कि वे क्रांतिकारी आंदोलन के उच्च नेतृत्व की हत्या कर माओवादी पार्टी का जड़ से सफाया कर सकेंगे, शोषित जनता जनयुद्ध के जरिए जरूर दफना देगी।

पार्टी और जनता के बीच प्रह्लाद, रामजी, किशनजी, बिमल आदि नामों से लोकप्रिय कॉमरेड कोटेश्वर भारत के क्रांतिकारी आंदोलन के महत्वपूर्ण नेताओं में से एक थे। पिछले 37 सालों से एक अथक योद्धा के रूप में, उठाई हुई बंदूक को कभी नीचे न रखते हुए, शोषित जनता की मुक्ति के लिए लड़ते हुए अपने सिद्धांत व उसूलों की खातिर जान कुरबान करने वाले कॉमरेड कोटेश्वर का जन्म 1954 में आंध्रप्रदेश के उत्तर तेलंगाना क्षेत्र में आने वाले जिला करीमनगर के पेद्दापल्ली कस्बे में हुआ था। पिता वेंकटैया, जो स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी रहे और मां मधुरम्मा, जो प्रगतिशील विचारों वाली महिला हैं, के लालन–पोषण में पले–बढ़े कॉमरेड कोटेश्वर में बचपन से ही देश और देश की मेहनतकश जनता के प्रति प्रेम की भावना पैदा हुई। पेद्दापल्ली कस्बे में हाईस्कूल की पढ़ाई करने के दौरान 1969 में उभार के रूप में सामने आए पृथक तेलंगाना आंदोलन में उन्होंने सक्रिय रूप से भाग लिया था। करीमनगर के एसआरआर महाविद्यालय में स्नातक की पढ़ाई के दौरान महान नक्सलबाड़ी और श्रीकाकुलम के संघर्षों से प्रेरित होकर वे क्रांतिकारी आंदोलन में कूद पड़े थे। 1974 से उन्होंने पार्टी में सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में काम करना शुरू किया। आपातकाल के अंधेरे दौर में कुछ समय के लिए जेल जाने वाले कॉमरेड कोटेश्वर ने आपातकाल को हटाने के बाद पार्टी संगठनकर्ता के रूप में अपने गृह जिला करीमनगर की जनता के बीच कामकाज शुरू किया। पार्टी द्वारा दिए गए 'चलो गांवों की ओर' के आह्वान को पाकर गांवों में जाकर उन्होंने किसानों के साथ संपर्क कायम कर लिया। 1978 में 'जगित्याल जैत्रयात्रा' के रूप में मशहूर हुए किसान आंदोलन के उभार में प्रमुख भूमिका निभाने वालों में वे एक थे। उसी सिलसिले में वे भाकपा (मा–ले) की आदिलाबाद–करीमनगर संयुक्त जिला कमेटी के सदस्य के रूप में चुन लिए गए थे। 1979 में जब यह कमेटी दो कमेटियों के रूप में अलग हुई थी तो उन्हें करीमनगर जिला कमेटी के सचिव की जिम्मेदारी दी गई थी। 1980 में आयोजित आंध्रप्रदेश के 12वें राज्य अधिवेशन में उन्होंने भाग लिया था जहां उन्हें राज्य कमेटी में चुन लिया गया था और उसके सचिव बनाया गया था।

1985 तक एपी राज्य कमेटी के नेतृत्व में प्रदेश भर में आंदोलन का विस्तार करने में तथा गुरिल्ला जोन के लक्ष्य से जारी उत्तर तेलंगाना के आंदोलन को विकसित करने में कॉमरेड कोटेश्वर ने अहम भूमिका निभाई। 1980 में दण्डकारण्य में क्रांतिकारी आंदोलन का विस्तार करने और उसे विकसित करने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1986 में वे स्थानांतरित होकर दण्डकारण्य आंदोलन में शामिल हो गए जहां उन्होंने फॉरेस्ट कमेटी सदस्य की जिम्मेदारी उठाई। दण्डकारण्य में उन्होंने गुरिल्ला दस्तों और जनता का नेतृत्व व मार्गदर्शन किया। 1993 में उन्हें पार्टी की केन्द्रीय सांगठनिक कमेटी (सी.ओ.सी.) के सदस्य के रूप में सहयोजित किया गया।

1994 से उन्होंने खास तौर से बंगाल समेत पूर्वी और उत्तर भारत में क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार व विकास में योगदान दिया। विशेष रूप से पश्चिम बंगाल में, जहां नक्सलबाड़ी आंदोलन के पीछे हटने के बाद कई टुकड़ों में बिखर चुकी क्रांतिकारी शक्तियों को एकजुट कर क्रांतिकारी आंदोलन का पुनरनिर्माण करने में उन्होंने बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बंगाल की शोषित जनता से तथा क्रांतिकारी खेमे के अंदर विभिन्न तबकों से घनिष्ठता के साथ घुलमिलकर, बंग्ला भाषा को दृढ़ संकल्प के साथ सीखकर उन्होंने वहां की जनता के

दिलों में अमिट छाप छोड़ दी। कई क्रांतिकारी ग्रुपों से एकता कायम करने और पार्टी को मजबूत करने में उन्होंने अथक परिश्रम किया। इस दौरान 1995 में आयोजित पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) के अखिल भारतीय विशेष अधिवेशन में उन्हें केन्द्रीय कमेटी के सदस्य के रूप में चुन लिया गया। 1998 में पीपुल्सवार और पार्टी यूनिटी के बीच एकता कायम करने में उन्होंने मजबूती से काम किया। 2001 में आयोजित पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) पार्टी की कांग्रेस में उन्हें फिर से केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया और पोलिटब्यूरो सदस्य चुन लिया गया। उत्तर रीजनल ब्यूरो सचिव की जिम्मेदारी लेकर उन्होंने बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, हरियाणा और पंजाब में क्रांतिकारी आंदोलन का नेतृत्व किया। उसी समय पुरानी भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) और एमसीसीआई के बीच चली एकता वार्ता में उन्होंने अहम भूमिका निभाई। 2004 में दो पार्टियों बीच चली एकता वार्ता में उन्होंने अहम भूमिका निभाई। 2004 में दो पार्टियों के विलय के बाद गठित एकीकृत केन्द्रीय कमेटी और पोलिटब्यूरो में सदस्य बनकर उन्होंने पूर्वी रीजनल ब्यूरो (ई.आर.बी.) के अंतर्गत काम किया। पश्चिम बंगाल राज्य के आंदोलन पर प्रधान रूप से ध्यान केन्द्रित करते हुए वे ई.आर.बी. के प्रवक्ता के रूप में बने रहे।

पार्टी में उन्होंने विभिन्न पत्रिकाओं के संचालन और राजनीतिक शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रमुख भूमिका निभाई। 'क्रांति', 'एर्राजेंडा', 'जंग', 'प्रभात', 'वैनगॉर्ड' आदि पत्रिकाओं के संचालन में उनका योगदान रहा। पश्चिम बंगाल से प्रकाशित कई क्रांतिकारी पत्रिकाओं के पीछे उनका खासा योगदान रहा। इन पत्रिकाओं में उन्होंने कई सैद्धांतिक व राजनीतिक लेख लिखे थे। पार्टी के अंदर राजनीतिक शिक्षा के प्रसार के लिए बनी सब–कमेटी में सदस्य रहकर कॉमरेड कोटेश्वर ने पार्टी के कतारों को मार्क्सवाद–लेनिनवाद–माओवाद विचारधारा पर शिक्षित करने में अहम भूमिका निभाई। पार्टी के समूचे इतिहास में देखा जाए तो, क्रांतिकारी आंदोलन के विस्तार में, पार्टी के दस्तावेजों को समृद्ध बनाने में और आंदोलन को विकसित करने में उनकी भूमिका अविस्मरणीय रही। जनवरी 2007 में आयोजित पार्टी की एकता कांग्रेस – 9वीं कांग्रेस में उन्हें फिर से केन्द्रीय कमेटी सदस्य के रूप में चुन लिया गया और आखिर तक उन्होंने पोलिटब्यूरो व पूर्वी रीजनल ब्यूरो में सदस्य के तौर पर काम किया।

पश्चिम बंगाल में सामाजिक फासीवादी सीपीएम सरकार द्वारा लागू जन विरोधी व कॉर्पोरेट–परस्त नीतियों के खिलाफ 2007 से सिंगूर और नंदिग्राम में भड़क उठे जन आंदोलनों, खासकर पुलिसिया अत्याचारों के खिलाफ पश्चिम बंगाल के लालगढ़ इलाके में एक जबर्दस्त उफान के रूप में उठे जन विद्रोह को उन्होंने राजनीतिक मार्गदर्शन दिया जोकि काफी महत्वपूर्ण था। बंगाल की राज्य कमेटी और पार्टी के कतारों

(शेष पेज 34में...)

जुलई को सरकेनगुडा (दंतेवाड़ा) नरसंहार के विरोद में सफल हुआ सी.ओ.बी.बंद

दंण्डकारण्य के दंतेवाडा जिला को रसिलगुडा-सरकेनगुडा में केन्द्र-राज्य सरकारों ने मानव (सब्य) समाज के सभी नियमों का दरकिनार रख के सीआरपीएफ, कोब्रा, एसटीएफ, कोय कमांडो को साजिश के तहत उकसा कर 5 जून का शाम जनता ने आपस में जमीन से जुडी समस्या को चर्चा कर परिश्कार कर लेने जमा हुए थे। उस समुह को चारों ओर से घेर कर अंदा धुंद से किया फैरिंग में 19 आम जनता-ग्रामीणों ने (जगापरह) मैकापर ही दम तोड दिया और कई लोग घायल हुआ। मृतकों में दूसरी से लेकर नववी ता पढ़ई कर रहे मासूम नबंलिग बच्चे भी शामिल हैं। इस नर संहार में कई गाय, बईल भी मर गया। फिर भी राज्य गृह मंत्री ननकिराम कंवर ने माओवादियों को मद्दत करने वाला हर कोई माओवादी होता हैं कह कर इस नर संहार को निर्लज्ज़ा से सराहना किया।

इस सामूहिक हत्याकांड से, पहला 12 जून को सीआरपीएफ के इयरेकटर जनरल और छत्तीसगढ़ के डीजीपी अनिल नवानी और छत्तीसगढ़ में तैनात अर्ध सैनिक बलों का अधिकारियों के साथ बैटक करने का बाद पत्रकारों (बातचीत करत) को माओवादियों का सफाया के लिए नया रणनीती बनाने की सूचना दिया। पत्रकारों नें विवरण मांगने से बाद में आप लोगों को हमारा कर्यनीती समज में आजायेंगे कर के बात ठाल दिया। 28 जून रात की सामूहिक हत्याकांड के पत्रकारों ने ही नही आम जनताने भी षड़ यंत्र समजगया।

इस षड़ यंत्र के पीछे केन्द्र-राज्य सरकार के शासक वर्गों का लक्ष्य यहां हैं कि संघर्ष रथ इलाका के जनता में सामूहिक हत्याकांड, बलात्कार, अत्याचारों से भय वा दहशत का महोल पैदा कर जनता घर-जमीन छोड कर पलायन करने के लिए मजबूर करना हैं। केन्द्र-राज्य सरकारें और उनका अर्ध सैनिक बलों का इस निहल लोगों का बर्बरता पूर्वक सामूहिक हत्याकांड को छत्तीसगढ़-उड़िशा सीमावर्ती राज्य कमेटी ने खड़ी शब्दों में खंडन करती हैं। और दंण्डकारण्य कमेटी के व्दारा मृतक परिवारों के दुखः संवेदना प्रकट करती हैं। डीके एसजडसी ने इस हत्याकांड के खिलाफ 5 जूलई को दिया बंद में इस अंचल के लोगों को भी शामिल होने के लिए निवेदन किया। तो जनता ने मैनपूर इलाका में बंद को पूर्ण सफल बनाया। नुआपाड़ा, बीबीएम डिविजनों में आंशिक रुप से सफल बना के शासक वर्गों पर रोष व्यक्त किया। बीबीएम डिविजन के कुछ गांवों में जनता इन शहिदों को श्रध्दांजली अर्पित कर के विरोध प्रकट किया।

25 जुन को काला दिवस उपलक्ष्य में प्रस्तावित N.C.T.C के खिलाफ ग्रीन हंट दमन का बिरोद्ध में छत्तीसगढ़-उड़िशा सीमावर्ती इलाका में 24 घण्टा बन्द को सफल बनाओ !

प्यारे जनता !

आज से ३७ साल पहले 25-06-1975 को आधिरात में पुरा देशको जेल में बदल कर करीब ढेड साल अंधेंरा राज चलाया जबका प्रधानी इन्दीरा गान्धी ने ! 25-06-75 को इलहाबाद उच्च न्यायालय ने संसद का चुनाब मे राय बरेलि चुनाबी क्षेत्र से अपना पदका दुरपयोग करके बडे पयमाने पर धान्दलि करके चुन गइ इसिलिए इन्दीरा गान्धीं का चुनाब को अवैध करार दियाथा। तब देशका सभी तबका जनता ने दैनन्दिन आवश्यक चीजोंका मुल्य बृद्धी से तंग आचुकेथे। बिपक्ष ने इस मौका को इस्तेमाल करना शुरु कियाथा। इससे इन्दीरा गान्धीं सत्ता खोनेका अबद्र भाब से सत्तामें बने रहने केलिए क्रान्तिकारी यों सहित सभी विपक्ष नेताओं को जेलो में बन्दं करके बिरोध आबाज को दबानेकेलिए देशको अंधेंरे में ढकलते हुए आपातकाल घोषित किथी । भारत देस का इतिहास में काला दाग का रुपमें अकींत किया गया।

इन ३७ साल के बाद आज अगर आम जनता का नजरिया से देखाजाए तो स्थीति और ही बदतर हुआ है। जब तोडा बहुत सत्ता पक्ष, बिपक्ष का बिच में फरक हुआ करता था। आज इन दोनो के बिचमें फरक एकता में वदला। दोनों मिलके जनता पर दमन चलारहे है। कुछ दिन जेल में विताने वाला विपक्ष नेताओ ने जनता पार्टी गठित करके चुनाव में जनता का सहानुभूति को वोटो में बदलकर जीत के सत्ता पर काविज किए। सत्ता में आते ही कुर्च्चि का मिठास मिलते हि जनता पार्टी में कुर्च्चि के लिए रसाखसी सुरु हो के कई गुटोमें वंट गया। विपक्ष सत्ता पक्ष में बदल गई जनता और भी गरिब बन गई।

पश्चिम बंगाल, बिहा, झारखण्ड,उत्तर प्रदेश,आन्ध्रप्रदेश, सहित कई राज्यों में नव जनवादी क्रांति के तहत दलाल पूंजीपति, सामन्तवाद शासक गर्वों के खिलाफ खड़ा हुआ जनांदोलान को पुलिस का दम पर कुचल ने का कोशिशों के बावजूद भी पुन ;संगठित होके १९८० का दशक में जनांदोलान और मजबूत से उठे । इस आन्दोलन को केन्द्र राज्य सरकारों ने ग्रामीण इलाको में दहशत फैला के बड़े फैमाने पर गिरफ्तार करके जैलों में बन्द करना ,कार्यकर्ताओं को निहत्ते पकड़ कर क्रुर यातनाये दे कर झूठी मुठभेड़ों में हत्या किया गया ।

अपार खनिज, वन व जल सम्पदाओं से सम द्ध हमारे प्यारे देश को अंधाधुंध लूटने–खसोटने के लिए दलाल नौकरशाह पूंजीपति और साम्राज्यवादी होड़ लगाए हुए हैं। खासकर 2008 से, दुनिया भर में आर्थिक संकट गहराने की पृष्ठभूमि में भारत जैसे पिछड़े देशों में उपलब्ध प्राकृतिक सम्पदाओं और श्रमशक्ति को सस्ते में लूटने की कई साजिशें रच रहे हैं। यहां की दलाल सरकारों के साथ लाखों करोड़ रुपए के पूंजीनिवेश के एम.ओ.यू. कर, जल–जंगल–जमीन का विनाश कर जनता को बड़े पैमाने पर विस्थापित कर रहे हैं। जनता इसके खिलाफ संघर्षकर रही है। संघ रित जनता का भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) नेतृत्व कर रही है। उसका साथ दे रही है। यही वजह है कि माओवादी आंदोलन शोसक ासक वर्गों और उनकी सरकार की अगुवाई करने वाले सोनिया–मनमोहन सिंह–चिदम्बरम–प्रणब मुखर्जी–जयराम रमेश ासक गिरोह के लिए सबसे बड़ी बाधा बन गया। हालांकि वे इसे 'देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए सबसे बड़े खतरे' के रूप में प्रचारित कर रहे हैं ताकि जनता को गुमराह किया जा सके।

इस हमले के अंतर्गत साल भर पहले बस्तर में भारतीय सेना को उतार दिया गया। यह बस्तर या दण्डकारण्य तक सीमित मामला नहीं है। देशव्यापी क्रांतिकारी आंदोलन को कुचलना इस तैनाती का मकसद है। हालांकि वे 'प्रशिक्षण' की आड़ में सेना को तैनात कर रहे हैं ताकि ात्रु देशों के साथ युद्ध करने के लिए बनाई गई सेना को देश की जनता के खिलाफ उतारने पर उठ सकने वाले विरोध और प्रतिरोध से निपटा जा सके। छत्तीसगढ़ सरकार ने 'प्रशिक्षण' के लिए माड़ क्षेत्र में 750 वर्ग किलोमीटर का भूभाग सेना के हवाले करने का फैसला लिया। यह इस बात का उदाहरण है कि आदिवासी इलाकों में जमीन हस्तांतरण पर लागू प्रतिबंध तथा पांचवीं अनुसूची, पेसा आदि कानूनों का सरकारें खुद ही किस तरह उल्लंघन करती हैं। सेना जो फिलहाल

कोंडागांव–नारायणपुर के बीच 'प्रशिक्षण' ले रही है, की मंशा यह है कि धीरे–धीरे नारायणपुर कस्बे को पार कर माड़ के अंदरूनी गांवों पर कब्जा जमा लिया जाए। सेना के आला अधिकारी खुद 'प्रशिक्षण' के कार्यक्रमों का जायज़ा ले रहे हैं।

ासक वर्ग अपनी साम्राज्यवाद–परस्त नव उदार नीतियों के तहत लागू सभी विनाशकारी परियोजनाओं को 'विकास' के रूप में चित्रित कर प्रचारित करते हुए ऐसे तमाम लोगों पर 'विकास विरोधी' का ठप्पा लगा रहे हैं जो इसका विरोध करते हैं। खासकर वे माओवादियों को विकास विरोधी, हिंसावादी और आतंकवादी के रूप में चित्रित कर अपने कार्पोरेट मीडिया के जरिए बड़े पैमाने पर प्रचार युद्ध चला रहे हैं।

आपरेशन ग्रीन हंट' के नाम से पिछले ढाई सालों से देश की जनता पर, खासकर आदिवासियों पर बेहद अमानवीय हमला जारी है। 'मुठभेड़' हत्याएं, सामूहिक हत्याएं, यौन अत्याचार, यातनाएं, घरों को जलाना, फसलों की तबाही, लूटपाट, गिरफ्तारियां, 'लापता' करने की घटनाएंकृ आदि के जरिए पुलिस व अर्धसैनिक बल जनता पर टूट पड़ रहे हैं। उन्होंने पिछले ढाई सालों में अकेले दण्डकारण्य में ही 250 से ज्यादा आदिवासियों की हत्या कर दी। देश में, खासकर मध्य और पूर्वी हिस्सों में जारी माओवादी आंदोलन का जड़ से सफाया करना इस हमले का मकसद है।

हाली मई महिने में छत्तीसगढ़ ,उड़िशा के सीमावार्ती इलाका में 2000 से अधिक अर्द्धसैनिक बलों और दो राज्यों का विशेष पुलिस बलों ने मिल कर जिल्ला पुलिस अधिक्षाकों का प्रत्येक्ष नेतृत्व में हाल अधिकारियों ने रायपुर से सांचलन किया ।इस इलाका का स्कूल भवनों में कैम्प भिठा कर हप्ताह भर चलाया ,कुम्भिंग से जनता में जंगल को चपा चपा छान मार के हर गांव घरों का तलासी लेके जनता में गबराहट फैदा करके , तेन्दुपत्था का सिजन होने से भी जनता को जंगल में जाने से मना करके खमाई करने नहीं दिया । इस सीमा वार्ती इलाका में हिरा बाक्साइट ग्रापाईट जैसा अनमोल खदने है । इस संपत्ति को दुनिया मे सबसे बडा कंपनि डिबीर्स को और पोस्को, वेदांता जैसा कंपनियों को सबि कानूनों को ताकपेरकना हथों मे सोंपने केलिए छत्तिसगढ भाजापा रमन सिंह सरकार, उडिषा का नवीन पट्टनयक सरकारो ने तैयार बैठे है ।इस योजना के खिलाफ लड़ रहे जनता पर केन्द्र और राज्य सरकारे मिल कर दमन चला रही है। पिछले एक साल के अवदि में अकेला दरमबदंह इलाका में कई बार जनता को बेरहमी से पिटाई करके 45 लोगों को गिरफ्तार करके रायपुर,नुआपाड़ा जैलों में बंद करके परिवार लोगों को तंग कर रहे है। और 2010 अक्टबर से लेकर अभी तक इस सीमा वार्ती अंचल के विभिन्न जिलाओं में 20 लोगों को हत्या कियें है।

प्यारे लोगों व जनवाद पसंदो आपातकाल से भी कई गुणा ज्यादा दमन गिरफ्तार अत्याचार पुलिस हत्याएं दिन- ब - दिन बड़ के एक आम बात बन गई इस दमन का खिलाफ आवाज उठाओं और आन्दोलनरत जनता के प्रति मदत प्रकट करते हुए बन्दको सफल बनाओं ही जा रहे है।

* *आपरेशन ग्रीन हंट अभियान को बंद करों !*
* *जैलों में बंदी बनाये जनता को रिहा करों !*
* *प्रस्तावित N.C.T.C का विरोद्ध करों !*
* *साम्राज्यवाद परस्त नीतियों को विरोद्ध करों !*

छत्तीसगढ़ - उड़िशा सीमावार्ती राज्य कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

(...26पेज का शेष)

इसी पईकमाल की अंचल में 28 सितम्बर को हुई गिरफ्तारियों के विरोध में बर्तोडा पंचायती के 1500 लोग जा कर थाना को घेराव किया गया। पुलिस, प्रशासनिक अधिकारियों खडा कर निर्दोष लोगों को छोडने मांग किया गया।

बलांगीर जिला कप्रकोल ब्लाक में सितम्बर 22 को हुई गिरफ्तरियां, गांओं को घेर कर लोगों पर गोलियां चला करस मारपीट से घायल करने के विरोध में 23 तारीख कप्राकोल ब्लाक में अंदरुनी गांवों से 3000 लोग पहुंच कर थाना को घेरा किया गया। थाना पुलिस हम कुछ नही जानते कहरहे थे। एसपी हरो कृष्णा का बयान अखबर को दिया 15 माओवादी बोलेरो में आकर जनबहल गांव में चंपेश्वर राजपूत को लेगया करके झूटा बयान भी दिया। इस से लोगों में गुस्सा बढ़ गया कप्राकोल ब्लाक बंद भी किये हैं। लोगों पर गोली चलाकर घायल करने का भी मीडिया के सामने जनता दिखाया। इस तरहा दोनों ब्लाकों में गिरफ्तार हुई निर्दोष लोगों को छोडने, दोषी पुलिस पर कारवाई करने की लोग मांग किया।

डिविजन में बढ़ ते इस पुलिस दमन के विरोध में नवम्बर 5 को डिविजन बंद का भी आयोजन किये गये। यह बंद सफल रहा। ✯

विस्तापन के विरोध में जन संघर्ष तेज करो!

प्रिय जनता!

उडिशा-छत्तीसगढ़ सीमा में स्थित हमारी इस राज्य कमेटी के सीमांचल में अत्यंत पिछडी और गरीब लोग रहते हैं। कई मूलभूत समस्या ओं से यहा के लोग कटीन जीवन जीने मजबूर हैं। यहा के लोगों के सामने सभी समस्या ओं के सात सात विस्थापन भी एक बढ़ी समस्या हैं। उड़िशा, छत्तीसगढ़ राज्यों में नवीन, रमनक की सरकारे साम्राज्यवादी-दलाल नौकर शाह पूंजिपतियों का शोषण जारी रखने उदारीकरण, निजीकरण, विश्वव्यापीकरण के तहत केंद्र और यह राज्य सरकार देश को बेच रहे हैं, बर्बाद कर रही हैं। इसी दिशा में कदम बढ़ाते हुए उडिशा के बि.जे.डी. सरकार राज्य को बरबाद करने में लगे हैं। छत्तीसगढ़ सरकार भी इसी दिशा में काम कर रही हैं। सैकडों खदान, थर्मलप्राजेक्ट, बढ़े बांद, अभियारोण्य, एक्सप्रेस हैं वे, नई रेल लैन निर्माण, सैनिस प्रशिक्षण शिबिर, जैसे परियोजना ओं को अमल करने देशी, विदेशी बढ़े बढ़े कंपनीयों से सेकडों एम.ओ.यू. किये हुए हैं। यह प्रक्रिया आज भी जारी हैं। इस समस्या के कारण अंचल में हजारों लाखों लोग विस्थापित होने का खतरा बनी हुई हैं। उडिशा राज्य में ही 1951 से 1990 तक 5 लाख लोग विस्थापित हुए हैं। सरकार अभि 146 बड़े समजौता कंपनियों से किये हैं। इस से और 5 लाख से अधिक लोग विस्थापित होने की खतरा हैं। छत्तीसगढ़ रमन सरकार भी इस तरहा की सौदे बजी में पीछे नही हैं। आज की स्थिती में यह विस्थापितों की संख्या और बढ़ेगी।

बरगढ़ जिले में गंधमर्दन बाक्साइट खदान खोलने राज्य सरकार का लगात्तार कोशीस जारी हैं। बढ़े बढ़े कंपनीया मोके की फायदा उटाने देख रही हैं। इस खदान को लोग अंभीतक संघर्ष कर के रोक रखा हैं। लगबग 80 कि.मी. लम्बा यह पहाडी इलाका इस क्षेत्र में पर्यावरण को बचाती हैं। हजारों परिवार इस जंगल पर निरबर रहते हैं। यह खदान कुलेगा तो प्रदूषण बढ़ेगा सालभर बहने वाली झरनें सूख जाएगा। इस पाहडी जंगल में कई किस्म के वन औषद नष्ट होगा। इस क्षेत्र के 2 लाख 50 हजार से ज्यादा लोग प्रभावित होंगे। लांजिगढ़ में वेदांता कंपनी को आई बाक्साइट की संकट को हल करने यहा की खदान फिर से खोलने की साजीश चल रही हैं।

गंधमर्दन से निकालाने वाली बाक्सईट से 'नल्को' कंपनी टोंकापानी में चार गांवों की 1100 एकड जमीन में खारकाना बनाना था लोगों का प्रतिरोध से रुखा हैं। इस के साथ ही बर्तिया, पत्रपाली, बुडाछापर, लहडोंगरी में एक बड़ा बांध निर्मण करने सर्वे किया गया हैं। यदी यह बाध बनेगा ते रेंगाली पंचायत के अधिकांश गांव डुबान क्षेत्र में आजाएगा।

गंधमर्दन खदान को देखते हुए यहा के बाक्सईट को लेजाने लखना, हरिशंकर से बलांगीर रेल लाइन निर्माण के लिए भी सर्वे होगया हैं। इस रेल पटरी निर्माण के लिए कई गांव और जमीन लोगों का जाऐगा और हजारों पेड कट जाएगा।

गंधमर्दन खदान के लिए पानी का उपयोग और बहु राष्ट्रीय कंपनी यों का उपयोग के लिए लोयर सुक्तेल डेम बनाने कोशीश चल रहे हैं। यह डेम से 4,564! हेक्टार जमीन 2009 की जनगणना के अनुसार 9,212 परिवार, 27,636 लोग प्रभावित होंगे, आज की तारीक में यह संख्या और बढ़ेगा। पूजारपाली डेम बनाने का प्रयास भी जारी हैं। इस डेम बनने से 30 गांवों का 50 हजार एकड डूब जायेगा। इन डेमों का पानी किसानों का मिलेगा किसानों को तकदीर बदलेगा कर के बलांगीर के कुछ संघटन के लोग डेम निर्माण कर्य तेजीसे पूरा करने की मंग लेकर अंदोलन कर रहे हैं। लेकिन वे लोग नही जानते हैं शोषक वर्गों की मनशह। बडे डेमों से किसानों को कितना पानी मिल रहा हैं? हीराकुंद बांद से कितना पानी लोगों को मिलता हैं? लोयर सुक्तेल डेम निर्माण से बडे ठेकेदार, नेता लोगों व्यापारियों को फायदा मिलेगा, पीढ़ित जनता को कोई फायदा नही हैं। इस डेम से विस्थापित होने वाले लोग डटकर संघर्ष जारी रखे हुए हैं। यहा सरकार डेम समर्तक, विरोधियों के भीच जगडा पैदा कर तमाशा देख रही हैं।

टिटलागढ़ में सहारा बिजली प्लांट निर्माण किया जा रहा हैं। 9 गांओं का जमीन जाएगा हम सभी लोग जानते हैं टिटलागढ़ में गर्मी में $49^0,50^0$ तक रहता हैं, यह बिजली प्लांट से और गर्मी बड़ेगी लोगों को जीना मुश्किल होगा। जिन गावों में प्लांट लगा रहे हैं उनका जमीन भी चला जाएगा। लोगों इस प्लांट का विरोध कर रहे हैं। तुरेकेला ब्लाक में सत्ताडंडी पाहडों में खदान खोलने की कंपनीयां लागी हुई हैं। इस से यह पाहड के चारों ओर 22 गांव प्रभावित होंगी ।

सुरमा खदान बलांगीर-बरगढ़ जिलों में अवैद तरीका से अबतक 100-150 से ज्यादा (जहा तहा कई सौ डेढ़सौ छौडा, गहरा तालाब जैसे गड्डें) खुदाई कर एसी छोड दिया गया हैं। पता नही इन खदानों से कितना जमीन, कितना जंगल बर्बाद हुआ होगा। इस खदान का धूल (जो हवा में फैले हैं), इसका गंदी पानी, हवा से यहा की लोगों पर जमीन, जंगल जीवन पर भी बुरी असर पढ़ी हैं।

टिटलागढ़ से रायपूर जाने वाली रेल लाइन को डबल लैन बनाने का प्रक्रिया अरंम्ब हुआ हैं। 203 कि.मी.इस लाइन बिचा रहे हैं। छत्तीसगढ़ के सराइपाली से बरगढ़ के लिए नई रेल लाइन निर्माण करने का योजना भी बना रहे हैं।

छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिला तो जिंदल कंपनी मानो टेका लिया हैं। बढ़ी संख्या में लोगों का जमीन सस्ते धाम में खरीद रखा हैं। यहां के कोइला खदानों में माफिओं का कुली लूट को सभी ने जानते ही हैं। महासमुन्द और रायगढ़ बार्डर में गुमदाह भैन्स अभियारण्य के नाम से उस पाहडी अंचल से 26 गांवों को हटाने का खतरा हैं। इस का लोग विरोध कर रहे हैं।

छत्तीसगढ़ के सरायपाली, उड़िशा के मेलछामुण्डा में सैनिक प्रशिक्षण शिबिर निर्माण करने का राज्य सरकारों का प्रयास जारी हैं।

झारबंद ब्लाक में 5 डेम निर्माण से लगबग 400 लोग विस्थापित हुए हैं। जमीन और मुआवजा के लिए लोग संघर्ष कर रहे हैं। लेकिन आजतक मुआवजा, जमीन लोगों को नही मिली हैं। मिली कुछ पैसा दलाल लोग खा रहे हैं। कुछ लोगों को जमीन दिखायागया। लेकिन उस जमीन पुराना मालिक ही कमारहा हैं। सैंतला (टिटलागढ़) में जो गोला बारुद फ्याक्टरी के कारण से विस्तपित हुए लोगों को आज तक मुअवजा नही मिली हैं। और आदिवासी के नाम पर गैर आदिवासी लोगों के नाम पर फर्जी दस्तावेज से नौकरिया दिया गया। विस्तापित आदिवासियों को नौकरिया भी नही मिला। लातूर के बगल में एक सिमेन्ट फैक्टरी खोलने की तय्यारी चल रहा हैं। इस से आसपास के जंगल नुकसान होगा।

धमतरी जिला में सीतानदी, गरियबन्द में उदंती वन भैन्स अभियारण्य घोषणा कर यह स्थित कई गांवों को हटाने की योजना बनाई छत्तीसगढ़ सरकार। नुआपाडा जिला में सुनाबेडा टाइगर प्राजेक्ट घोषित कर यहा से भी कई गांओं को हटाना था। हमारी पार्टी के नेतृत्व में लोग संघर्ष करने से वन विभाग के अधिकारी भाग गया। अभी लोगों को राहत मिला। गरियाबन्द जिला देवभोग में स्थित फैलि खण्ड हीरा खदान पर राज्य सरकार, बडे कंपनीयों के निगाहे हैं। इन तीनों जिलाओं में गंगरेल, सीतानदी, सीकासर, पथोर, टिकाली बड़े डेमें निर्माण किया गया। इन डेमों के कारण विस्थापित लोगों को जमीन, मुआवजा नही मिली जो कुछ पैसा मिली मुआवजा मांग करने बनी कमेटियों के नेता दलाल बन कर लाखों करोडों पैसा कमाया।

पश्चिम उड़िशा में हीराकुन्द बड़े बांद महानदी के दोनों ओर स्थित क्षेत्रों में दलाल पूंजिपतियों का बड़े कारखाना, खदाने, थर्मल प्रोजेक्ट, स्टील प्लांट से बहुते लोग विस्थापित हुए हैं। इस अंचल में कभी नही देखीगई भूकंप इसी वर्ष (2012)अगस्त माह में आई हैं। एख अध्यायन के अनुसार पश्चिम उड़िशा मरुभूमी में तब्दील होगी, यह प्रक्रिया शुरु होने की खरें हम सुन रहे हैं। इस से लगता हैं आने वाली भविष्य भयानक होगी।

उपरोक्त सभी जगह विस्थापन के विरोध में संघर्ष रत लोगों से हमारा अनुरोध हैं की भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) आप के सात हैं। संघर्ष तेज करो अपना हक अधिकार हासिल करो। देश बर में विस्थापन के विरोध में संघर्ष रत लोगों के सात कंदे पे कंदा मिलाकर जन संघर्ष जुझारु रुप से तेज करने से ही जल जंगल जमीन पर पीढ़ित जनता का हक अधिकार हासिल होगा। इस जन संघर्ष को रोखने के लिए केंद्र-राज्य सरकारोंने लोगों पर दमन कर यहा के जल जंगल जमीन और प्राकृतिक खनिज संसादान लूटने का कोशीश तेज कर रहे हैं। हजारों लाखों लोग एकजुट होकर जन संघर्ष को तेज करेंगे इन शोषक शासक वर्गों का जन विरोधी नीती को परास्त करेंगे। हमारे अंचल में आनेवाले साम्राज्यवादी, बढ़े दलाल पूंजिपतियों को कंपनीयों की मार भगाएंगे।

- विस्थापन के विरोध में जन संघर्ष तेज करों !
- जल जंगल जमीन, खनिज संसादनों को बचाने संघर्ष तेज करो!
- साम्राज्यवादि विदेशी कंपनीयों को मार भगओ !
- नवीन पटनायक रमन सिंह राज्य को साम्राज्य वादियों के हातों बेचने का विरोध करो !
- साम्राज्यवाद मुर्दाबाद !
- ग्रीनहन्ट अभियान को हरादो !

छत्तीसगढ़-उड़िशा सीमावर्ती राज्य कमेटी
भारत की कम्यूनिस्ट पार्टी (माओवादी)

1जुलाई,2012

दलित आदिवासी जनता के ऊपर उच्च वर्गों का अत्याचारों का विरोध करो !

प्रिय जनता !

हमारे देश की सामाजिक स्थिति को हम देखने से अर्द्ध औपनिवेशिक, अर्द्ध सामन्तवादी समाज है । देश के ग्रामीण अंचलों में सामंतवादियों का दबदबा और शोषण जारी है। यह सामंतवादी हिन्दू धर्मशास्त्र,मनुवादी चातुर वर्ण व्यवस्ता पर, जातिवाद पर आधार होकर सांप्रधाइकता, अंध विश्वस, पितृसत्ता, कुसंस्कार से घूसकोरी महजनी शोषण जारी रखे हुए है। यहां के सरकारें, पुलीस इनका संरक्षण और सुरक्षा प्रधान कर रहे है। क्यों की इन्ही वर्गों से यह सरकारे बनी है। फिर भी यह सामंति लोग गांवों में अपना सुरक्षा के लिए नीजि सेना और गुंडे गिरोह भी संचलन कर रहे है। इन गुंडा ओं को पीढित जनता पर उपयोग कर रहे है। यह शोषक वर्ग बर्बर अत्याचार, जुल्म चलाते है। अक्सर नरसंहार, बलात्कार के जारिये गरिबों और महिलाओं पर दमन करते है. शोषण करते है। इस तरीका से चरम प्रतिक्रियावादी और गांव में साम्राज्यवादियों का सामाजिक स्तम्ब के रूप में उपयोग हो रहे है।

इस तरीका से ऊपर बताये सामंति शोषण हमारे डिविजन में भी कुल कर भयानक तरीका से जारी है। यहा दलित, आदिवासी, अल्प संख्याक किसानों पर इन सामंति शोषक वर्गो ने अपना मन चाहे अत्याचार कर रहे है। देश में तो अंकड़े बता रही है। दलितों पर हर 18 मिनट में एक अत्याचार हो रही है। ओड़िशा राज्य या हमारे पश्चिम ओड़िशा के इस डिविजन में भी हर दिन इस तरह के अत्याचारों से लोग परेशान है। दलित और आदिवासी इसका शिकार हो रहे है। खासकर इस वर्ष में ही हम देखें तों मार्च 22 तारिक को बलांगीर जिला लातूर गांव में 50 दलित लोगों का घर जला दिया गया। यहा के मारवाड़ी व्यपारी संघ अध्यक्ष और पश्चिम ओड़िशा में ही दो नम्बर का बीयर माफिया घासी राम अगरवाल योजनाबद्ध तरीका से सेंकड़ों लोगों को दारू पिलाकर,सेकड़ों लीटर पेट्रोल देकर जला दिया गया। पूरा घर,सम्पति जलते तक रात तक कोई सरकारी अधिकारी, पुलीस नही आया। पुलीस तो माओवादियों से फैरिग होने की कहानी बनाया। यहा सभ झुठा है। आज तक लोगों को न्यय नही मिला और दोषियों को कोई सजा नही मिला।

बलांगीर में ही बेन्देर भरवामुण्डा गांव में इसी वर्ष रवी भाग का 15 बरस की बेटी का अपहरन हुई । कुछ गुंडा ओं द्वारा उच वर्गों के मार्गदर्शन में यहा अपहरन किया गया। कई दिनों इस लडकी के साथ चेड़ चाड़ बलात्कार किया गया । इतना ही नही कुछ वर्षो से भरवामुण्डा के पारा कुईमुण्डा रवी भाग के साथ दलित आदिवासियों के 8 परिवार रहते है इस जगहा से इन परिवारों को भगा कर इस जगहा में R.C.D.C (एन.जी.ओ. संस्था)द्वारा औषदी पौधा ओं का बगीचा बनाना है। टिकेन्द्रजाल जो है R.C.D.C के साथ मिलकर इस 8 परिवार वालों को डर धमकाकर भगाने लिए भरवामुण्डा के मुख्या ओं (चत्तर परिवार) को अक्सर हमले करवा रहे है। कभी घर तोड़ते है, कभी फसलों को बरबाद करते हैं। अभी लडिकि अपहरन कांड भी इन्ही लोग योजनाबद्द तरीके से करवाये है। इन दोषियों पर कोई कारवाई नही हुई, लेकिन उल्टा पुलीस अधिकारी एस.डि.ओ.पि. एल.एन पण्डा पटनागढ़ का डाक्टर मिश्रा से फर्जी सर्टीफिकेट तैयार करवाया और लडकी का आचरन गलत बताया। लडकी व्यबीचारी काम करती कहकर बताया। भरवमुण्डा गांव के इस घटना में दोषि हरी कृष्णा, तपन, उमाकांत छतर बचगए।अपहरन का शिकार हुई लडकी पिता और चाचा को पुलीस अभी जेल में रखे हुए है। इससे पता चलता है व्यवस्था में न्याय किसको मिलती है।

इसी बलांगीर में ही कपराकोल ब्लाक में डण्डा मुण्डा गाँव में इसी वर्ष आदिवासी और दलितों के 40 घरों को जिला सब कलेक्टर, तहसीलदार, बी.डी.ओ, कपराकोल थानेदार और डण्डा मुण्डा गाँव के सुरु मास्टर, निरोध, मधु साहु गाँव के जमीनदार और गांधीवादी नेता शिक्षक भी है इन सभी लोगों का प्रत्येक्ष मार्गदर्शन में बुलडोजरों से बिना चेतावनी के दिनदहड़े घरों को गिरा दिया गया। इन 40 परिवारों को विस्थापन कर दिया गया। आज भी लोग तड़प रहे है। क्यों इन गरिब परिवारों को गांव से जबरन हटा दिया गया। जिस जगह से इन लोगों को हटा दिया गया उस स्थान पर पुलीस कैम्प लगाना है। इस लिए यह तैयारीयां गोपनिया तरीका से कर रहे है। यहा के प्राकृतिक संसाधन लूटने आने वाले बहुराष्ट्रीय, दलाल कम्पनियों का यहां के दलालों का सुरक्षा के लिए ही यह पुलीस को तैनात हो रही हैं। देखीए शोषक वर्गों का फायदे के लिए यहा के दलित आदिवासियों का बली चढा रहे है।

इसी जिले में कुछ वर्ष पहले महुलपाटी गांव के गौतिया,

गुंडा, स्मगलर दिलीप साहू एक दलित युवती का रेप कर हत्या किया। हलन भाटा गांव में भी एक दलित युवती कि हत्या किया गया। अमबहली गांव में 4 माह पहले एक दलित लडका का हत्या हुआ। बरगढ़ जिला में ग्राम सोहेला में दो दलित महिलाओं को जिन्दा जला कर हत्या किया गया। पदमपूर के पास आर.एस.एस.का गुंडा ओं ने रजनी नाम के युवती का हत्या किया गया । पैकमल में विधायक विजयरंजन सिहं भरया का गुण्डाओं ने एक दलित युवती की बलात्कार किया गया। ग्राम मांडोसिल के जमीनदार करिम द्वारा एक आदिवासी लडका को हत्या किया। ग्राम डुडकी जरन में एक तपन खन स्मग्लर ने अवैध लकड़ी कटाई का विरोध करने से भरवामुण्डा गांव का बण्डु मांझि को हत्या किया। नुआपाड़ा जिला के राजा करयार क्षेत्र के खेमानियाल उनके गुंडा ओं द्वारा कपराकोल अंचल में एक युवती को सामूहिक बलात्कार करके हत्या किया गया।

इस डिविजन के अंचलों में कई परियोजनाओं के चलते हजारों परिवार के लाखों एकड़ जमीन से लाकों लोगों को विस्थापित करने का साजिश चल रहे है। इस विस्थापन का शिकार होने वालों में सबसे ज्यादा इन्ही दलित, आदिवासी लोग है। इसके अलावा हर दिन छुआ-छुत, जाती भेदभाव गाली गलोज सामाजिक कार्यों से दूर रखना, बंद्धूआ मजदूर बना कर हीन दृष्टी से देख रहे है। कपराकोल ब्लाक मालपाड़ा कालेज से आदिवासी होने के कारण सन बांझीपाली गांव के छात्र को हटा कर उच्च वर्ग के छात्रा को बर्ती किया गया इस तरीका से स्कूल, कालेज नौकरियों में जाती भेदभाव से हटाया जा रहा है।

बरगढ़ जिला में शिक्षक पदों के लिए सेलेक्शन हुए 200 लोगों को जिला कलेक्टर बाबुग्राही मिश्रा इसलिए रोक दिया, ये लोग दलित है इस अंचल में दलितों को चुनाव में जितने से रोक लगा रहे हैं क्यों कि दलित लोग जितने से ओ सीट अपमान होती है। इस अंचल से हजारों दलित आदिवासी गरिब परिवार लाखों लोग जिविका के लिए दादन जाते है, इन लोगों का जमीन जमीनदार, मारवाड़ी, महजन लोग छीन ने से बन्धुआ मजदूर के रुप में इनका मजबूर होकर शोषण शिकार हो रहे है। उच वर्गों के सामंती लोग इस तरह के यह के गरिब जनता का तमाम समस्य का हल न होने का कारण ही यहा की किसान अत्माहत्या कर रहे हैं।अत्याचार क्यों कर रहे है यहा सोंच ने की बात है। क्यों कि दलित और आदिवासी जनता इतना शोषण, दबाव के बावजूद शिक्षित हो रहे है जाति भेदभाव का विरोध कर रहे हैं, इस तरहा उन में बढ़ते चेताना से उनके ऊपर यह अत्याचार हो रहे है। अत्याचार जुल्म,अन्याय का विरोध करने लगे है। इसी कारण इन लोगों पर उपरोक्त घटनाओं को देखना चाहिए ।

इस लिए हमरा डिवीजनल कमेटी सभी वर्ग के पिड़ित जनता किसान, मजदूर ,छात्र,बुद्धिजीवी, समाज सेवी जनवादी पसंद लोगों से आह्वान करती है। उच्च वर्गों के दोषी सामंती लोगों को तत्काल हिरासत में लेकर दलित,आदिवासियों पर अत्याचार नीरोधक कानुन के तहत कडी सजा देने और पीढ़ित दलित, आदिवासी जनता को न्याय देने का मांग करों। इस बुनियादी मुद्दों जनवादी हकों को देने की मांग करो। अत्याचार करने वाले इन उच्च वर्गों के दोशियों को दलित, आदिवासियों पर अत्याचार निरोधक कान्न के तहत तुरंत गिरफ्तार कर फास्ट ट्राक कोर्ट से जल्द से जल्द सजा देनेकी मांग करो।

* दिलत, आदिवासी जनता पर उच्च वर्गों का अत्याचारों का विरोध करो !
* उच्च वर्गों की दोषियों को सजा दो !
* यहा की पीढ़ित जनता का बुनियादी समस्या ओं को हल करने संघर्ष तेज करो !
* जाति भेद भाव, चुआ चूत मिटा दो !
* जनवादी हक, अधिकार के लिए संघर्ष तेज करो !
* नवजनवादी क्रांती को सफल करने की राह में एकजुट होजावो!

बलांगीर-बरगढ़-महासमुंद डिविजनल कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

DATE: 25 SEP-2012

''कोई भी राष्ट्रीयता या कोई वर्ग, साहस के साथ तुफानों का डटकर सामना न करके तथा अपने हिस्से के बलिदान न देकर, कभी अपनी मुक्ति नहीं पा सकेगा। हमारी पाटी को तथा पार्टी सदस्यों को अपने अकुंठित दीआ, साहस, पहस तथा त्याग द्वारा आदर्शवाद व अग्रगामी भूमिका निर्मान चाहिए।''

- कामरेड चारु मजुमदार

सिध्दांत लेख

उदारतावाद का विरोध करो!

7 सितम्बर 1937 - कॉ. माओ

(कामरेड माओ ने 1937 में चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी में उदारवाद पनप कर पार्टी काम काज में बाधा बनता देख कर, उसे तुरंत सुधारने के लिए उदारवाद व मनोगतवाद को सैध्दांतिक रुप से विश्लेषन कर के, उदारवाद दुश्मन को किस तरहा मद्द करने को हमे समजाया। अपना पार्टी 9 वी एकता कांग्रेस 2011 में संपन्न हुई डीके प्लीनम ने भी पार्टी में उदारवाद का खतरा को चिन्हित कर के सुधारने का दिशा निर्देश दिया। यहां हमारा भीच में और आंदोलन को आगे लेजाने में किस तरहा आढ़ आ रहे हैं। समज के सुधार कर लेने में इसे ध्यानपूर्वक और समिस्टी रुप से अध्यायन करने (पाठकों को) में मदत होगा करके - अपना राज्य कमेटी)

हम सक्रिय विचारधारात्मक संघर्ष का समर्थन करते हैं क्यों कि यह एक ऐसा हथियार हैं जो हमारे संघर्ष के हित में पार्टी की एकता और क्रांतिकारी संगठनों की एकता की गारन्टी कर देता हैं। हर कम्युनिस्ट और क्रांतिकारी को चाहिए कि वह इस हथियार का उपयोग करे।

लेकिन उदारतावाद विचारधारत्मक संघर्ष से इनकार करता हैं और सिध्दान्तहीन शान्ति का समर्थन करता हैं, इस तरह यह एक सड़े-गले, अधकचरे रुख को जन्म देता हैं और पार्टी व क्रान्तिकारी संगठनों की कुछ इकाइयों और व्यक्तियों को राजनीतिक पतन की ओर ले जाता हैं।

उदारतावाद विभिन्न रुपों में सामने आता हैं।

यह मालूम होते हुए भी कि सम्बन्धित व्यक्ति स्पष्टतः गलत हैं, लेकिन चुंकि वह पुरानी जान-पहचान का हैं, एक ही इलाके का हैं, स्कूली दोस्त हैं, घनिष्ठ मित्र हैं, प्रियजन हैं, पुराना सहकर्मी हैं या पहले मातहत रह चुका हैं, इसलिए उससे सिध्दान्त के आधार पर तर्क न करना, बल्कि शान्ति और मित्रता बनाए रखने के लिए मामले को घिसटने देना। या फिर मामले को महज ऊपरी तौर पर छू देना, उसका पूरी तरह समाधान न करना जिस से कि अच्छे सम्बन्ध बने रहें। नतीजे के तौर पर संगठन तथा सम्बन्धित व्यक्ति दोनों को नुकसान पहुंचाना। यह पहली किस्म का उदारतावाद हैं।

संगठन के सामने सक्रिय रुप से अपने सुझाव पेश न करके एकांत में गैर-जिम्मेदारी के साथ आलोचना करना। लोगों के मुंह पर तो कुछ न कहना लेकिन पीठ पीछे बुराई करना, या सभा में तो चुप्पी साधे रहना लेकिन बाद में अनाप-शनाप बकना। सामूहिक जीवन के सिध्दान्तों को कतई नजरअन्दाज करते हुए खुद अपनी मर्जी के मुताबिक चलना। यह दुसरी किस्म का उदारतावाद हैं।

किसी बात से अगर अपना सीधा ताल्लुक न हो, तो फिर उसकी तरफ से बिलकुल उदासीन हो जाना; यह अच्छी तरह जानते हुए कि क्या गलत हैं, उस बारे में कम से कम बोलना; दुनियादारी से काम लेना और अपनी चमड़ी बचाने की कोशिश करना तथा सिर्फ यह कोशिश करते रहना कि कहीं इलजाम अपने सर पर न आ जाए। यह तीसरी किस्म का उदारतावाद हैं।

आदेशों का पालन न करना बल्कि खुद अपनी राय को सर्वोपरि रखना। संगठन से अपने प्रति विशेष व्यवहार की मांग करना, पर उसके अनुशासन को मानने से इनकार करना। यह चौथी किस्म का उदारतावाद हैं।

एकता बढ़ाने, प्रगति करने या काम सुचारु रुप से चलाने के उद्देश्य से गलत विचारों के विरुध्द संघर्ष या वाद-विवाद करने के बजाय व्यक्तिगत आक्षेप करना, झगड़ा मोल लेना, व्यक्तिगत शिकवे-शिकायतों को सामने लाना या बदला लेना। यह पांचवी किस्म का उदारतावाद हैं।

गलत विचारों को सुनकर भी उनका विरोध न करना औ- यहां तक आगे बढ़ जाना कि क्रांति-विरोधी बातों को सुनकर भी उनके बारे में नेतृत्व को खबर तक न देना, बल्कि उन्हें चुपचाप बरदाश्त कर लेना, मानो कुछ हुआ ही न हो। यह छठी किस्म का उदारतावाद हैं।

जनता के बीच रहकर भी प्रचार और आन्दोलन न करना, अथवा भाषण न देना या जांच-पड़ताल और पूछताछ न करना, बल्कि जनता से कोई वास्ता ही न रखना, उसकी सुख-सुविधाओं की तरफ कतई ध्यान न देना; यह भूल जाना कि वह एक कम्युनिस्ट हैं और इस तरह व्यवहार करना मानो वह कोई मामुली सा गैर कम्युनिस्ट हो। यह सातवी किस्म का उदारवाद हैं।

यह देखकर भी कि कोई जनता के हितों को नुकसान पहुंचा रहा हैं, गुस्से से बात करना, ऐसे आदमी को मना न करना या न रोकना, अथवा उसे न समझा-बुझाना, बल्कि उसे यह सब करने

देना। यह आठवीं किस्म का उदारतावाद हैं।

बिना किसी निश्चित योजना या निर्देशन के बेमन से काम करना,... लापरवाही से किसी न किसी तरह अपनी ड्यूटी पूरी करते जाना और जैसे-तैसे दिन बिता देना- ''जब तक मैं बौध्द भिक्षु हूं, घंटी बजाता रहूंगा।'' यह नवीं किस्म का उदारतावाद हैं।

अपने बारे में ऐसा समझना कि मैने क्रान्ति के लिए भारी योगदान किया हैं, बहुत तगरबेकार होने की शेखी बघारना, बड़े काम करने के अयोग्य होना मगर फिर भी छोटे कामों को हिकारत की नजर से देखना, काम के प्रति लापरवाह होना और अध्ययन में ढील आने देना। यह दसवीं किस्म का उदारतावाद हैं।

अपनी गलतियों को जानते हुए भी उन्हें सुधारने का प्रयास न करना और खुद अपने प्रति उदार दुष्टिकोण अपनाना। यह ग्यारहवीं किस्म का उदारतावाद हैं।

हम उदारतावाद के और भी अनेक रुप गिना सकते हैं। लेकिन ये ग्यारह मुख्य हैं।

ये सब उदारतावाद के ही रुप हैं।

क्रांतिकारी संगठनों के लिए उदारतावाद अत्यन्त हानिकारक होता हैं। उदारतावाद एक ऐसा घुन हैं जो एकता को खा जाता हैं, भाईचारे को कमजोर बना देता हैं, काम में निष्क्रियता ला देता हैं और मतभेद पैदा कर देता हैं। यह क्रांन्तिकारी पंतो को ठोस संगठन व कठोर अनुशासन से वंचित कर देता हैं, नीतियों को पूर्णतया लागू होने से रोक देता हैं और पार्टी के नेतृत्व में चलने वाली जनता को पार्टी-संगठनों से अलग कर देता हैं। यह एक हद दर्ज की बुरी प्रवृत्ति हैं।

उदारतावाद का जन्म निम्न-पूंजीपति वर्ग की स्वार्थपरता से होता हैं। यह व्यक्तिगत हितों को सर्वोपरि रखता हैं और क्रांति के हितों की दूसरा स्थान देता हैं, और यह स्थिति विचारधारात्मक, राजनीतिक व संगठनात्मक उदारतावाद को उत्पन्न कर देती हैं।

उदारतावादी लोग मार्क्सवाद के सिध्दान्तों को महज खोखले जड़सूत्रों के रुप में देखते हैं। वे मार्क्सवाद को स्वीकार तो करते हैं लेकिन उस पर अमल करने या पूर्णतया अमल करने के लिए तैयार नहीं होते। वे अपने उदारतावाद को हटाकर मार्क्सवाद को अपनाने के लिए तैयार नही होते। ऐसे लोगों के पास मार्क्सवाद होता तो हैं, किन्तु साथ ही साथ उनके पास उदारतावाद भी होता हैं - वे बातें तो मार्क्सवाद की करते हैं पर अमल उदारवाद लागू करते हैं; वे दूसरों पर तो मार्क्सवाद लागू करते हैं, और खुद अपने लिए उदारतावाद बरतते हैं। उनके झोले में दोनों ही तरह का माल रहता हैं, जहा जैसा मौका देखा वहा उस तरह का माल भिड़ा दिया। कुछ लोगों का दिमाग इसी तरह काम करता हैं।

उदारतावाद अवसरवाद का ही एक रुप हैं और मार्क्सवाद का उससे बुनियादी विरोध हैं। उसका स्वरुप नकारात्मक हैं और वस्तुगत रुप में वह शत्रु के लिए सहायक बन जाता हैं; यही कारण हैं कि शत्रु हमारे बीच उदारतावाद के बने रहने का स्वागत करता हैं। जब उसका स्वरुप इस तरह का हैं, तो फिर क्रांतिकारी पांतों में उसे कोई जगह नही मिलनी चाहिए।

उदारतावाद पर, जो एक नकारात्मक भावना हैं, विजय पाने के लिए हमें मार्क्सवाद का, जो एक सकारात्मक भावना हैं, इस्तेमाल करना चाहिए। एक कम्युनिस्ट का हृदय विशाल होना चाहिए और उसे निष्ठावान व सक्रिय होना चाहिए, क्रांति के हितों को उसे अपने प्राणों से भी ज्यादा मूल्यवान समझना चाहिए और अपने व्यक्तिगत हितों को क्रांति के हितों के मातहत रखना चाहिए; उसे हर जगह और हमेशा सही सिध्दान्तों पर डटे रहना चाहिए और सभी गलत विचारों और कामों के विरुध्द अथक संघर्ष चलाना चाहिए ताकि पार्टी की सामूहिक जिन्दगी और अधिक ठोस बने तथा पार्टी और जन-समुदाय के बीच की कड़ियां और अधिक मजबूत हों; उसे किसी व्यक्ति-विशेष से अधिक पार्टी और जन समुदाय की चिन्ता होनी चाहिए और अपने से अधिक दूसरों का ध्यान रखना चाहिए। सिर्फ तभी उसे एक कम्युनिष्ट माना जाएगा।

तमाम वफादार, ईमानदार, सक्रिय व सच्चे कम्युनिस्टों को चाहिए कि वे एकताबध्द होकर हमारे बीच कुछ लोगों के अन्दर पैदा हुई उदारतावादी प्रवृत्तियों का विरोध करें और उन्हें सही रास्ते पर ले आए। यह विचारधारात्मक मोर्चे पर हमारे कार्यों में से एक हैं।

मनोगतवाद के बारे में

कुछ पार्टी-सदस्यों में मनोगतवाद गम्भीर सीमा तक मौजूद हैं, जो राजनीतिक परिस्थिति का विश्लेषण करने और काम का निर्देशन करने में बहुत ही हानिकारक होता हैं। कारण, राजनीतिक परिस्थिति के मनोगतवादी विश्लेषण और काम के मनोगतवादी निर्देशन का लाजमी नतीजा या तो अवसरवाद होता हैं, या मुहिमजोई । जहां तक पार्टी के अन्दर की जाने वाली मनोगतवादी आलोचना, गैरजिम्मेदाराना व निराधार बातचीत या पारस्परिक सन्देह का सवाल हैं, इन सबसे अक्सर बेउसूली विवाद उठ होते हैं और पार्टी का संगठन टूटता हैं।

पार्टी के अन्दर की जाने वाली आलोचना के बारे में एक बात का जिक्र और कर देना चाहिए और वह यह कि कुछ साथी अपनी आलोचना में बड़ी समस्याओं पर ध्यान न देकर केवल छोटी-छोटी समस्याओं पर ही ध्यान देते हैं।

मैनपूर डिविजन में दमन और घेराव

क्रांतिकारी आंदोलन को विस्तार करने के लिए लाल झंड़ा तले पीएलजीए दंण्डकारण्य से कांकेर गाटी (नेशनल हैवे 43 को पार कर मैनपूर, धमतरी के रावास, सीतानदी, उदंती तक विस्तार किया। धीरे धीरे छत्तीसगढ़ से सठे ओड़िशा के नवरंगपूर की रायगढ़ और नुआपाडा के सुनाबेड़ इलाका तक विस्तार किया। इस विस्तार से शासक वर्गों में खौफ पैदे हुआ।

क्यों की इस इलाका में कई अभयारण्यों का अलावा पैलीकंढ़ का हिरा खधान और अटूट वन एवं खनिज संपदाएं हैं। इस वनांचल में फरेस्ट डिपर्टमेंट का जनता पर जोर जुलुम बेरोक ठोक चल रही थी - अभयारण्य इलाका में तो और ज्यादा जोर जबरदस्ती चल रही थी। इस में जनता काफी परेशान थे। इस इलाका के जनता को दंण्डकारण्य के कांकेर, केसकाल, कोण्डागांव, नारायणपूर इलाका से संबंद (रिस्तेदारी) हैं। वहां पार्टी का वजहा से जंगलात वालों (का जुलुम) ने भाग जाने का समाचार हैं। इसी लिए जनता इस पूरा अंचल में माओवादी पार्टी को तहेदिल से अव्हान किया।

मैनपूर इलाका को पार्टी का विस्तार से शाषक वर्ग घबरा कर गया। पहले से ही दंण्डकारण्य इलाका से खनिज, जंल, जंगल संपदा को लूट ने में पार्टी आढ़ आ रही थी। और नया इलाका में विस्तार से पैद होने वाली मुश्किलों को भंप कर इलाका में कदम जमाने से पहले ही सफाया करने का कोशीष तेज किया। इलाका के पुराना थाना ओं को नवीनीकरण करना, रोड पर रही बढ़े गाओं में नया थाणा और केम्प लगाना चालू किया। पुलिस थाणाओं में सीआरपीएफ को तैनात करना, गांवों पर हमला कर जनता में दहशत पैद करनेके लिए-जनता को मारपीट करना, अरेस्ट करके ले जाना किया तो जनता का मनोबल बढ़ने के लिए और पुलिस का घमण्ड उतारने के लिए 2008 में पीएलजीए ने मांदागिरी के पास पुलिस पर हमला कर के 13 पुलिसों को सफया किया और कुछ को घायल किया था। इस हमले के बाद अलग अगल गाओं से 20 जन संघटनों का नेताओं को अरेस्ट कर दो साल जेल में रखे थे। जैस जैसा जनता आंदोलन से घनिश्टता से जुड़ने गया। दूसरी तरफ नया केम्पों, थाणा खोल कर सभी जगह बलों की संख्या में बडोतरी करके दमन में तेजी और केन्द्रीकरण लाके जनता को डराना, मारपीठ करने का गटनायें भी बढ़ता गया।

केन्द्री में मनमोहन, सोनिया, चिदंम्बरम का गुट ने साम्राज्यवाद प्रस्त नीतियों को पूरी तरहा लागू करने में आड़ा आ रही क्रांतिकारी

⇨

वे नहीं समझते कि आलोचना का मुख्य कार्य राजनीतिक और संगठनात्मक गलतियां बताना हैं। जहां तक व्यक्तिगत कामियों का सवाल हैं, जब तक उनका सम्बन्ध राजनीतिक और संगठनात्मक गलतियों से न हो, तब तक जरुरत से ज्यादा नुक्ताचीनी (छोटे छोटे गल्तियों को कोजना) करने और सम्बन्धित साथी को परेशानी में डालने की आवश्यकता नहीं। इसके अलावा एख बड़ा खतरा यह हैं कि यदि एक बार ऐसी आलोचना का सिलसिला चल गया, तो पार्टी-सदस्यों का ध्यान मामूली खामियों पर ही पूरी तरह केन्द्रित हो जाएगा, हर कोई दब्बू बन जाएगा, जरुरत से ज्यादा सशंकित रहेगा और पार्टी के राजनीतिक कार्यों को भूल जाएगा।

इस सुधारने का मुख्य उपाय हैं पार्टी-सदस्यों को शिक्षित करना, जिससे कि उनके चिन्तन और पार्टी-जीवन को राजनीतिक और वैज्ञानिक सतह तक ऊंचा उठाया जा सके। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमें चाहिए किः (1) राजनीतिक परिस्थिति का विश्लेषण करने और वर्ग-शक्तियों को आंकने में, पार्टी-सदस्यों को मनोगतवादी विश्लेषण और मूल्यांकन के बदले मार्क्सवादी-लेनिनवादी तरीका लागू करना सिखाएं (2) पार्टी-सदस्यों का ध्यान सामाजिक और आर्थिक छानबीन और अध्ययन की ओर खीचें जिसके आधार पर संघर्ष की कार्यनीति और काम के तरीके निर्धारित किए जाएं; तथा यह समझने में साथियों की मदद करें कि वास्तविक परिस्थितियों की छानबीन किए बिना वे हवाई कल्पना और मुहिमजोई के गढ़े में जा गिरेंगे; तथा (3) पार्टी के भीतर की जानेवाली आलोचना में मनोगतवाद, स्वेच्छाचारिता और घटिया दर्जे की नुक्ताचीनी से सावधान रहें, जो कुछ कहा जाए, वह तथ्यों पर आधारित हो और आलोचनाओं का केन्द्र-बिन्दु राजनीति को बनाया जाए। ✯

जनांदोलन और उसका नेत्रृत्व को सफाया करने का शड़ यंत्र अमेरिकन साम्राज्यवादियों के तत्ववधान में बना कर 2009 का (दूसरा आधा भाग) अगस्त सितम्बर माह से ''ग्रीन हन्ट'' नामक दमन अभियान को सेना के अला अधिकारियों का नेत्रृत्व में चालू किया। इस अभियान का लक्ष्य आंदोलन/पार्टी नेत्रृत्व को खतं करके आंदोलन को कुछलना और दंण्डकारण्य में खडी हुई जन अधिकार/जनताना सरकार को बृण रुप में ही सफाया करने और इसे विस्तार नही होने देना मुख्य हैं। इस योजना को लागू करने के लिए केन्द्र-राज्य सरकारें मिल कर दंण्डकारण्य में एक लाख अर्ध सैनिक बलों के अलावा-मैनपूर इलाका को भी हजारों अर्ध सैनिक बल तैनात कर दमन में एक नया दौर लाया।

इस इलाका आंदोल विस्तार होते ही राज्य सरकारने अपना खुफिया तंत्र को चेता के ग्राम स्तर से मुखभीरों को तयार करना चालू किया। इस जाल के लिए आंदोलन से गांव से परार सामंतियों को और जनवादी सांस्कृतिक चेलते अधिकार खोया सामाजिक नेताओं को पुलिसों ने इकट्ट कर गंवाया अधिकार, दर्ज पूनः स्थापना के झांसा दिख कर और पैसा दे कर इल लोगों का आढ़ में जनता में फूट ढ़ालना रीती रिवाज के नाम से, दमन का भय दिख कर और जनता को आंदोलन से दूर करने का कोशीश करवाया। और गांव स्थर के सरकारी ढ़ाचा-ग्राम राखी (कोतवाल), सरपंच, सचिव, पटेल जैसा लोगों से नेटवर्क तयार किया। दुश्मन ने एल.आय.सी.पालसी अमल में तेजी लाकर पुलिस का कुंम्बिंग, सर्चिंग, चेकिंग, अरेस्ट करके मानसिक दबाव बड़ा ने का सात ही कुछ सुधार वादी कर्यों को चालू करके छोटा मोटा तलाब निर्माण, रोड, पुल-पुलिया निर्माण काम स्थानिक लोगों को ठेका दे कर, दलाल वर्ग को तयार किया। और जनता में सोलार लालटेन, सयकल, टीवी, बर्तन, कपडा जैसा सामान मुफ्त में भांटा। सरकारी दमनकारी चेहला को सुधारवादी मुखौटा डालनेका प्रयास किया। स्थानिक सिक्षित बेरोजगार युवाओं को सरकारी नैकरियों में बर्ती का बढ़ा प्रचार कर कुछ शिक्षा कर्मी नैकरियों में नियुक्तीयां किया। सरकारी नैकरी का आशा लेकर आफीसों का चक्कर काटे युवाओं को गुप्त पुलिस (एसपीओ) नियुक्तियां करके गांव में ही रह के पार्टी-जन संगठनों का समाचार झुठाने का काम दिया गया। ठेकेदारों, गुरीजी, एसपीओं का एख अलग ही नेटवर्क तयार किया गया। फिरभी आंदोलन इल सभी मुश्किलों को पार करते आगे बड़ी।

2009 में देशभर में खास कर छत्तीसगढ़ में अमल में आया आपरेशन ''ग्रीन हन्ट'' दमन अभियान के बाद आंदोलन और पार्टी नेत्रृत्व पर चैंतरफ हमला में तेजी आया। इस क्षेत्र की एस.अई से लेकर जिला पुलिस अधीक्षक तक सभी आफीसरोंने बस्तर में ग्राम स्थर से अपना अपना अलग ही नेटवर्क बना लिया। बाहर काम कर रहे पुलिस अधिकारियों को यहा लाया गया। अभी सक्रिय काम कर रहे टी.अय.रमेश मरकाम एक हैं। इस नेटवर्क में अंगनबाडी कर्मचारी, गुरुजी, फरेस्ट गार्ड (अवैद दंदा करनेवाले) शराब दारु दुकान दार, चोरी चुप कर जंगल काट कर लकडी व्यापार स्मगलरों, तेन्दू पत्ता प्रबंदकों -सरकार-मिथान या महा प्रसाद के प्रथा बाहर के शोषक वर्ग के लोग स्थानीय लोगों को शोषण करने उपयोग करता था। जो स्वछा और उपस्पर अंटूट विश्वस का बरोसा पर आधारित को अभी पुलिसों ने जनता में रहा इस अति विश्वास का माओवादी जन संघर्ष को काम करने मुखभीर नेटवर्क के लिए इस्तेमाल कर जानकारी हासिल करने उपयोग कर रहे हैं।

2010,11 से इस अंचल को ''कार्पेट सेक्यूरिटी'' की तरहा फोर्स को बड़ी संख्या में तैनात किया गया। यह प्रक्रिया अभी भी जारी हैं। उड़िशा के नवरंगपूर में अभी सीमा सुरक्षा बल को तैनात किये हैं। दोनों राज्य और 3,4 जिलाओं के फोर्स के साथ संयुक्त अभियाने लगत्तार जारी रखे हैं।

2010 अंत तक नेटवर्क और मजबूत आई। घर वापस गया-माजी सदस्यों को अरेस्ट कर के पुलिस के लिए काम करने के लिए दभाव ढ़ाल कर मुखभीर बना लिए। स्थानीय पार्टी इकाईयों और जन संगटनों के कुछ कमजोर शक्सों को यातनाये देना या मारदुलने का दमकी देना या जीवनबर जेल में कैद करने का ढ़राव देकर पुलिसों ने अपना पक्ष मोढ़ लेके गांव का, दस्ताका, पार्टी नेत्रृत्व का समाचार देने के लिए राजी कर लिए। भूतपूर्व दस्तों का सदस्यों से जंगल में दस्ता ककने का जगहयें पानी का स्त्रोत-आने-जाने का रास्ता का जानकारी लेना, कुंम्बिंग आपरेशनों में जंगल में अर्ध सैनिक बलों का आगे चल कर रास्ता दिकाना करवा रहे हैं। कुछ सदस्यों ने खुल्लूम खुल्ला दुश्मन के साथ मिल कर घूम रहे हैं तो कुछ ने पुलिस वर्दी पहन कर मुह को कपडा से ढ़क कर ले रहे हैं।

एस.पी.ओं.में कर्मचारी, बेरोजगारों का अलावा छात्र-छात्राओं को भी बर्ती कर रहे हैं। भर्ती के बाद तीन महिना ट्रैनिंग दे रहे हैं। कुछ को कांकेर के जंगल वार फेयर स्कूल में प्रशिक्षण दिया गया। एक एक का क्षमता के अनुसार अलग अलग जिम्मेदारी दिया जा रहा हैं। कुछ को पांच गांव का जिम्मेदारी देकर कोतवाली, पटेल, दुकानदारों में समाचार इकट्ट करने की कुछ को पार्टी कार्यकर्ताओं का परिवारों पर नजर रखना, कुछ को पुलिस रोड पर निकलते समय पायलेट जैसा रोड का निरीक्षण करना वगैरा जंगल/ग्रामीण इलाका में कुंम्बिग पर निकलने से पहला ही मोबईल फोन से-गुप्त एस.पि.ओ./मुखभीरों को द्विचक्र वाहनों से आसपास गांओं में घूमा

कर दस्ता का समाचार के लिए कोशीश करने से खबर मिलते ही चारों तरफ के पुलिस थोनों, केम्प से समन्वय के साथ कुंम्बिंग आपरेशन चला रहे हैं। 2011-12 में एस.पी.ओं, मुखभीरों का वजहा से पुलिस से अबतक दस मुठभेडें होते होते बच गया। (गोब्रा इलाका में 28 जुलई 2011 को जनता ने शहीद स्मारके निर्माण कर जन सभा आयोगि किया गया) एर आपरेशन में ग्रोब्रा एलओएस को जिंदा पकडने के लिए मैनपूर एसपी ने पत्रकारों को भी साथ लाया था। पुलिस आने का समाचार पहले ही जनता से मिलने से टेंट को वैसाही छोड कर अपना दस्ता डेरा खाली करके चले आये। पुलिस ने दल टेंट को घेराव कर अंधा धुंव से फैरिंग किया। और एख घटना में उदंती एरिया में 2011 सितम्बर महिना में आमाड़ गांव में दल जनता से चर्चा करते समय मुखभीरों से समाचार मिले पुलिसों ने चारों और से घेराव कर के बिना चेतावनी से अंधा दूंध फैरिंग किया। इस हमला में एक सदस्य घायल हुआ था। 2011 में ही सीतानदी इलाका के तोटा जरिया गांव में भी दस्त पर मुखभीरों का निशान दे ही पर हमला किया गया था। दस्ता फैरिंग करके बिना नुक्सान से रिट्रीट हुआ। 2012 के फरवरी माह 18 तारीख को गोब्रा एलओएस पर हमला के लिए पुलिस आई रही थी- तो अपना दस्ता काम से पहला ही डेरा खाली कर के जा रही तो अचानक रास्ता में पुलिस से आमने सामने हुआ तो पहला दल ने ही फैरिंग किया। इस घटना में दल को कई पंक्तियों में घेरने का कोशीश किया। 31 मई 2012 का दिन शाम चार बजे मुखभीर मेहतर नेताम का सुचना से दल पर हुआ हमला में एरिया कमेटी के सचिव के साथ तीन महिला कामरेडस समीरा, अरुणा, अमीला शहीद हुआ।

इस पुलिस दमन से हमारी पार्टी को हुई और नुक्सान की बात करे तो 2007 में इस अंचल में विस्थार होने की शुरु आत में ही कामरेड गोपन्ना (दंण्डकारण्य स्पेशलजोनल कमेटी के सदस्य) को मुखभीर की (बाद में इसको खत्म किया गया) सूचना पर गिरफ्तार किया गया। और 2009 में कामरेडस रैनू, मधू को भी मुखभीर की सूचना पर ही गिरफ्तार किया गया। यह तीने कामरेडों को छत्तीसगढ़ के जेलों में अभी भी बंद रखे हुए हैं। निर्दोष लोगों को पकड़ कर हत्या करके माओवादियों को मारे कह कर झूटे बयान भी दे रहे हैं। 2011 में धवलपूर के पास पती, पत्नी को रास्ते में पकड़के हत्या किये हैं। नवरंगपूर से किसानों ने जंगल में बरमार बन्दूक के साथ शिकार करने गये थे। इन को देवभोग, पुलीस गस्त करते हुए गोली चलाने से एक किसान की मृत्यु हुई। माओवादी के नाम से घैसे वसूलने वाले गूण्डों को पकड कर पुलिस को सोंपने के कारण पुलिस एक किसान को माओवादी के नाम से हत्या किया।

2012 का शुरुआत से केन्द्र सरकार का नीती में सी.ओ.बी.इलाका पर नई नीती बनाकर दमन और घेराव में तेजी के सात लागू करते आया। इसी नीती के चलते मैनपूर डिविजन में भी दमन-घेराव में बदलाव आया। पलहा एक-एक आपरेशन के बीच कुछ अंतर रहता था। लेकिन अब एक ब्याच जाते ही दूसरा ब्याच जंगल में घुस रही हैं। कफ ही बार कई ब्याच आ रही हैं। दस्त का निर्दिष्ट समाचार मिला तो संभवित जगहा को तीन चार दिशाओं से (ग्रिड़ पद्दती से) घेर रहे हैं। दल (किस तरफ भी रिट्रीट करना) फैरिंग कर पहली घेराव तोड कर किसी दिशा में रिट्रीट किया तो दूसरी पंक्ती में फसाने का दूसरी में नही फसाया तो तीसरी में फसाने के अनुकूल जगहा ओं पर पुलिस बल बैट रही हैं। इस के लिए चारों तरफ के थाना, केम्पों से सैकड़ों बल (एंगेज) हो रही हैं। सीमित आपरेशन के लिए आ रहे हैं बल अपना साथ में पानी, बिस्कुट, सुखमेवा (ड्रय फ्रूट्स) ला रहे हैं। एक दो दिन के लिए तो बाहर से ही खाना गडियों में लाकर सप्लय कर रहे हैं। नही थो मुखभीरों से (जोलाराव की घटना में जब मुखभीर.....नेताम ने ही खाना दिया था) कुछ आपरेशनों का साथ साथ में ही खाद्य पधार्त और बर्तन लाकर जंगल में पानी के पास खाना पखा के खा रहे हैं। कुछ आपरेशनों का समय गांव को घेराव करना-पास का जंगल-टेकडियों को सर्चिंग करना करता तो कुछ आपरेशनों का समय पूरा गुप्त रुप से चला रहे हैं। गुप्त रुप से चलाते समय जंगल में जनता मिलने से दिनबर सात में ही रख रहे हैं। फिर भी जनता दल/पार्टी को तुरंत समाचार दे रही हैं। इसी लिए दुश्मन का लाखों कोशीशों का वादजूद भी पार्टी/दल को सफया नही कर पाया। सफया करने में नाकाम हुआ। ✯

पाठकों से अपील

'जन संग्राम' के लिए नियमित एवं शीघ्रता से रिपोर्टे लिख कर भेजने रहिए। **'जन संग्राम'**पर आपकी आलोचनात्मक टिप्पाणियां समय-समय पर भेजने रहिए। **'जन संग्राम'** को भेजी जाने वाली तस्वीरें रंगीन का होकर ब्लैक एंड व्हाइट की हों तो ज्यादा अच्छा होगा।

- सम्पादकमण्डल

नुआपाडा डिविजन में दमन-घेराव-जन प्रतिरोध

नुआपाडा डिविजन में अपना काम काज 2009 से शुरु हुआ। इस डिविजन के पहले मैनपूर से विस्थार किया। इस अंचल में जनता गरीबी, शोषन, बेरोजगारी, पलायन, जमीन जैसा शिक्षा स्वस्थ पेयजल जैसे समस्था ओके अलावा सुनाबेडा टाईगर सेंचुरी, पतोर बांद, सीकासर, टिकाली डेम से विस्तापन और सेंचुरि में वन विभाग के दमन भी बडे फैमाने पर चल रही थी। पार्टी का विस्तार से जनता बहुत हुआ, पहले से लोग पार्टी का इंतजार कर रहे थे। तो फरेस्ट वालों ने घबराह कर इलाका छोड कर ब्लाक मुख्यालय भाग गया। यह छत्तीसगढ़-उड़िशा का सीमांचल इलाका होने का कारण से कभी इदर के तो कभी उदर से पुसिसों का आना जाना होता था। 2011 आते आते पुलिस का पेट्रोलिंग, कुंम्बिंग में तेजी आया। पहले फारेस्ट डिपार्टमेंट का गार्डस और उनका नीचे नैकरों ने मुखभीरों का काम किया करते थे। तो सुनाबेडा में एक कृर एवं मुखभीर का काम कर रहे एक गार्ड को जनता का मांग से पि.एल.जी.ए.ने खतम किया तो इलाका के गार्डों ने आना ही बंद हुआ। सुनाबेडा पंचायत इलाका से कुछ रीतादास उसकी मा रतनी दास जैसे को मुखभिर बना लिए। और बोडेन, बुरकोट, कुमना के दो जनों को मितान बना के बेजे हैं। पर देके पीचे अपना नेटवर्क को मजबूत बना ने में दोनों राज्यों के पुलिसों ने आ, जा रहा। इसी सिलसिले में छत्तीसगढ़ के गरियबंद के जिला पुलिस अधिक्षक ने 2011 मार्च महा में उड़िशा के सुनाबेड़ आया था। इस खबर जनता से पि.एल.जी.ए को मिला था, तो पि.एल.जी.ए.ने तुरंत एंबुश करने का निर्णय लेके किया कारवाई में ए.स.पी. सहित 9 पुलिसों ने खतम हुआ। इस डिविजन

मुठभेढ़ हत्याओं का खिलाफ मैनपूर डिविजन बंद सफल

31 मई 2012 को झोलराव गांव के जंगल में हुई मुठभेढ़ में गोब्रा एल.ओ.एस.पर कोब्रा, एस.टी.एफ.बलों द्वारा किया गया हमला में गोब्रा एरिया कमेटी सचीव कां.समीरा, कां.अरुणा(एसी सदस्य), कां. अमिला (एसी सदस्य) दुश्मन से लढ़ते हुए शहीद हुआ हैं।

मैनपूर डिविजन में दुश्मन ने अपना नेटवर्क बढ़े पैमाने पर तयार कर उन लोगों से मिली समाचार से अपना दलों पर हमला करने आ रहे हैं। मुखभीरों का समाचार से ही 16 फरवरी 2012 को दल को घेराव करने के लिए कई ब्यायों में बंट कर दल मकाम के ओर आ रहे ते उस से पहले ही दल ने मकाम से दूसरा काम से निकल चुकीती-अचानक रास्ता में पुलिस से आमने सामने हुआ तो दलने तुरंत मोर्च संभाल कर फैरिंग चालू किया तोडि देर के बात दलने सुरक्षित से रिट्रीट किया था।

अप्रिल-मई महिना से पूरा डिविजन के अंदर तेंदु पत्ता संग्रह मजदूरी (भाव) बढ़ाने का प्रचार (किया गया) करते हुए जनता को एक जुट कर भाव में बढ़ोतरी भी हासिल किये जनता। माह का आखरी में गोब्रा एल.ओ.एस. ने मैदनी इलाका में जनता से संपर्क कर 30 मई 2012 को रात बर चल के झोलाराव गांव का जंगल में आके रुखे थे। दूप काल होने का कारण से पानी का समस्या से झोलाराव गांव का शिक्षा कर्मी.....से संपर्क किया। मगर दल ने वहा नहीं जानते थे कि वह पहला ही टि.सि.अय.रमेश साहु का संपर्क में रह कर दल का समाचार पुलिस को दे ते आ रहे ते। दल को मद्दत करने का बहाने से दल का मकाम का जगहा का पता कर तुरंत मोबईल फोन से पुलिस को समाचार दिया। समाचार मिलते ही मैनपूर और गरियबंद से सि.आर.पि.एफ., एस.टी.एफ.के साथ साथ जिला बलों ने दल का मकाम पर हमला कर अंधा दुंध फैरिंग करना शुरु किया। अचानक हुआ हमाला का जवाब देते हुए गोब्रा एरिया कमेटी सचीव का. समीरा, एसी सदस्य डिविजनल महिला संगठन इंचार्ज कां. अरुणा अपना प्रणों को न्योछवर लगा कर लढ़ते हुए शहीद हुआ। इस फैरिंग में घायल होकर रिट्रीट का समय साथियों से बिकर जाके कां. अमीला (एसी सदस्य, डिविजन नाट्यमंच इंचार्ज) एक गांव में जाकर पनाह लिए थे । गांव के आया समाचार मुखभीरों से मिलते ही गांव में अरेस्ट कर जंगल में लेजाकर झूठी मुठभेढ़ में हत्या किये ढ़रफोक पुलिसों ने।

इन हत्याओं के खिलाफ डिविजनल कमेटी ने जनता में विसृत प्रचार करके एरिया प्रिय नेताओं का हत्या का खिलाफ 20 जून को डिविजनल कमेटी ने बंद कर सरकार का खयरता पूर्वक हत्या ओं का विरोध जताने के लिए अव्हान किया। जनता ने अपना प्रिय नेत्रियों के हत्या का बदले बंद को सफल बनाया हैं।

में यह पहला पि.एल.जी.ए.कारवाई था।

2011 आखरी से दोनों राज्य सरकारों का रवय्या में बहुत बदलाव आया बुरकोट के मनोज साहु..... आर सुनाबेड़ के रीता दासों ने सरकारी दवखाना के एक कमरा में परि पन्नी जैसा मिल के रह ते हुए पार्टी गतिविदियों का समाचार जुडाना, मनोजने शिकार के नाम पर जंगल में घूम कर दस्ता का डेराओं का पता लगाते का काम करना-दोनों ने अलग अलग ही मुखभिरों को बनाने का काम में लगेरहे थे। रीता दास को संदिग्द पन, आचरण को जनता ने पहचान कर अगस्त महिना में चेतावणी दिया था। नवम्बर महिना में दोनों राज्य के पुलिसों ने संयुक्त गस्ती किया था। रीता दास ने आना मुकाम सुनाबेडा से बोडेन-नुआपाडा को आना जाना ज्यादा किया। उसने जनवरी 2012 को पूरा उदरही रही। फरवरी महिना में चोरी चुपके आकर एक दो दिन रह कर जन किया। फरवरी आखरी में यहां से पूराही मुकाम बदलने का इरादा में रात के आई हुआ समाचार पि.एल.जी.ए को मिलते ही गिरफ्तार करके जन अदालत में पेश किया जनता का आदेश अनुसार मरण शिक्षा दिया गया (2011 में ही धर्मबांद इलाका में कांट्राक्टर, जंगल माफिया, गुण्डा किस्मका को उनका लकडी काला व्यापार बंद करने के लिए दिया चेतवनी को खतर नही कर के पुलिस से हाथ मिल के काला दंदा चला रहा तो जनता का साथ मिलकर जंगल में हमला किया थो लारी छोड कर बाग गया।

धर्मबांद इलाका में जंगल माफिया भरत प्रधान का काला दंदा से जनांदोल कडा रुक अपनाने से पुलिस से हात मिलाया। इसी का कही सुनिल देवांगन कांट्राक्टर भी इलाका में राजनीतिक प्रतिद्वंदियों को दमकाना, मंगनीस खनिज पत्तर को अवैद व्यापार करना, मना करने पर पुलिस का शरण में जाकर आंदोलन का खिलाफ कड़ हुआ था तो उन्हें दंडित किया गया। कोलीभितर इलाका के पाठदार के हीरा लाल मांझी भैसदानी का सरपंच रहते समय इंदिरा आवास के लिए जनता से पैसा वसूला-घर का पैसा बांटने में भी बड़े दांढ़ली किया विषय उजागर हुआ थो जनता जन अदालत में उनका गलतियों को मान लिए।

फरवरी 2012 में रीता दास पर कर्रवाई के तुरंत बाद नुआपाड एस.पी., कोमना टि.सि.अय साहु का नेत्रृत्व में कई ब्याचों में सुनाबेडा को घेराव कर एक ब्याच ने गांव में आया था। मई महिना में दोनों राज्यों ने सि.आर.पी.एफ., कोब्रा, एस.ओ.जी. के करीब ढ़ई हजार (2500) तक एकी बार समन्वय से कुंम्बिंग अभियान चलाया। इस के लिए छत्तीसगढ़ के आममोरा और कुकडार में दो केम्प लगाया और उड़िशा इलाका सुनाबेडा-भैसधानी बोडा, धर्मबांद के इलाका में दो पूरा छह विशेष कैम्प लगा कर उसे 9 तारीख का भीच अभियान चलाया। यह अभियान कई महिनों में अलग खस हैं। एक छोटो सा इलाका उता बडा फोर्स खसकर मानव रहित विमानों लाकर उड़ाया और बड़ा पैमाने पर पार्टी पर विष प्रचार किया- अभियान का आखरी चरण में सिविक एक्षन प्रोग्राम चला कर जनता में कपडा, बच्चों को चाकलेट-बिस्कूट, बुडों को इलाज करवालेने के नाम से दो चार सै रुपया बांटा गया हैं। इस अभियान से जनता में दहशत पैदा कर एस.पि.ओ.का मनोबल बढ़ कर मुखभिरों को तयार कर लेना था। इस अभियान से जनता को काफी अर्थिक नुक्सान हुआ क्यों कि मई महिना में तेन्दू पत्ता काटने के अलाव आवला महुआ जैस वनोपज का संग्रहन का समभी था-पुलिसों का अत्याचारों से डरा कर जनता खस कर महिलाए जंगल में नही गया।

2011 आखरी से ही शोसेंगा, झलमुडि, तालाबेला, बोडेन, भैसाधान, बुरकोट, चेरिचुआ इलाकों में लगात्तार गस्ती चल रही थी। अब पूरा डिविजन में मई महिना से लगत्तार अभियाने जारी हैं। हर इलाका में एक ही बार कई ब्याचों गृपो में आ रहे हैं। मुसलधार बारीश में बी पुलिस का गस्ती चालू ही था। कई बार जनता के नजर जुका के जंगल में गुम रहे हैं। (एक दिन का अभियान में मेवा बुस्कुट, नमकिन, खीहस जैसा ला रहे हैं। ज्यादा दिन हो तो राशन, बर्तन सात लेकर आ रहे हैं। जंगल में कोई मिलने से उसे अपना सात ही रखते हैं। नही तो हम 500 का संख्या में आया हैं जंगल में कुंम्बिंग चला रहे हैं। पांच दिन तक कोई भी नागरिक जंगल में नही आना कर के जनता पर दभाव बडाने के लिए अफवाह फैलाते हैं मुखभिरों से विश प्रयोग करने के लिए भी कोशीष कर रहा हैं। फरवरी माह में सुनाबेडा एलओएस पर और धर्मबांद एलओएस का जंगल इलाका में घूस काल में पानी में जहर मिलाये गया।

(नुआपाडा डिविजन में अबतक 60 से 70 लोगों को अरेस्ट कर के विबिन्न झूठा केसों में फसाया जा रहा हैं।

अभियानों का दोरान गावों पर हमला कर जनता को मारपीठ करना, पार्टी से नही मिलुंगा करके जनता से कुलदेवता ओं का नाम पर खसं खिलाना। एक गांव में जनता को पार्टी से मिलने का गलती के लिए अरस्ट कर जेल में दालने का दमकी देकर 12 परिवार वालों को मिठ्ठी खिलाया गया। अबतक पूरा डिविजन में साठसत्तर लोगों को इरासत्ता में लोकर यातनायें देना, कुछ दिन थाणा ओं में रख कर मानसिक दभाव बड़ाना, मुखभिरी के लिए तयार करना। कुछ लोगों को जूटा केसों में फसाकर रायपूर, नुआपाडा जेलों का बेजा गया हैं। पुलिसों का दबाव से गांव छोड कर जाने को मजबूर कर रहे हैं।

इस अंचल में पार्टी जन आंदोलन का विस्तार से घबराया केन्द्र-राज्य सरकारें किसी कीमत पर आंदोलन को कुछलने का षड़यंत्र कारी 'ग्रीनहन्ट' सैनिक अभियान के तहत ही यह अभियाने चलाया जा रही हैं। ✯

बलांगीर-बरगढ़-महासमुन्द डिविजन में पुलिस दमन

डिविजन की चार जिलाओं की इस अंचल में हमारी 2010 सितम्बर पार्टी काम कर रही हैं। 2011 के डिविजनल कमेटी की प्रत्यक्ष नेतृत्व में जन संघर्ष जारी है,हमारी पार्टी इस अंचल में आने से रोकने के लिए शोषक शासक वर्गों ने यने छत्तीसगढ़-ओड़िसा राज्य सरकार केन्द्र सरकार की मार्गदर्शन में आधुनिक सशस्त्र बलों को भेजकर हमले करवा रहे है। शांति पुर्वक राजनीतिक प्रचार कर रही हमारी दस्ताओं पर बिना चेतावनी से गोली बारी किया गया।इस तरह की 8 बार हुई गोली बारी में 12 कामरेडों ने(चार ग्रामीण)शहीद हुए है। इन फैरिंगो 2010 अक्टुबर को 9 तारिख को छत्तीसगढ़ की महासमुंद जिला पड़िकिपाली जंगल में 400 एस.टी. एफ फोर्स हमारी कंपनी को घात लगाकर हमला किया गया,इस में एक डिविजन कमेटि स्तर के कामरेड़ आयतु के साथ 5 कामरेड्स और दो ग्रामीण शहिद हो गया। 2011 मई महिना में ओड़िशा कि बलंगीर जिला सनबांजिपाली गांव के100 से ज्यादा एस.ओ.जी पुलिस द्वारा किये हमले में कामरेड़ मंजुला शहिद हो गई ,2012 जनवरी 27 को छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिला गमर्डा अभियारण्य की पहाडों में एस.टी.एफ के हमले में हमरा डिविजनल कमेटी सदस्य कामरेड़ मोहन शहिद हुआ ।बरगढ़ जिला गदांमर्दन पहडों में 27 दिसेम्बर 2010 को बुड़ा समोरो में सीआरपीएफ और एसओजी फोर्स कि हमले में दो ग्रामीण माधव सिंह ठाकुर, रमेश साहु को पकड कर हत्या किया।इस तरह खबर मिलते ही हमले करने सैकड़ों संख्या में पुलिस अर्द्धसैनिक बल दौड़ते आ रहे है।

डिविजन में 2011 से लगातार पुलिस अर्द्धसैनिक बलों की संख्या बढ़ाते आ रहे है। कुछ पुलिस चौकी(आवट पोस्ट) को थानाओं में तब्दील किया गया।थानाओं में भी पहले लाटी वाले पुलिस रहते थे,अभी थानाओं में और उस के बगल में नये हथियार बंद पुलिस,अर्धसैनिक बल की तैनाती किये और कर रहे हैं। बरामखेला, डोंगरिपाली, सोहेला, पदमपुर, पइकमाल, झारबंद, कप्राकोल, तुरेकेला हरिशंकर में फोर्स कि तैनाती किया गया। नये-नये तरीकों से सुरक्षा व्यवस्था खड़ी कर रहे है। जगदलपुर चौकी और काटाबाजी, केरमेलिबहाल केम्प और पीएस में भी 30,50की संख्या में नये कैंप का तैनाती किया है। और 5,6 जगह में नये केम्प खोलने की चर्चा चल रहे है। छत्तीसगढ़ की सरायपाली और ओड़िशा की मेल्चामुण्डाओं में सैनिक प्रशिक्षण शिविर खोलने की तैयारी चल रही है।

गांवों में बेरोजगार युवाओं को पुलिस में भर्ती करने के लिए कोशिश कर रहे है। तुरेकेला ब्लाक में माकण्ड गांव में पुटबाल टूर्नामेंट आयोजन की कोशिश किया गया इस से युवाओं को आकर्शित करके पुलिस में भर्ती करने और इस गांव में पुलिस कैम्प खोलने की पुलिस का प्लान थी। इस का लोगोने बहिष्कार किया,लोगो में उनका नेटवर्क बढ़ाने सिविक प्रोग्राम कप्राकोल ब्लाक हरिशंकर सीआरपीएफ पुलिस अधिकारी आस-पास के गांवों के लोगों को टी.वी साईकिल सोलार लालटेन और सोलार प्लेट का वितरण किया है। इस तरह सामान मुफ्त में देकर यहां की बेश कीमती प्राकृतिक संसादन लूटने का योजना कर रहे है। जनता ने इस षड्यंत्र को समज रही है।डिविजन में पुलिस अर्द्धसैनिक बलों का गस्ती कूंम्बींग अभियान ने लगा तार चला रहे है। पहले 50,100 की संख्या में हमले के लिए आते थे,अभी संख्या उतना ही है। लेकिन एक साथ 2से 5 बेचों में आ रहे है।दो राज्य की फोर्स और दो या तीन जिलाओं की फोर्स मिलकर संयुक्त अभियान यह चला रहे है। तीन से 5 दिन तक ड्राईपूडा पानीकी पाकेट साथ में लाकर जंगल,पहाडों में रह कर सर्चिंग, एम्बुश बैटना कर रहे है। बरगढ़ जिला में एस.पी कविता जालान के नेतृत्व में सैकडों सीआरपीएफ और एस.ओ.जी पुलिस इसी वर्ष जनवरि से मार्च आखरी तक लगा तार गंदामर्दन की पहाडों में आ के अभियान चलाया पुलिस अभियानों को देखे तो,रोड पर मोटर साइकिलों में रोड किनारे,पहाड़ के नीचे,पहाड़ के ऊपर में चार या पांच बेच अलग-अलग जिग जाग तरीकों से कुर्मबिगं अभियान चलाया था।नवीन पटनाय सरकार माओवादी पार्टी से चर्चा के लिए पुलिस अभियानों को रोखने के लिए ने की आश्वासन दिया था लेखिन 2012 अप्रैल महिने में भी इस अंचल मे पुलिस अभियान जारी था।यहां पुलिस लोगों को जंगलों में नही जाने की चेतावनी भी दिया। महुआ की सीजन और कई वन संपती संग्रहन करना था। पुलिस अभियानों से यह काम प्रभावित हुई। इस अभियानों में पुलिस ने उस वक्त लोगों को गालीया देना डरा धमकाना,मारपीट करना, संपति ध्वस्त करना और लूटना मामूली हो गया है। इस पुलिस की ज्यादातियों को एक परचा मे लिख कर डिविजन में प्रचार भी किया गया था।और दोषी पुलिस को सजा देने की मांग भी किया गया।इस पुलिस अत्याचारों में से कुछ इस प्रकार है।

दिनांक 25 जुलाई को बरगढ़ जिला पैकमाल टौन(ब्लाक) में ही एक पारा में एक महिला बगल में स्थित बोरिग में पानी

के लिए सुबाह गई हुई थी।तब दस सीआरपीएफ के कोब्रा पुलिस महिला को घेर लिया जबरन तालाब के पास ले गया और अत्याचार किया था।आज तक इन दोषी पुलिस पर कोई कार्रवाई नही हुई।बोलंगीर जिला अमबहली गांव में माओवादियों को सहयोग करने की आरोप में दो ग्रामीण किसानों को गिरफ्तार कर लेगया कुछ महिनों बाद छोड़ दिया। पिछले वर्ष की आखरी में ग्राम सन बांजीपाली में आठ लोगों को बेरहमी से पुलिस पिटाई किया हैं।

2011 में डिविजनल कमेटी सदस्य कामरेड़ आजाद और रामबती,शामो को सिविल में ही जा रहे थे,मुखबीर की सुचना पर इन को गिरफ्तार किया गया।अभी संबलपूर जेल में है। 2012 मार्च 5 तारीख को गंधमर्दन पाहड़ के ऊपर और नवम्बर 4 को भरवमुण्डा जंगल में एसओजी पुलिस बिना चेतावनी की हमारे पीएलजीए का दस्ता के ऊपर अंधा दूंध फायिरंग किये थे। बिना नुक्सान के हमारे दस्त पीछे हटगई।

इसी वर्ष अगस्त माह में नवापाडा में डीजीपी प्रकाश मिश्रा के नेतृत्व में नवापाडा, कलहंडी, बलांगीर, बरगढ़ एसपी ओं के साथ उच अधिकारियों से मीटिंग किया समन्वय रुप से दमन तेज करने की निर्णय किया गया। इस के बाद यह पुलिस अधिकारियोंने जगह जगह मीटिंग कर इस अंचल से माओवादीयों को भगाने, खत्म करने की शपथ ग्रहण किया। यहा के शोषक वर्गों का मनोबल बढ़ाने की कोशीस किया। इस तरीका से यह डिविजन में सितम्बर माह से गांओं को घेर कर लोगों को गिरफ्तार करते हुये नये सिरे से दमन चक्र आरंब किया।

बलंगीर जिला कप्राकोल ब्लाक में 2012 सितम्बर 23 को ग्राम बेहरापानी में रात को तीन बजे बलंगिर एसपी हरो कृष्णा का नेतृत्व में 60 से अधिक पुलिस हमला किया। कानू भरिया,हरी भरिया ,पवित्रों बाग को अपहरण किया और 6 लोगों को पीटाई किया। जनता के ऊपर गोली भी चलाया गया दो किसानों का पैयरों में गोली भी लगी। इस घायलों में एक महिला भी है। घायलों मे कुछ लोग गम्भीर रुप से घायल है। ग्राम जलबहल से चंपेश्वर राजपूत, मालपाडा से नरेश, कुरीपेन से पलास्तरवार, करुणाकर भोई बमनी से अकील प्रधान, ओखिरो प्रधान, ग्राम मैसना से पटनायक भोई, गुर्जी भाटा से एक, तुरेकेला ब्लाक में 6 जन, बरगढ़ जिला के बामनटाल के अंजोर कोपाट, बर्तोंडा में असरत खान (दुखानदार और सामाजिक कार्य कर्ता), मोती पाली गांव का मदन भरिया, मरजात पाली दुखानदार नंदलाल पुल्कि मुंडा के गेंगा अबतक कुल 22 निर्दोष लोगों को गिरफ्तार करके झूटे केसों में फसाया जा रहा हैं। यह गिरफ्तरिया, लोगों से मारपीट की सिलिसला आज भी जारी हैं। गांओं में आतंकी माहोल बनी हुई हैं। गांवों में स्थित कोटवार होमगाडों, मुखबीरों से समाचार लेकर पुलिस हमले करने आ रहे है। कुछ लोगों को एसपीओं के रुप में मुखबीर का भी काम करवा रहे है।पार्टी के ऊपर गलत प्रचार भी कर रहे है,इस साल बरगढ़-बलांगीर दो जिलाओं में दो बार मुठभेड़ होने की खबर रेडियों,अखबारों में भी दिया गया, यहां झूठ है।यह दमन के अभियान सरकार के नेतृत्व में चल रही ग्रीन हंट अभियान का हिस्सा ही है। पुराने अधिकारियों को हटा कर नये और युवा अधिकारियों को नियुक्ती कर रहे है। इस तरह दमन को और तेज करने रणनीति बना रहे है,यहां की जल,जगंल जमीन प्राकृतिक कनिज संपति लूटने ,के लिए ही यह सब पीढ़ीत जनता के उपर ही यह दमन चक्र चला रहे है। पुलिस का कुंम्बिंग अभियानों से लोगों का खेत बरबाद हो रही हैं। पुलिस का डर से लोग इस अंचल से बढ़ी संख्या में पलायन हो कर जा रहे हैं।

प्रतिरोध

पुलिस दमन के विरोध में डिविजन में परछा, पोस्टरों से प्रचार किया गया। जून 25 को सीओबी राज्य कमेटी की ओर से राज्य भर में बढ़ते पुलीस दमन (ग्रीनहन्ट) के विरोध में दी गई बंद को सफल बनाया। परछा, पोस्टरों से प्रचार किया गया। रोडों में पत्तर, पेड डाल कर, एक एरिटेल टवर, कुछ तेन्दू पत्ता गोदामों को जला दिया गया।

पईकमाल में स्थित सीआरपीएफ पुलिस गांव के किनारे गस्त के दौरान दस पुलिस अनिता नाम के महिला पर अत्याचार किये थे। अधिकारियों को बताने से भी नही सने अधिकारी लोगों को धमकाया। इस से लोग अक्रोषित हो कर दोषी पुलिस को कपडा उतार कर बहुत पिटाई किये हैं। जब की दोषी पुलिस पर सरकार कोई कारवाई नही किया। उस फोर्स को बदल दिया गया। लोगों का दबाव में धर्मशालां में रह रहे सीआपीएफ पुलीस को खाली कर थाना के पास जाना पढ़ा।

(शेष पेज 13में...)

जन संघर्ष - जन सभाएं

बलांगीर-बरगढ़-महासमुन्द डिविजन

जमीन संघर्ष

डिविजन में जमीन का एक मुख्य समस्या हैं। क्यों की यहा स्थित मूलवासी, आदिवासी, दलित लोगों की अधिकतर जमीन उच्च वर्गों के लोग कब्जा किये हैं। बाहर से यहा आकर बसी ब्रम्हण, मारवाडी, कुल्ता, साहू और राजा परिवार कई तरीकों से कब्जा कर लिए हैं। हजारों हजार एकड जमीन इन के कब्जे में हैं। सरकार के कब्जे में, मंदिरों के कंट्रोल में सैकडों, हजारों एकड जमीन हैं। हजारों एकड जंगल बर्बाद कर के फारेस्ट डिपार्ट मेन्ट की ओर से सागोन की प्लांटेशन लगाया हैं। इस से जंगल की झडीबूटियां, पौदा नष्ट हुआ ही, साथ में जंगल के किनारे स्थित खेतों में फसलों की उत्पादन में भी कमी आने की बात यहां के किसान कह रहे हैं। कई प्रकार के जन विरोदी सरकारी परियोजना ओं के कारण यहां की जल, जंगल, जमीन से जनता को बेदकल पर विस्थपित कर रहे हैं। मजबूरी से यहा के लोग पलायन होना पड़ रहे हैं। इस अंचल में मारवाडी, महजनों ने लोगों को अधिक ब्याज पर कर्ज देकर पैसा ना चुकापये लोगों का जमीन जप्त कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ और उडिशा के अन्य जिला ओं से यहां की जमीन सस्ते में खरीद रहे हैं। बहुत जमीन खरीद भी चुके हैं। शोषक शासक वर्गों ने भूमि में जमीन्दारों को जमीन के बदले पैसा देकर जमीन लोगों को बांटा गया था, कुछही सालों के लोगों को डरा, धमका कर फिर अपना कब्जे में ले लिये हैं। इस से शासक वर्गों का भूमि सुधार अभियान की धोके बाजी को समज सक्ते हैं। इस स्थिती में डिविजनल कमेटी ने जमीन खोये हुए परिवारों को संघटित कर जमीन वापस लेने, भूमि हीन गरीबों को मंदिर का आदीन में रही और सरकारी पडाव जमीन को बांटने की निर्णय लिये हैं। इस से लाखों लोग पलायण होने का कुछ हद तक रोक सक्ते हैं।

डिविजनल कमेटी की इस निर्णय के मध्दे नजर बलांगीर, बरगढ़ जिला ओं में दस गांवों में अपना जमीन खोये पचास परिवारों को 150 एकड जमीन वापस हासिल किया हैं। इस में बरगढ़ जिला की बर्तोण्डा गांव का गौंतिया (जमीन्दार) द्वारा कब्जा किया गया 82 एकड सीलिंग जमीन पर लाल झण्डा, बैनर लगा कर 41 परिवार को वापस दिया गया। इस से अपना जमीन खोये लोगों में खुशी की लहर दौड रही हैं।

जंगल बचाओं संघर्ष

इस डिविजन में जंगल कम ही हैं। जो जमीन हैं ओभी पाहडों के आस पास ही स्थित हैं। बढ़े बढ़े स्मग्लरों ने नेता, मंत्री, फारेस्ट अधिकारियों से मिलीभगत बेशे कीमती, पेडों को मजदूरों को लगाकर कटवाते हैं। बेच कर लाखों रुपया कमाते हैं। इस के अलावा खदानें, डेमें, कारकाने, जैसे कई परियों जनाओं के कारण जंगल बर्बाद हो रही हैं। दिन ब दिन जंगल घट ते जा रहे हैं। इस अंचल में पहले से संघर्ष करते आ रहे हैं। इस स्थिती को देखते हुए जंगल को बचाने संघर्ष और तेज करने की निर्णय लिया गया। जनता में प्रचार का जागरुकत बढ़ना और रोजी रोटी के लिए जंगल काटनेवाले गरीबों को समजाकर बंद करवाना और बढ़े स्मग्लरों पर हमला करने को निर्णय लिया गया। इस निर्णय अनुसार तुरेकेला ब्लाक में जीप में लकडी लोड कर लेजाते समय 25 मई के जन अदालत में लगाया गया। अदालत के फैसलेके अनुसार लकडी जप्त कर जीप का मालि को चेतवानि देकर गाडी वापस किया गया हैं।

विस्थापन के विरोध संघर्ष

यहा डिविजन में विस्थापन दूसरी गंभीर समस्या हैं। गंधमर्दन बाक्साइट खदान, प्रस्तावित पूजारिपाली, लोयर सुकतेल, बर्तिया में तीन बढ़े डेमें, टिटलागढ़ सहारा बिजली प्लांट, लाटूर सिमेन्ट फैक्टरी, टोंकपानी में नल्को रिफयनरी प्लांट, तुरेकेला में सत्ताडंडी पहाड़ में खदान, टिटलागढ़ से रायपूर - लखना से हरिशंकर होते हुए बलांगीर-सराइपाली से बरगढ़ रेल लाइन, इस अंचल में बहुत वर्षों से अवैद रुप से चल रहे सुरमा खदानें (यह खदाने बलांगीर-बरगढ़ जिला ओं में लगबग सौ से ज्यादा जगहाओं में कुदाई कर जैसा की वैसे छोड दिया गया। इस से यहा की बहुत सारे जंगल कटेगये, जमीन, पानी, हवा प्रदूषित हुए इस का कोइ आंकडा नही हैं।) गुमर्दाह में वन भैसा अभियारण्य, सराईपाली, मेलछामुण्डा सैनिक प्रशिक्षण स्कूल जैसे परियोजानाओं को नवीन, रमन सरकारें सैकडों एम.ओ.यू.करके यहा के लाखों जनता का जिन्दगी बर्बाद कर रही हैं। उपरोक्त तरीकों से यहा की प्राकृतिक संसादन, खनिज संपदा से साम्राज्यवादी, दलाल नैकरशाह पूंजिपतियों को बेचते रहे हैं। इस के अलावा रोड चौडी करण, नये रोड निर्माणों से भी लोगों का घर, जमीन उजड जाएगा। इस डिविजन में इस तरीके से हजारों परिवार के लाखों लोग विस्थापित होने की

खतरा हैं। लाखों एकड जमीन किसानों से छीनने की खतरा भी हैं। लांजीगढ़ स्थित वेदांता कंपनी को बाक्साइट देने के लिए गंधमर्दन पहाड़ों से फिर से बाक्साईट निकालने नवीन सरकार कोशीश कर रही हैं।

सरकार की इन सभी परियोजनाओं को लोग विरोध कर रहे हैं। अलग, अलग- जहां के वहां संघर्ष कर रहे हैं। जनता के प्रतिरोध से कुछ परियोजनाये रुखी हुई हैं। फिर भी शोषक शासक वर्गों ने दमन को तीव्र करते हुए मूलनिवासियों को यहा से जबरन भगा रहे हैं। इस स्थिती में हमारी डिविजनल कमेटी संघर्ष रत जनता का साथ देने, अलग अलग स्थानों में चल रहे संघर्षों को एक जुटता से संघर्ष तेज करने निर्णय लिये हैं। फिलहाल परछा, पोस्टरों से प्रचार कर रहे हैं। नंदीग्राम, सिंगूर, लालगढ़ की राह पर जन संघर्ष को आगेबढ़ानी हैं।

उच वर्गों का अत्याचार विरोध में संघर्ष

सामंतवादी शोषण मजबूत इस अंचल में दलित, आदिवासियों पर अत्याचार लगत्तार बढ़ते जा रहे हैं। इसी वर्ष (2012) में हुई घटनाओं को देखने से पता चलेगा की स्थिती कितना गंभीर हैं। बलांगीर जिला कपराकोल ब्लाक के लाटूर में दलितों लोगों का पचास घरों को दिन दहाडे जला दिया गया। इस घटना को अंजाम देने के लिए इस छोटी सी टावन के मारवाडी घराना, बीयर माफिया घासीराम अग्रवाल के नेतृत्व में, योजना बध्द तरीका से अंजाम दियागया। 200 से अधिक गूण्डा ओं को दारु पिलाकर 400 लीटर किरोसिन, पेट्रोल देकर रोड जाम करके, घरों को घेर कर जला दियागया। घरें जल कर राक बनेतक ना कोई प्रशासनिक, ना पुलिस अधिकारी घटना स्थल पर जानबूझकर ही नही आये थे। यह हमला घरों को जलाना ही नही असली प्रहार तो दलितों में बड़ रही स्वभिमान और आत्म विश्वास का चेतना पर हैं।

इसी कप्राकोल ब्लाक की बेन्देर भरवमुण्डा गांव का कुइमुण्डा नाम के पारा हैं। इस पारा में रवी भाग नाम के दलित किसान भी रहता हैं। दलित और आदिवासी के 7,8 परिवार कई वर्षों से रह रहे हैं। भरवामुण्डा गांव में यादव समाज के चतर परिवार का दब दबा हैं। हरेकृष्ण गांव का गौतिया और जमिन्दार हरे कृष्णा चतर, तपन और उमाकान्त चतर, कूनू बंचोर मख्य लोग हैं। बलांगीर में एक गैर सरकारी संस्था (आर.सी.डी.सी.) काम कर रही हैं। यह संस्था गंधमर्दन में जंगल उझाड कर नरसरी बनाने की प्रयास कर रही हैं। और इस के साथ मिलके काम करनेवाले टिकेन्दजाल जो (गंधमर्दन सुरक्षा याक्षन कमेटी एक संघटन सुधारवादी संघटन हैं) यह लोग गांव के मुख्या जमिन्दार को उक्सा कर कुइमुण्डा के दलित, आदिवासी लोगों पर हमले-अत्याचार करवा रहे हैं। क्यों की किसी भी तरहा कुइमुण्डा से लोगों को खदेड कर उनका जमीन में आर.सी.डी.सी संस्था वन औषदियों का नरसरी बनाना चाहती हैं। इस दुरुध्देश से ही विगत कुछ वर्षों से कई प्रकार के हमले, अत्याचार इस गांव में करवा रहे हैं। घरों को तोड़ना, फसलों में गय चराना, आदी लगत्तार करते आ रहे हैं। इसी सिल सिले में रवी भाग का नबालिग बेटी को कुछ गूण्डा ओं को तय्यार कर माओवादी के नाम से अपहरण करवाया गया। 15 दिन तक बंदी बनाकर उस लडकी पर अत्याचार करते हुए उनके परिवारवालों को बहुत तंग किया गया। पुलिस को रिपोर्ट देने से भी कोई ध्यान नही दिया। क्यों की पुलीस भी उन के साथ हैं। किसी तरहा परिवार वालों ने गूण्डाओं को पकड कर, लेकिन दोषियों पर अबतक कोई कारवाई नही की गई। उल्ट लडकी की आचरण अच्चा नही हैं करके गलत दस्तावेज बनवाके प्रचार किया गया। यह सब पटनागढ़ पुलीस एस.डि.पि.ओ;एल.एन.पण्डा(सवर्ण) का नेतृत्व में किया गया। दोषियों को छोड कर लडकी का पिता और चाचा को सरकारी जमीन कब्जा करने की आरोप में जेल में बंदी करवाया हैं। फिर एकबार इसी परिवार का खडी फसल में गाय चराया और लोग पीने वाली पानी की कुंवा में टट्टी करवाया गयो।

इसी ब्लाक के डंडा मुण्डा गांव में दलितों का 30 , आदिवासी लोगों का 10 कुल 40 घर गांव के भीच में नही रहना हैं करके गांव के जमिन्दार सुरु साहू, विनोद साहू, निरोध साहू, मधु साहू (इन चारोंने शिक्षक और गांधीवादी हैं) विजय मिश्र और सभी सरकारी अधिकारीयों की प्रत्यक्ष मार्ग दर्शन में बिना चेतावनी के बुलडोजरों से घरों को गिरा दियागया। लोगों का सामान, पालतू जानवर तितर बितर हो गया। बेसहारा लोग अभी भी गांव के कालेज में रुख हुए। असल में यह कारवाई इसलिए किया हैं, चुआचुत के कारण इन पिछडे जाती के लोगों को गांव से बाहर रखना हैं, इस के अलावा और एक बात हैं लोगों का घर गिराया गया उसी स्थान में पुलीस केम्प बनाना हैं। ता की इस क्षेत्र की प्राकृतिक खनिज संसादन को लूटा जा सके।

इस के अलावा बलांगीर और बरगढ़ जिला ओं में कई प्रकार के अत्याचार लोगों पर हो रहे हैं। जाति भेद भाव, चुआचूत, महिलाओं पर अत्याचार, हत्या करना, उच वर्गों का अन्याय का विरोध करने पर पुरुषों को भी हत्या कर रहे हैं। गालीगलोज, मारपीट तो आम बात हैं।

इन अत्याचारों का विरोध में संघर्ष करने का डिविसि ने निर्णय लिया हैं। परछा, पोस्टरों से प्रचार कर रहे हैं। स्थिती का गंभीरता को देख ते हुए अक्तूबर एक को डिविजन बंद का भी आयोजन हम ने किया था। बंद सफल रहा। 15 सौ से ज्यादा पोस्टर 15 बैनर

लगाये थे। इस बंद के मोके पर दलित, आदिवासीयों पर अत्याचार करनेवाले दोषियों को तत्काल गिरफ्तार कर सजा देनेकी मांग भी किया गया था। सिर्फ प्रचार तक ही सीमित ना होते हुए इन अत्याचारों के लिए जिन बदमाश जिम्मेदार हैं, उन पर कारवाई करने की भी निर्णय लिया हैं। लाटूर में दलितों का 50 घर जलाने का मुख्य दोषी घासी राम अग्रवाल का दो बढ़े दारु बट्टियों को जनता, हमारे पि.एल.जि.ए. मिलकर लाखों संपत्ती नष्ट कर द्वस्त किये हैं। ये बदमाश अभी लाटूर से फरार हैं।

बरगढ़ जिला में बर्तोण्डा गौंतिया जमिन्दार इत्तोर खान को हत्या करके इन का संयुक्त 13 परिवारों को गांव से भगा दिया गया। इस बर्तोण्डा ग्राम पंचायती के लोग इनका अत्याचारों से बहुत परेशान थे। अब मुक्त हो गये हैं।

शोषक शासक वर्गों ने अत्याचार करने वाले दोषियों पर कारवाई करने की बजाय उन दोषियों का साथ दे रहे हैं। इसलिए जन अदालतों में जनता द्वारा ही इन दोषियों को सझा देना हैं। एसा हमारी डिविजनल कमेटी निर्णय लिया हैं। ओ अभी जारी हैं।

दारु विरोधी आंजोलन

इस डिविजन में बलांगीर-बरगढ़ के ब्लाक, ग्राम पंचायती सेंटरों में बढ़े बढ़े दारु बट्टीया हैं। इन बट्टियों में दारु, बियर दिन, रात बनाते हैं। आसपास के बस्तियों में दारु दुखानों को सप्लाइ करते हैं। यह दारु बट्टी बढ़े टेकेदार, मारवाडियों का हैं। लोग दिन, रात महेनत करके कमाई पैसा इन दारु बट्टीयों में ही बहा देते हैं। युवा पीडी के अलावा स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चे भी दारु पी रहे हैं। और अराजकता, अत्याचार, दिन ब दिन बढ़ रहे हैं। इस लिए लोग कुछ वर्षों से ही दारु बट्टी, दुकानों का विरोध करते आ रहे हैं। हमारी जन मुक्ति छापामार सेना और जनता मिलकर 2012 मार्च माह में जामकी बट्टी, अप्रेल में जामसेट बट्टी यां जला दिया गया। (यह दोनों घासीराम अग्रवाल का हैं, जो पक्षिम उडिशा में दो नंबर का बीयर माफिया हैं) 7 गांवों में दारु दुखान दारों को समजा के बंद करवा दिया गया हैं। चार दुखानों को लोग गुस्से से जला दिया हैं। बीस से जादा दारु दुखानों को बंद करने दुखान दारों को समजाया गया। इस से प्रेरित हो कर पहले से विरोध कर रहे लोग बलांगीर जिला पत्रपाली, तेलन पाली गांवों में अपने आप संघर्ष में कूद पड़ा दोनो बट्टियों को बंद करवा दिया। इस से इस डिविजन में चार बढ़े बट्टी बंद हैं। अभी बट्टी मालिकोंने पुलीस की मदत से बट्टी चलाने की बहुत प्रयास कर रहे हैं। इस संघर्ष को और तेज करना जरुरी हैं। नशा मुक्ति समाज निर्माण कि दिशा में आगे बढ़ना हैं।

तेन्दु पत्ता रेट बढ़ा ने संघर्ष

तेन्दु पत्ता रेट 22 पत्ता की एक गड्डी को 55 पैसा बढ़ा ने इस अंचल के सैकडो लोगों ने रैली, सभाए आयोजन करके मांग किया गया था । लेकिन सरकार पिछले वर्ष से पांच पैसा रेट ही बढ़ा के 40 पैसा रेट ही अमल किया हैं। इस से लोगों में आक्रोष बढ़ गया। यहां की लोखों लोगों का मेहनत को टेकेदार, सरकार सैकडों करोड का फायदा उठा रहे हैं। जनता की मांग को ना मानने से जनता और जन मुक्ति छापामार सेना (पि.एल.जि.ए) मिलकर डिविजन की बलांगीर, बरगढ़ में 27 तेन्दु पत्ता (गांव स्थर के) गोदामों को आग के हवाला किया हैं। लोगों का मांग को नही मानने से तीव्र प्रतिक्रिया रहने की चेतावनी दिया हैं।

28 जुलाई शहीद सप्ताह

अमर शहीदों का संस्मरण सप्ताह की मोके पर डिविजन में छः जगह में रैली, सभाए आयोजन किया गया। इन में 25 गांवों के लोग शामिल हुये। शहीदों का स्मारकों का आविष्कार किया गया और शहीदों का जीवन परिचय लोगों को दिया गया। शहीदों का जीवनीयों का किताब आविष्कार भी किया गया। सांस्कृतिक टीम द्वारा नाच, गाना भी प्रस्तृत किया गया। तीव्र पुलीस दमन के भीच में ही जनता, पी.एल.जी.ए. का सुरक्षा में यह समारोहों को सफल बनाया।

डी.डी.बिल्डर ठेकेदार का केंप द्वस्त

नुआपाडा जिला राजाकरियार अंचल में टिकाली डेम निर्माण सरकार द्वारा किया गया हैं। लगबग तीस गांव विस्थापित हुआ। डेम का ऊंचाई और बढ़ा रहे हैं। इस से और कुछ गांव विस्थापित होने की खतरा हैं। इस डेम से बलांगीर के लिए एक बड़ी केनाल का निर्माण किया जा रहा हैं। इस केनाल की निर्माण के टेका में डी.डी.बिल्डर का प्रमुख भागीदारी हैं। इस केनाल से बहुत किसानों का खेत जा रहे हैं। इस का कोई मुआवजा नही दिया हैं। इस का केम्प में क्रशर, गाडियों के अलावा मजदूर भी काम कर रहे हैं। इस मजदूरों को महिला को 60 रु., पुरुषों को 70 रु. ही दे रहे थे। मजदूरों के मजदूरी बढ़ने के मांग को बार बार टुकराने से-किसानों और मजदूरों का अनुरोद पर का मांग के अनुसार टेकेदार के केम्प पर हमारे जन मुक्ति छापामार सेना की एक दस्ता हमला कर एक क्रशर के साथ 15 गाडियों को जला दे कर दिया गया। कुछ विस्पोटक पदार्थ के सात डेटोनेटर, फ्यूज वायर जप्त किया।

दैनिक मजदूरी बढ़ाने संघर्ष

फिलहाल इस डिविजन में दैनिक मजदूरी 8 गंटे के लिए 150 रुपया देने का और महिला, पुरुष को एक समान मजदूरी का भी मजदूरों ने मांग कर रहे हैं। जब की अभी भी महिला, पुरुष को अलग अलग मजदूरी देते हैं। ओ भी 60 से 80 रुपयों में ही 11,12 गंटों तक काम करवाकर मजदूरों का शोषण कर रहे हैं।

महजनी शोषण के विरोध

इस डिविजन में महजनी शोषण भी गंभीर रुप में हैं। झारबंद, पाइकमाल, पदमपूर, मेल्छामुण्डा, परनागढ़, राजा करियार, बर्तोंडा के कर्ज दे कर शोषण करनेवाले मारवाडी, महजन, कटकीय, लोग अधिक ब्याज, चक्रदर ब्याज लेते हुए लोगों को लूट रहे हैं। लोगों को जमीन कब्जा विरोध करने वाले किसानों को बाजारों में पकड कर मारपीट करना, गाली गलोज करना आम बात हैं। ब्याज दर वसूली में सप्ताह में 5 प्रतिशत, माह में 10,20 प्रतिशत भी वसूल रहे हैं। किस समय कर्ज मांगने जाते हैं उसको दख कर व्यापारी ब्याज तय करता हैं। डिविजन में बहुत लोगों ने कर्ज, नाचुकाने की कारण अपना घर, जमीन तक छोड, भेच के पलायन में जा रहे हैं। एक एक महजन के पास 100 से ज्यादा लोगों का जमीन पट्टा रखा हुआ हैं। पइकमाल में लाला मारवाडी, पटनागढ़ में बुलिया मेहेर के कब्जे में बहुत परिवार बन्दी के रुप में फसे हुए हैं। और तडप रहे हैं।

इस महजनी शोषण के विरुध्द संघर्ष करने के लिए हमारी डिविजनल कमेटी ने निर्णय लिया हैं। इन का शोषण पर हिंन्दी, उडिशा भाषा ओं में परछा, पोस्टरों से व्यापक प्रचार किया गया हैं। बरगढ़ जिला में ग्राम बर्तोंडा गांव का गौंतिया परिवार में तेजाब खान नामक कर्ज देनेवाला व्यापरी सप्ताह में 5 प्रतिशत ब्याज लेता था। इस पंचायती जनता को शोषण करते हुए तंग करता था। इस परिवार के और लोग भी कर्ज देते थे। इन के ऊपर हमले करके इत्तोरखान को खत्म करके बाकी सभी परिवार वालों को गांव से भगा दिया हैं। इस से इन परिवारों का सामंती शोषण, दबाव बंद हो गया। डिविजन में अंदरुनी मार्केक सेंटरों में पहले जैसा जुल्म, मारपीट, अत्याचार, अभी कम हो गया, कुछ महजन एरिया से फरार हैं। इस महजनी शोषण के विरुध्द जन संघर्ष और तेज करने लोग तय्यार हो रहे हैं।

ब्रष्टाचार के विरोध

यहा की ग्रामीण अंचलों में जमीन्दारों गैर आदिवासी, बुर्जआ नेता, राजा परिवार के लोग ही अधिकार चलाते हैं। राजनीती में भी इन्ही लोगों का दब दबा हैं। शासन, प्रशासन के अधिकारी भी इन्ही वर्ग के हैं। इसलिए ब्रष्टाचार बेरोकटोक जारी हैं। इन्ही वर्ग के लोग ठेकेदार भी हैं सिर्फ नाम के लिए तोडी सी काम कर लाखों, करोडों रुपया आपस में बांट के खा रहे हैं। इस ब्रष्टाचार, दुर्नीती को लोग सक्त विरोध कर रहे हैं। बी.पी.एल.कार्ड, वृध्द पेन्शन, इंदिरा आवास का पैसा, चावल तक भी सरपंच, अधिकारियों ने बांट के खा रहे हैं। तुरेकेला ब्लाक में सभी गांओं के लोग ग्राम पंचायतीयों में दुर्नीती को रोकने रैली निकाल कर अधिकारियों को ज्ञापन पत्र सौंपे हैं। बरगढ़ जिला पैकमाल ब्लाक 600 लोग सभा आयोजन करके तौर खुली तौर पर डिमांड कियागया। सरकार के तरफसे कोई कारवाई नही हुई। लेकिन हमारी पार्टी भा.क.पा.(माओवादी) दुरनीती, शोषण में लिप्त बर्तोंडा गौंतिया परिवार जनता के मांग पर कारवाई कर के गांव से भगाया गया।

बलांगीर जिला कपराकोल ब्लाक में ग्राम बमनी (ब्रम्हणी) में गोपीनाथ प्रधान गांव का वाटरशेड योजना पर सेक्रेटरी थे। 14 लाख से अधिक रुपया खादिया। वाटरशेड का प्रेसिडेंट को पताही नही उनके नाम से दसकत करके पैसा निकाला कुद के लिए खर्च किया। गांव का कम्युनिटी हाल को अपन घर बना लिया। फारेस्ट डिपार्ट मेंट की ओरसे बनवाके दिया क्वार्टर, गांव के सामूहिक उपयोग के लिए दियागया सामान पूरा अपना ताबा में रखा और कुछ सामान बेच भी दिया। ये गोपीनाथ वाटरशेड केनाल बना रहे थे एक बोरी सिमेंट में 12 से अधिक बोरी रेती मिलाकर बना रहे थे। इसलिए ग्राम वासियों ने यह काम को रोक दिया इस परिवार व्दारा चलाने वाले दारु दुखान का भी लोग इसका भी विरोध किया। इन के साथ रजनीकांत पाणिग्राही भी इस दुरनीती में शामिल था। और वाटरशेड कमेटी में मेंबर भी था। गोपीनाथ प्रधान का परिवार को गांव से लोगोंने सामाजिक बहिष्कार कर चेतावनी दिया गया था, ग्राम सभा में आकर इसका विवरण दे और गलती के लिए क्षमा मांगे। लेकिन इसके विपरीत गांव से परार हो गया। गांव के चार लोगों पर बलात्कार का झूटा आरोप लगाकर थाना में केस दर्ज कराया। और माओवादी उनका घर पर हमला किया करके फर्जी रिपोर्ट दिया। तुरंत पुलिस आकर गाडियों में गोपीनाथ परिवार का सामान लाद कर पुलिस की सुरक्षा में गांव से लेगया। कुछ दिन बाद रजनीकांत पाणिग्राही भी गांव से भाग गया।

इसी तरहा बरगढ़ जिला पदमपूर ब्लाक की परसोदा गांव में चुआपिला नाम के जमिन्दार और बढ़ा ठेकेदार हैं। पदमपूर अंचल में सभी ठेका काम लेकर मजदूरों से करवाने का मनरेगा कामों में भी अपन गाडियों से ही करवाता हैं। दूसरा कोई छोटा मोटा ठेका लेनेसे भी इनका ही गाडियों से ही काम करवाने के लिए मजबूर करता था। इस क्षेत्र में गांवों में पार्टी आने का बाद अपना शोषण

नही चलेगी करके पुलिसों से हात मिला कर गांव गांव में अपना एजेंन्टों को तयार कर लिया इन एजेन्टों से पार्टी का समाचार मिलते ही पुलिस को खबर देकर हमला करवाने का कोशीश कर रहा तो पार्टी द्वारा चेतावणि देने से भी नही सुदरा इसी लिए पुलिस दमन और लोगों का गिरफ्तारी के विरोध में नवम्बर 5 तारीक को डिविजन बंद का मोके पर गाडियों का केंम्प (अड्डा) पर पी.एल.जी.ए.का दस्त हमला कर के 7 गाडियों को जला दिया। इन गाडियों में एक जी.एस.पी.गाडी भी जलगया ओं विजय रंजनसिंग भरिया की शोषक वर्गों का लाखों संपत्ती नष्ट कर जन विरोधी काम के लिए सबक सिकाया गया।

15 अगस्त काला दिवस

पश्चिम उडिशा के इस अंचल में सामंती, महजनी शोषण, विस्तापन, दलित आदिवासी लोगों पर अत्याचार, ब्रष्टाचार, पलायन जैसे समस्याओं से गरीबी से शिक्ष, स्वास्थ, सिंचाई जैसे सुविधाओं के लिए आजादी का साठ साल बाद भी जनता तडप रहे हैं। इस के विरोध में संघर्ष कर रहे लोगों पर ग्रीनहन्ट अभियान के तहत पुलीस, अर्ध सैनिकों बलों ने लोगों पर दमन, गिरफ्तारी, अत्याचार कर रहे हैं। इसी लिए झूठी 15 अगस्त आजादी दिवस को बहिष्कार कर काला दिवस के रुप में मनाने डिविजनल कमेटी आव्हान किया। इस आव्हान से सभी जगहों में जनता ने काला झण्डा गडा कर, पोस्टर चिपका कर, परछा बांटे थे। स्कूल और सरकारी कार्यालयों में भी तिरंगा झण्डा नही पहरा। इस काला दिवस को विफल करने पुलीस बहुत कोशीश किया लेखिन नाकाम रहे। राज्य को जनता का ध्यान हठाने 200 से अधिक पुलीस, अर्धसैनिक बल गंधमर्दन पहाडों पर चारों तरफसे चढ़ा कर पहला बाल्को कंपनी जहां बाक्साइट कुदाई किया था, उस स्थान पर तिरंगा झण्डा पहराया। इस दृष्य को टी.वी.में भी प्रसारित करके अपना विफलता को पाटने की प्रयास शोषक वर्गों ने किया।

जनता का दुश्मनों को दी गई मौत की सजा

शशिकान्त की हत्या

शशिकान्त कप्राकोल ब्लाक (लाटूर का नजदीक बुर्जीबाटा गांव का निवासी) चैयरमेन गणेशराम भोई का बड़े बेटा थे। ये बड़े गूण्डा थे। उनके पास स्थित लैसेन्स बन्दूक से लोगों को डरा धमकाथा था। ब्लाक चैयरमेन चुनाव में उनका पिता को जितवाने माओवादी पार्टी का नाम दुरुपयोग किया था। प्रत्यर्थियों को डराने, नाम वापस लेने मजबूर किया था। बेन्देर ग्राम पंचायती में प्रत्यर्थियों को नाम वापस लेने माओवादी के नाम से पोस्टर जो प्रिन्ट करवाके चिपकया था। दो तीन बोलेरो, स्कार्पियस में गूण्डाओं को वर्दी पहनाके, बन्दूक देकर माओवादी हि करके गुमाया लोगों को डराया। समिती सदस्यों को जबरन गूडा राज (सुनाबेडा) लेजाकर अपना पिता को जिताने दबाव डाला। चुनाव जीतने के बाद बीजेडी के साथ मिलकर इस क्षेत्र से माओवादियों को भगाने मुझे साथ दो कहकर गणेशराम कुल कर आम सभाओं में बाषण दिया। नाम के लिए गनेश राम चैयरमेन बना हैं लेखिन इन का सभी काम शशी ने ही संभालता था। शशी का शादी शध्द और बच्चे 16 सालकी भी हैं। सुनाबेडा से एक 18 साल युवती को अपहरण करके लाकर यौन शोषण कर रहा था। बेन्देर भरवामुण्डा के कुइमुण्डा में दलित लड़की की उच्च वर्गों द्वारा किया अपहरण में इन शशी का भी हाथ था। इस तरहा जन विरोधी कामों में लिप्त इस परिवार के ऊपर हमला करने हमारी डिविजनल कमेटी ने निर्णय लिया और शशिकान्त को हत्या जुलाइ 10 को किया गया। लोगों को इस परिवारका जन विरोधी कार्यों का विरोध करने, गणेशराम भोई को इस्तिफा देने का मांग करते हुए पोस्टर, पर्छा भी निकाल कर प्रचार किया गये हैं। गणेशराम अभी बलांगीर में रहते हुए जन विरोधी कार्य और तेज किया। लोगों को गिरफ्तार करवा रहे हैं। फर्जी केसों में फसवा कर सजाए सुनाने में लगे हुए हैं। इन जन विरोधियों को जनता सजा देके ही रहेगी।

जमीन्दार और गूण्डा इत्तोर खान खतम

बरगढ़ जिला पाइकमाल ब्लाक के बर्तोंडा गांव का गौंतिया हैं इत्तोर खान। गांव में ही नही इस पंचायती के सभी गावों में इनका परिवार का शोषण, उत्पीडन, अत्याचार, करते आ रहे थे। सीलिंग कानूने के तहत 41 परिवारों को मिली 82 एकड जमीन जबरन अपना कब्जा में रखा। इस पंचायती में सभी ठेका काम इन्ही के परिवार वाले लेकर करते थे। जैसा के तैसा काम पूरा कर या अधूरा छोड कर (कोई पूछने वाला ना कोई देखने वाला) लाकों रुपया कमाया। इसी परिवार ने लोगों को कर्ज देकर अधिक ब्याज वसूलते थे। 13 संयुक्त परिवार में 75 लोग थे, इस परिवार का विरोध करनेवालों पर एक सेना के रुप में लाठी, तल्वार लेकर टूट पड़ते थे। इनके अलावा बाकी मुसलमानों को मसजीद में नमाज पढ़ने आने नही देते थे। इस तरहा इस परिवार का को बंदुवा देना। सामंती शोषण के प्रती यहा के लोगों को बहुत गुस्सा थे। इस स्थिती में इन सामंती शोषण के विरोध में संघर्ष करने और इस परिवार, इत्तोर खान के ऊपर कारवाई करने की निर्णय हमारी डीवीसी ने लिया। इस निर्णय को लागू करते हुए जनता के हित में इत्तोर खान को इसी वर्ष 2012, 18 मार्च को हमारे पी.एल.जी.ए.ने खत्म किया। फिरभी इस परिवार पुलीस के मदत से लोगों को डराना, धमकिया देते आ रहे थे। इसलिए

जनता की मांग पर सितम्बर माह 23 को इनका पूरा परिवार को यहा से भगा दिये थे। इनका एक मेटाडोर गाडी को भी जला दिये थे। गांव से बाहर रह कर भी इस से इस क्षेत्र के लोगों पर हमला करना, गिरफ्तारिया करवा रहे हैं। इस दमन के विरोध में भी संघर्ष करते हुए अबतक संघर्ष कर हासिल किये उपलब्दियों को बचाने की जरुरत हैं।

मुखभीर, शराब व्यापार मुरली मेहेर खतम

कप्राकोल ब्लाक रेंगाली गांव के निवासी मुरली मेहेर। रेंगाली ग्राम पंचायती भी हैं। यहां साप्तहिक हटिया भी लगती हैं। मुरली मेहेर दारु दंदा करते हैं। कुछ दिन पहले जनता दारु विरोध आंदोलन छेड कर इनका दारु दुखन समजाके ही बंद करवाये थे। जन विरोधी बनगया। अवैद लकडी व्यापार भी करता था। मुरली, राजपती के साथ श्रीपती मेहेर भी मिलकर पुलीस का मुखबीरी कर रहे थे। इनके साथ एक प्रायवेट बंगाली ने डाक्टर काम के साथ मुखबीरी भी कर रहे हैं। इनका रिस्तेदा भी पुलीस में हैं। इस रेंगाली और आस पास के गांओं में भी पुलीस मुखबीरों का नेटवर्क तय्यार करके चला रहे थे। गांओं के ऊपर हमले करवाना, लोगों को गिरफ्तार करवाना, हटिया में जनता सामान खरीद कर लेजाते समय सभी सामान माओवादियों के लेजा रहे हैं करके जनता को डरा-धमका रहे थे। बाजार में सामान खरीदने वालों को चेक करना आदी कर रहे हैं। इन गिरीह का जुल्म, दबाव आजही नही बहुत सालों से चलते आ रहे हैं। पार्टी की ओर से दिया चेतावनी को अनसुती कर गुंडा गर्दी जारी रख था। इसीलिए हमारी डिविजनल कमेटी ने मुरली मेहेर को खत्म करके, राजपती, श्रीपती को अबतक हुई गल्तियों से बाहर आने को चेतावनी देने की गांव से भगाने की निर्णय लिया गया। नवम्बर 3 तारीक को मुरली मेहेर को गांव में ही पी.एल.जी.ए. हत्या किया।

होम गार्ड नारायण को दीगई सजा

बरगढ़ जिला पाइकमाल में होमगार्ड काम कर रहे नारायण। पदमपूर से पाइकमाल आनेवाली रोड पर स्थित बुलियाबंद गांव का निवासी था। इस क्षेत्र में हमारे पार्टी हलचल की सूचना पाने गावों में अपना नेटवर्क बनाया। इस से खबर पाकर पुलीस, अर्ध सैनिक बल लगात्तार गस्त, कूंम्बिंग अभियान चला रहे थे। जगह जगह एम्बुश बैट रहे थे। हमारे पार्टी की ओर से पिछले एक साल से ही होमगार्ड, कोटवार (गांव रखी) नौकरिया छोडने प्रचार किया गयाथा। इस से कुछ लोग इस्तिफा भी दिया था। फिर भी नारायण अपना जन विरोधी काम तेज किया। इसलिए अगस्त 13 को हमारे पी.एल.जी.ए. नारायण को हत्या किया करना पडा। इस के बाद कुछ होमगार्ड और कुछ गांव रखी लोग भी इस्तिफा दिये हैं।

8 मार्च अंतराष्ट्रीय महिला दिवस मनायागया

डिविजन में पहली बार 8 मार्च 2012 अंतर राष्ट्रीय महिला दिवस को राज्य हिंसा के विरोध में मनाये हैं। 2010 अक्तूबर 10 को हुई पडंकिपाली घटना में शहीद तीन कामरेडस चांदनी, पारो, राजबत्ती और 2011 जून 21 सनबांजी पाली में कां. मंजूला और इसी उडिशा राज्य में कामरेडस रिकी, मंगली, स्वरुपा, रंजिता, रामबत्ती, कमला और कुछ कामरेडस भी शहीद हुई। मैनपूर डिविजन में एक मिहला को पुलिस साधारण ग्रामीनों को पकड कर अपनी पती के साथ 2011 में दवलपूर के पास यहा हमारी डिविजन में स्थित गंधमर्धन बाक्साइट खदान के विरोध में हुई संघर्ष में महिला ओं का नेतृत्व किया। 2011 नवम्बर में

शहीद हुई इन तमाम महिला शहीदों को स्मरण करते हुए महिला दिवस मनाया गया। डिविजन में कां. रामबत्ती, कां.शमो और रज्य में पुलिस गिरफ्तार कर जेलो से रख कर परेशान कर रहे हैं। परहष पोस्टरों से प्रचार किये गये। इस महिला दिवस को रोखने पुलीस सैकडों पुलिसों से अभियान चलाया था। फिर भी बलांगीर जिला में तीन जगह में मीटिंग किया गया। इस सभाओं में 308 लोग शामिल हुए। सन बांजिपाली में जिस जगह में शहीद हुई उसी स्थान में कां. मंजूला का स्मारक निर्माण करके आविष्कार किया गया। महिला शहीदों को श्रध्दांजली अर्पित की गई और उनका अदूरी सपना को पूरा करने, जन संघर्ष को तेज करने की शपथ लिया गया।

✯

मुखपत्र का प्रकाशन हमारा सैध्दांतिक मान व जारी संघर्ष को और उन्नत चरण में ले जाने का एक महत्वपूर्ण कार्य हैं !

मुझे इस बात से खुशी हो रही है कि नव गठित छत्तीस गढ़-ओड़िशा सीमांत राज्य कमिटी (सीओबी एससी) हिन्दी भाषा में अपना मुखपत्र 'जन संग्राम' का पहला अंक खूब शीघ्र ही प्रकाशित करने जा रही है। मैं तहे दिल से उक्त कमिटी के इस पहल को हार्दिक अभिनन्दन करता हूं और साथ ही साथ इस आशा का पोषण करता हूं कि निकट भविष्य में ओड़िया भाषा में भी प्रकाशन संभव होगा।

हम इस बात से भलीभांति अवगत हैं कि हमारे तमाम कार्यों का तथा क्रान्तिकारी आन्दोलनों का मार्ग निर्देशक सैद्धांतिक आधार होता है मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद, जो आज के समय का सबसे उन्नत व वैज्ञानिक सिद्धांत भी है। अत: इस सिद्धांत पर महारत हासिल करना हमारे लिए बहुत जरूरी है। इस दिशा पर आगे बढ़ने के लिए मुखपत्र जरूर एक कारगर भूमिका पालन करेगा। फिर आज जब एक सोची-समझी पॉलिसी के तहत हजारों किस्म के सैद्धांतिक भ्रांतियां व भटकाव पैदा किया जा रहा है, जब सरकारी प्रचार-तंत्र और कारपोरेट घरानों के नियंत्रणाधीन प्रचार तंत्र यानी रेडियो, टीवी, पत्र-पत्रिकाएं, मैगजिन इत्यादि के जरिए जन पक्षीय तमाम विषयों के खिलाफ लगातार व एकतरफा ढंग से दुष्प्रचार चलाया जा रहा है, उस वक्त जन संग्राम जैसा एक मुखपत्र का प्रकाशन बहुत ही मायने रखता है। यद्यपि, जरूरत की तुलना में यह पहल ना काफी है, फिर भी इस पहला अंक का प्रकाशन के जरिए एक सकारात्मक पहल का शुभारंभ किया गया है इसमें संदेह की कोई गुंजाइश ही नहीं है।

साफ जाहिर है कि बाजार में चालू अधिकांश प्रचार मशीनरी के जरिए न तो जनता की समस्याओं को लेकर और न मौजूदा शोषणमूलक सामाजिक व्यवस्था से उत्पन्न विभिन्न बुनियादी समस्याओं को लेकर कोई व्याख्या-विश्लेषण पेश किया जाता है और न ही समस्याओं का सही समाधान की बात लिखी जाती है। कुछ लिखा भी जाता है, उसका अर्थ है अहिंसात्मक तरीके से केवल कुछ रिलिफ, दान, अनुदान व कुछ पैसा बढ़ाने की मांग करे पर कतई मौजूदा व्यवस्था के खिलाफ बात न करे। अत: जल-जंगल-जमीन सहित तमाम आर्थिक व राजनीतिक अधिकारों के लिए चलाया जा रहा जन आन्दोलन व क्रान्तिकारी आन्दोलनों के खिलाफ उस पर उग्रवादी आन्दोलन का लेबुल लगाकर लगातार दुष्प्रचार चलाया जाएगा इसमें आश्चर्य होने की कोई बात नहीं है। क्योंकि यही राष्ट्र का चरित्र है तथा साम्राज्यवाद-सामंतवाद तथा दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग को टिकाये रखने का वर्गीय विचार है।

जब हम समझ गये कि मजदूर-किसान और मेहनतकशों की बुनियादी समस्याओं के कारण और उसके निदान के उपायों को लेकर जनता की भाषा में सारे कुछ समझाने के लिए कोई नहीं है, तब हमारा एक महत्वपूर्ण फर्ज बनता है कि आम जनता की भाषा में यानी सहज-सरल भाषा में कठिन से कठिन राजनीतिक व सैद्धांतिक बातों को भी ले जाया करें। अत: मुखपत्र के जरिए इसके लिए कुछ प्रयास जरूर होने चाहिए।

फिर, मुखपत्र का एक उद्देश्य होता है कि आम कार्यकर्ताओं को पार्टी लाइन के बारे में लगातार शिक्षित करते रहना, ताकि हमारे कार्यकर्ता लड़ाकू जनता को भी कुछ हद तक राजनीतिक-सैद्धांतिक रूप में लैस करने के काम को आगे बढ़ा सके। हमें याद रखना है कि नेतृत्व- कार्यकर्ता-लड़ाकू व अगुआ जनता इन तीनों के बीच सैद्धांतिक व राजनीतिक लाइन संबंधी समझदारी का एक उचित तालमेल नहीं बैठा पाने से क्रान्ति को अंतिम विजय तक ले जाना संभव नहीं है।

स्वभावत: मौजूदा समय में प्रचार व संगठक की भूमिका पालन करने के साथ-साथ मुख्पत्र के सामने और कुछ कर्तव्य आ पड़ा है जिसे अवश्य ही निभाना है। जैसे, संशोधनवाद और सुधारवाद के विभिन्न अभिव्यक्तियों का लगातार भण्डाफोड़ करना, दुश्मन द्वारा चलाया जा रहा दुष्प्रचार का सही व उचित ढंग से खण्डन करना, जनता द्वारा चलाया जा रहा विभिन्न संघर्षों के पक्ष में बुलन्दी के साथ आवाज उठाना, जिस क्षेत्र से इस मुखपत्र का प्रकाशन हो रहा है उस क्षेत्र की कुछ विशिष्टताओं के बारे में जानकारी देना, मालेमा संबंधी तथा पार्टी लाइन संबंधी समझदारी को उन्नत करने हेतु महान शिक्षकों की प्रासंगिक लेखों का उल्लेख करना, बतौर फौरी कर्तव्य (छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में, छापामार क्षेत्र को आधार क्षेत्रों में, पीएलजीए को पीएलए में बदल डालने के कामों) में तेजी लाने से संबंधित लेखों व रिपोर्टों को प्रकाशित करना, इत्यादि-इत्यादि।

अन्त में, फिर एक बार इस बात का जिक्र करना जरूरी है कि हम सबों को हर समय जो बात याद रखना है वो है- मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद पर तथा पार्टी की राजनीतिक-सांगठनिक-सामरिक लाइन पर कुछ हद तक महारत हासिल किये बिना क्रान्ति को विजय मंजिल तक पहुंचा पाना नामुमकीन है।

मुझे पूरी उम्मीद है कि यह मुखपत्र उक्त दिशा में आगे बढ़ने के लिए जरूर सामर्थ्य होगा।

पोलित ब्यूरो

दिनांक 03-02-2013

सव्यसाची पण्डा को पार्टी से बहिष्कार

हमारी उड़िशा सांगठनिक कमेटी के सचीव रहे सव्यसाची पाण्डा शोषक शासक वर्गों के सुर में सुर मिलाते हुए हमारी पार्टी के खिलाफ लगाए गए तमाम जहरीले, बेबुनियाद और झूठे आरोपों को खारिज करते हुए इस गद्दारी को हमारी पार्टी केन्द्रीय कमेटी ने पार्टी से बहिष्कार किया हैं।

हमारी पार्टी के महा सचीव के नाम 16 पुष्ठों वाला पत्र लिख कर पार्टी के ऊपर बेबुनियाद, झूठे आरोप लगाते हुए पार्टी और जन आंदोलन से खुद को अलग कर लिए। हमारी क्रांति कारी पार्टी में 15 साल के लम्बे अंतराल तक विफल रहा। उस के क्रांति विरोधी व अवसरवादी राजनीतिक विचारों, रुझानों और व्यवहार की साथियों ने और केन्द्रीय कमेटी के कामरेडों ने कई बार आलोचना कीए थे। इमानदारी से चिन्हित कर सुधारने की बजाए वह एक कायर की तरहा क्रांतिकारी आंदोलन से भाग गया। पार्टी में किसी भी कार्यकर्त को आलोचना स्वयम आलोचना, समिक्षा और विरोष भूल सुधार अभियानों के जरीय सुधार लेती हैं। इस तरहा की प्रक्रिया से भाग लेकर खुद को सुधार ने के लिए तय्यार नही हैं। इस लिए उस ने पार्टी छोडने का मन बनालिया। हालंकी पण्डा ने लगाई आरोप काफी लम्बी हैं। उन में से प्रमुख रुप से 1) माओवादी के लिए विवेकहीन हिंसा और बेकसूर लोगों को मारना आम बात बन गया। वे अपने कैडरों को तथा भोलभाले और बेकसूर पुलिस वालों को अधाधुंध मार डालने के आदेश देतै हैं। 2) पार्टी में तेलुगु और कोया कामरेडों का दबदबा कायम हैं। 3) माओवादी ही आदिवासियों का सबसे ज्यादा शोषण करते हैं। उनसे खाना बनवाते हैं। सामान उठवाते हैं। कार्यकर्ताओं को त्यौहारों पर भी अपने परिवारों से मिलने नहीं देते हैं। माओवादी आदिवासी महिलाओं का यौन शोषण कर रहे हैं। 4) गणपति आतंक और भय पर आधारित तानाशाही स्थापित करना चाहते हैं।

इस का जवाब विस्तार रुप से पार्टी केंद्रीय कमेटी ने 16 जुलई 2012 का दिन मीडिया को जाहिर किये हैं। पण्डा पर आए तमाम आरोपों को सुधारने राज्य की विशेष प्लीनम आयोजित किया गया। इस के बाद पार्टी से पूरी तरहा सम्बन्ध तोड लिया था। इसलिए हमारी केन्द्रीय कमेटी ने सव्यसाची पण्डा को पार्टी से बहिष्कार करने की निर्णय लिया, ओ सही हैं।

पण्डा जैसे लोग पार्टी, आंदोलन से भाग जाने से पार्टी कमजूर नही होगी, बल्की पार्टी और ताकत वर रहेगी असली क्रांतिकारी लोग क्रांती को सही तरी का से मंजिल तक पहुंचायेगा। वर्ग संघर्ष जो हैं असली और नकली को अलग करदेती हैं। इस तरीका से पण्डा अपने लाइन से अलग हो गये हैं।

(...11पेज का शेष)

को इन आंदोलनों का नेतृत्व करने के लिए प्रेरित करते हुए ही उन्होंने मीडिया के माध्यम से पार्टी के प्रचार–कार्य को भी पहलकदमी के साथ संचालित किया। 2009 में जब चिदम्बरम गिरोह वार्ता के नाम से, संघर्ष विराम के नाम से जनता को, खासकर मध्यम वर्ग को गुमराह करने की कोशिश कर रहा था, तब उसका पर्दाफाश करने में कॉमरेड कोटेश्वर ने खासा योगदान दिया। कदम–कदम पर जनयुद्ध की अहमियत को ऊंचा उठाए रखते हुए क्रांतिकारी राजनीति को जनता में फैलाने के लिए असीम प्रयास किए। इस तरह करीब चार दशकों तक अनवरत जारी उनका क्रांतिकारी प्रस्थान 24 नवम्बर 2011 को अचानक रूक गया।

57 साल की उम्र में, कठोर गुरिल्ला जीवन में युवाओं से भी होड़ लगाते हुए, जहां भी रहें वहां के सभी कार्यकर्ताओं और जनता में उत्साह का संचार करने वाले कॉमरेड कोटेश्वर राव का जीवन खासकर आज की युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणादायक है। वे बिना किसी आराम के घण्टों तक अध्ययन और पार्टी के अन्य कामों में भाग लेते थे। लम्बी दूरियों की परवाह न करते हुए, कम सोते हुए, सादा–सीधा जीवन बिताते हुए, ज्यादा मेहनत करने वाले शख़्स थे वे। हर उम्र के लोगों से तथा विभिन्न किस्म की सामाजिक पृष्ठभूमि से आने वाले कॉमरेडों से आसानी से घुलते–मिलते हुए सभी में क्रांतिकारी जोश भर देते थे। इस बात में जरा भी शक नहीं कि कॉमरेड कोटेश्वर की मौत से भारत के क्रांतिकारी आंदोलन को गंभीर नुकसान हुआ है। लेकिन जनता महान है। इतिहास का निर्माता है। जनता और जन आंदोलनों ने ही कोटेश्वर राव जैसे साहसिक व समर्पित क्रांतिकारियों को पैदा किया। उनके अधूरे उद्देश्यों की स्फूर्तिभावना से तथा जगित्याल से जंगलमहल के जंगलों तक फैलाई गई क्रांतिकारी सुगंध से सशस्त्र होकर मजदूर–किसान और क्रांतिकारी भारत के नए जनवादी क्रांतिकारी आंदोलन को विजय–पथ पर अवश्य आगे बढ़ाएंगे। साम्राज्यवादियों, उनके गुर्गे भारत के सामंती व दलाल पूंजीपति वर्गों और सोनिया, मनमोहन सिंह, चिदम्बरम, ममता बनर्जी वगैरह उनके प्रतिनिधियों का नामोनिशान तक मिटा देंगे।कामरेड कोश्वार– रामजी शहदात को उंचा उठा के रकेंगे श्हीदों का आशय को पूरा करने के लिए प्रतिज्ञा लेंगे केन्द्र और राज्य सरकार हमारा आंदोलन और उसका नेतृत्व को कुचलने का उदेश्य से ग्रीन हंट नाम से सैनिक हमला चला रहा है। इसे हरा ने लिए जन युद्व को आगे बढायेंगे आम जनता की राजनीतिक सत्ता कब्जा करने की आन्दोलन को आगे बढायेंगे करके प्रतिज्ञा लेंगे ।

★

(...आखिरी पेज का शेष)

पूर्वी छत्तीसगढ़ और पश्चिम उडिशा की इस अंचल अत्यंत गरीबी और कई समस्या ओं से लोग बेहद परेशान हैं। यहा विस्थापन एक बड़ी समस्या हैं। पलायन, ब्रष्टाचार, सामंतवादी महजनों का शोषण, जातिभेद भाव, चुआ चूत जैसे समस्याए हैं। लोग छ.ग.-ओडिशा के दोनों राज्यों का सीमा ओं में इन समस्या ओं को लेकर संघर्ष कर रहे थे, लेखिन सरकारी फूट दालो राज करो नीती से दमन और भटकावा सुधार योजनओं से सफल नही हो रहा था। इन पीढ़ित जनता को हमारी पार्टी, पी.एल.जी.ए.का मदद मिली तो जनता का मनोबल बढ़ा। इन जन संघर्षों में एक नई मोड आ गया। कुछ संघर्ष रथ लोग सफलताए हासिल करने लगे हैं। लोगों का चेतना भी बड़ने लगी। संघटित होकर जन संघर्ष और तेज कर रहा था।

इस से गबराये गये शोषक शासक वर्ग, लोगों में बढ़ती इस चेतना को, पार्टी, पी.एल.जी.ए. को कत्म करने दमन तेज करते आया। जो ग्रीन हन्ट के नाम से जारी हैं। लोगों में बढ़ती नई चेतना को दबाने इस अभियान के तहत एन.सी.टी.सी. के घटन और कई काले कानून बना कर लागू कर रहे हैं। सिर्फ माओवादी के नेतृत्व में लड़ने वाले ही नही अलग अलग संघटन या आम जनता, सादारण जन समस्या जैसे अन्याय, अत्याचार, बष्टाचार, विस्तापन, जाति भेद भाव के विरोध कर रहे लोगों को भी निशाना बना रहे हैं। पुलीस अभियानों के साथ साथ सुधार कार्यां को भी शोषक शासक वर्गों ने जारी रखे हुए हैं। विकास के नाम से हजारों करोड रुपया खर्च कर रहे हैं। मूल सुविधा, शिक्षा, स्वास्थ, या मूलबूत सुविधा घर, जमीन, पीनेका पानी और सिंचई व्यवस्था को जानबूज कर अनदेकी कर के इस में पक्की/सिमेन्ट रोड, फुल/पुलिया, स्कूल, आस्पताल के नाम पर आगे जाकर पुलीस केम्प लगाने के लिए बढ़े बंग्ले बना रहे हैं। कम्युनिकेशन सुविधाए बढ़ा ले रहे हैं। सिविक एक्शन के नाम से लोगों को मुफ्त में सामान वितरण कर, मुखबीरी झाल बिचाने की चेष्टा कर रहे हैं। यहां के सुशिक्षित बेरोजगार युवा ओं को सरकारी नैकरी का नाम से एस.पि.ओ., पुलीस में बर्ती करने का कोशीश कर रहे हैं। यह सब लोगों का विकास नही बल्की भविश्य में पुलीस और सेना का बढ़ी हमले की तय्यारी ही हैं।

पिछले वर्ष (11वी वर्ष गांठ) से आज तक एक साल में हमारे सी.ओ.बी. के तीन डिविजनों में पी.एल.जी.ए.की कारवाईयों को देखें तो दुश्मन पर कोई बढ़ी कारवाई हम नही कर पाये, लेकिन दुश्मन के हमला ओं से हमारा फोर्से को बचाने में सफल रहे। एक साल में 6 बार हुई पुलीस अर्ध सैनिक बलों का कारवाइयों में कुच नुक्सान के भावजूद आत्म रक्षा करने में हम सफल रहे हैं। एक ए.एस.आई कृपाराम मंजी, एक होमगार्ड नारायण को मार गिराया हैं। होमगार्ड, एस.पि.ओ, मुखबीरों, जन विरोधी को भी खत्म कर नेटवर्क को कुछ हद तक तोडा हैं। और कुछ लोगों को घायल, पिटाई करके जन अदालत में सजाए दिया गया। जन विरोधी, वर्ग दुश्मनों का लाखों सपत्ती नष्ट किया गया। मुखबीर, होम गार्ड, गांवराखी यों को नौकरिया छोडने की अनुरोध भी किये थे। इस से कुछ लोग नौकरियों छोड कर जनता के साथ रहनेका निर्णय भी लिये हैं।

प्रिय कामरेडों, हम सुसंगठित, बढ़े और आधुनिक हथियारों से लैस दुश्मन के साथ लड़ रहे हैं। इस समय हमारी बलों का स्थिती को हमे समझना, सुधारना जरुरी हैं। तब ही हम दुश्मन का सामना कर सक्ते हैं। हमारे पी.एल.जी.ए.सैध्दांत, राजनीती, मिलटरी विषयों में समजदारी बढ़नी हैं। गुरिला युध्द नियम, कार्यनीती, तकनिकी और अनुशासन नियमों को सक्त पालन करना होगा। गैर सर्वहरा वर्ग रुझानों को दूर करने, सर्वहरा विचार धारा को लागू करने लगात्तार संघर्ष करना होगा। जन दिशा और वर्ग दिशा को भी सही तरीका से लागू करना हैं। जन संघर्ष और युध्द समन्वय से आगे बढ़ाना होगा ताकी हमारी अंतिम लक्ष्य की दिशा में आगे बढ़ सके।

प्रिय जनता, किसी भी देश में क्रांती सफल करने के लिए पार्टी, सेना, संयुक्त मोर्चा अवश्य हैं। हमारे देश में क्रांती सफल करने याने इस देश के तमाम पीढ़ित जनता का समस्य हल करने भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) के नेतृत्व में पीढ़ित जनता का सेवा करने, सुरक्षा देने जन मुक्ति छापामार सेना बनी हैं। इस वक्त लोगों को चाहिए की संघटित होकर जनता और जन मिलीशिया का निर्माण कर संघर्ष तेज करना हैं अंतिम विजय हमारी हैं। क्यों की शोषक वर्ग गहरी संकट में फसे हुए हैं। पीढ़ित जनता, क्रांतिकारी जनता का भविश्य उज्वल हैं निर्भय से संघर्ष की राह में आगे बढ़ो।

(नोटः लोगों से हमारा अनुरोध हैं की इस वर्ष गांठ सप्ताह एक क्रांतिकारी दिवस को गांव गांव में लोग सभा, रैली, प्रचार, प्रतिरोध के रुप में मनाएंगे। लेकिन इस सप्ताह भर बन्द का आव्हान हम नही दे रहे हैं। लोग अपनी अपनी काम कर सक्ते हैं। कोइ भी काम बन्द करने की जरुरी नही हैं। हम जब भी क्रांतिकारी दिवस मनाने आव्हान करते हैं इस को बंद कहकर पुलीस लोगों को हमारे पार्टी के विरोध में खडा करने कोशीश कर रहे हैं। इस शडयंत्र का लोगों को समजना हैं कर के हमारा अनुरोध हैं।)

- ★ *जनांदोलन को तेज करो। ग्रीन हन्ट सैनिक अभियान को हरादो!*
- ★ *जन सेना के बिना जनता को कुछ नही मिलेगा!*
- ★ *जन मिलीशिया को गांव गांव में घटन करो। जन प्रतिरोध तेज करो!*
- ★ *जन मुक्ति छापामार सेना (पी.एल.जी.ए) जन्दाबाद!*
- ★ *भा.क.पा.(माओवादी) जिन्दाबाद!*

छत्तीसगढ़-ओडिशा सीमावर्ती राज्य कमेटी

भा.क.पा.(माओवादी)

नवंबर 2012

जन मुक्ति छापामार सेना को मजबूत करो - जन संघर्ष तेज करो !

केन्द्र, राज्य सरकारों का 'ग्रीन हन्ट' सैनिक अभियान को हराओ !!

2 से 8 दिसम्बर तक पी.एल.जी.ए. 12वी वर्ष गांठ मनाओ !!!

प्रिय कामरेडस, जनता!

जन मुक्ति छापामार सेना निर्माण होकर 11 वर्ष पूरा हुआ हैं। सन 2000 दिसम्बर 2 तारीख का दिन अपना महान शिक्षकों कामरेडस चारु मजुंमदार, कन्हई चटर्जी का मार्ग दर्शन में, केन्द्रीय कमेटी नेताओं कामरेडस श्याम, महेश, मुरली का शहदात का एक साल बाद घटित किया गया हैं। इन 11 सालों में पी.एल.जी.ए.ने भारत की नवजनवादी क्रांती को सफल बनाने की राह में दुश्मन से लड़ते हुए-कई हमलाओं में विजय हासिल कर क्रांतिकारी जनता के हातों में महत्वपूर्ण हथियार के रुप में उबर रही हैं। इस 12वी वर्ष गांठ की अवसर पर सभी स्तर के पी.ए.जी.ए. योध्दाओं को और क्रांतिकारी जनता को राज्य कमेटी की ओर से लाल अभिनंदन पेश करते हैं। इस मोके पर हम सभी ने जन संघर्ष व जन प्रतिरोध को और तेज करने का संकल्प लेना हैं। पी.एल.जी.ए.का इतिहास को जन जनतक पहुंचाकर गांव गांव में इस वर्ष गांठ सप्ताह क्रांतिकारी परंपरा नुरुप मनायेंगे।

पी.एल.जी.ए.योध्दा ओं ने दुश्मन से लोहा लेते हुए सैकडो अर्ध सैनिक बलों को धाराशाई करते हुए इस मुक्ति संग्राम में अपना बहु मूल्य प्रणों को अर्पित कर पी.एल.जी.ए. को और मजभूत बनाया हैं। इस साल देश भर में करीब 200 पी.एल.जी.ए. योध्दा ओं ने कुर्बानिया दिया। अपना सी.ओ.बी. इलाका में कामरेडस मोहन (डि.वि.सि.एम), ए.सि.एम कामरेडस समीरा, अरुणा, अमीला, कां. दिनेश(पि.एम) दुश्मन से लड़ते हुए शहीद हुए। इन सभी शहीदों को श्रध्दांजली अर्पित करेंगे। इस मोके पर तमाम वीर शहीदों का परिवारों का प्रति खेद और दुःख व्यक्त करते हैं। सभी समारोहों में शहीद परिजनों को शामिल करने के लिए राज्य कमेटी अव्हान करती हैं।

पूरा देश, खास कर मध्य भारत में लालगढ़ से सुर्जागढ़ (कोलकता से नागपूर) स्थित अटूट खनिज संपत्ती को अमेरिका और दुसरा बहुराष्ट्रीय कंपनियां और टाटा, एस.आर., जिंदाल, मित्तल, वेदांता जैसा दलाल नौकर शहा पूंजपतियों को कौडी का दाम में बेचने का शड़यंत्र को विरोध करते हुए जल, जंगल, जमीन पर अधिकार के लिए लड़ रही क्रांतिकारी जनता पर-साम्राज्यवाद परास्त नीतियों के तहत ग्रीन हन्ट सैनिक अभियान छेड़ रखा हैं। केन्द्र सरकार में बैटे सोनिया, मनमोहन, चिदम्बरम की गुट और राज्यों के मुख्य मंत्रियों का राजनैतिक सहयोग से यह अभियान चला रहे हैं। इस का सभी खर्चों को केन्द्र सरकार ही उठा रही हैं। अपना सीमांचल राज्य कमेटी इलाका में 2011 अक्टूबर से दुश्मन का दमन में एक मोड आया। इस अंचल का पूरा खर्च (एस.आर.ई) केन्द्र उटाने का निर्णय लेके 40 पुराने पुलीस थाना ओं को 80 करोड रुपयों से हमला रोधी बनाया जा रहा हैं। और सि.आर.पि.एफ., कोब्रा, बि.एस.एफ. जैसा अर्ध सैनिक बलों को बढ़े पैमाने पर तैनात किया जारहा हैं। इन बलों को समन्वय करने के लिए डि.अय.जी. स्तर के अधिकारी के नेतृत्व में सभी जिला पुलीस अधीक्षकों और कमांडेंट स्तर अर्ध सैनिक बलों के अधिकारियों से एक समन्वय समिती घटित कर संयुक्त कुंबिंग चला रहे हैं। इस के लिए अंचल में दर्जन भर नई पुलीस केम्प खोले हैं। और नये केम्प खोलने की कोशीश कर रहे हैं। 2012 फरिवरी, अप्रील महिनों के बीच गंधर्मधन पहाडों में सैकडों पुलीस अभियान किया, और हवाई सर्वेक्षण भी किया। मई महिने की पहला सप्ताह 2500 पुलीस, अर्ध सैनिक बलों से जिला पुलीस अधीक्षकों के प्रत्यक्ष मार्ग दर्शन में बढ़ा सैनिक अभियान चलाया। इस अभियान में अत्यंत आधुनिक उपकरनों, हत्यारों के अलावा मानव रहित विमानों से हवाई सर्वेक्षण भी किया गया। ग्रीन हन्ट अभियान के तहत चल रही इन सभी अभियानों से जनता में दहशत पैदा करके संघर्ष की राह से अलग करना, दूसरी ओर कुछ लोगों को आर्थिक फाइदा दे कर दलालों को तय्यार कर लेना, दोनों से भी काम नही बनी तो गांओं पर हमला कर जनता को सामूहिक अरेस्ट कर के महिनों तक पुलीस थानों में खैद कर के रख कर शारीरिक, मानसिक यातनाये देना, फरर्जी केसों में जेल भेजना, कुछ कमजोर लोगों को मुखबीर बना रहे हैं। इस वर्ष नुआपाडा जिला में 50 लोगों को, बोलांगीर-बरगढ़ में 30 लोगों को, मैनपूर में 20 लोगों को अरेस्ट कर विभिन्न जेलों में रखे हैं। जनता के बीच फूट डालने के लिए बेरोजगारी युवा ओं को पैसा का लालच दिखा कर मुखबीर, एस.पि.ओ.बना रहे हैं। कुछ लोगों को गोपनीय तरीका से एस.पि.ओं में बर्ती करना, सरकारी कर्मचारियों में से नेटवर्क बना कर इन लोगों से पार्टी नेता ओं व दलों का समाचार इकट्टा कर के हमला करने आ रहे हैं।

(शेष पेज 10 में...)